तीतुस, फिलेमोन एवं इब्रानियों की पत्रियों पर भक्तिमय नजर

एफ. वायन मैक लियोड

Light To My Path Book Distribution
Sydney Mines, N.S. CANADA

Titus Philemon Hebrwes (Hindi)

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

First Edition : January 2016

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

विषय-सूची

प्रस्तावना 5
तीतुस का परिचय 7
1 विश्वास का एक सेवक 9
2 अगुवे 13
3 अध्यक्ष 18
4 विरोधी को चुप करें 24
5 पुरूष, स्त्रियाँ और दास 29
6 हमारा उद्धार 37
7 भलाई करना 42
फिलेमोन का परिचय 47
8 फिलेमोन, अफफिया और अर्खिपुस 49
9 उनेसिमुस 52
इब्रानियों का परिचय 57
10 मसीह और स्वर्गदूत 59
11 मनुष्य और स्वर्गदूत 64
12 मसीह के भाई 69
13 मूसा से महान 74
14 अपने दिलों को कठोर न करें 78
15 हमारे विश्राम में प्रवेश करना 82
16 आइए करीब चलें 87
17 यीशु मसीह हमारा महायाजक 91
18 कठोर आहार 96
19 आरंभिक शिक्षाएँ 100
20 भटक जाना 105
21 दृढ़ एवं सुरक्षित आशा 110
22 मलकीसिदिक का याजकपन 114
23 सर्वोच्च वाचा 120

24 अधिक सिद्ध मिलापवाला तंबु 126
25 लहू और वाचा 130
26 अब कोई बलिदान नहीं 134
27 आओ 140
28 पीछे हटना 144
29 विश्वास 149
30 अधिक विश्वास 155
31 उस पर ध्यान दें 161
32 शांति में जीना 167
33 सीनै पर्वत एवं सिय्योन पर्वत 172
34 याद रखने की कुछ बातें 176
35 स्तुति का बलिदान 181
36 अंतिम कथन 186

प्रस्तावना

यह बाइबल की तीन पुस्तकों, तीतुस, फिलेमान और इब्रानियों की मनन टीका (commentary) है। मनन टीका से मेरा तात्पर्य है कि ये पुस्तकें यीशु के साथ हमारे जीवन के बारे में हमसे क्या कहना चाहती हैं। मेरा लक्ष्य कुछ आध्यात्मिक या शास्त्रीय जानकारी देना नहीं है। बल्कि, मेरा विश्वास है कि पाठक बाइबल की इन महत्वपूर्ण पुस्तकों की जानकारी पाकर उन्हे अपने दैनिक जीवन से जोड़ पाएँगे।

तीतुस की पुस्तक में, पौलुस क्रेते के विश्वासियों की सेवा में लगे तीतुस को कलीसियाई जीवन से संबंधित सलाह देता है। वह उसे परमेश्वर के साथ गहरे रिश्ते बनाकर चलने वाली कलीसिया को बनाने वाले दैवीय अगुवों को खोजने के सलाह देता है। वह उसे झूठे उपदेशकों से निपटने और उद्धार के फल को साबित करने वाले शुद्ध और पवित्र जीवन जीने का भी निर्देश देता है।

फिलेमोन में, पौलुस एक स्वामी और एक नए परिवर्तित मसीही दास से बात करता है जो उसे छोड़कर भाग गया था। वह फिलेमोन से कभी नालायक रहे इस दास को क्षमा कर, एक और अवसर देने का प्रोत्साहन देता है। यह पुस्तक हमें क्षमा करने और पुनः भरोसा करने की चुनौति देती है।

इब्रानियों यहूदी मत से आए मसीहियों को लिखा गया था जिन्हे मूसा की व्यवस्था से प्रभु यीशु मसीह और उसकी नई वाचा की सर्वोच्चता को देखना जरूरी था। पुराने नियम के उदाहरणों के द्वारा, लेखक प्रमाणित करता है कि किस प्रकार मसीह ने व्यवस्था की माँगों को पूरा कर एक बेहतर मार्ग तैयार किया। परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में दिक्कत महसूस करने वालों के लिए इब्रानियों लिखा गया है। यह पुस्तक हमें जीवन में आने वाले समस्यायों के बावजूद स्थिर बने रहने का प्रोत्साहन देती है। लेखक पाठकों को यीशु मसीह और उसके कार्यों पर ध्यान देने को कहता है। वह हमें मसीह के कार्यों के द्वारा हियाव के साथ परमेश्वर के पास आने को उत्साहित करता और दिखाता है कि हमारी हर आत्मिक जरूरत के लिए मसीह का कार्य काफी है।

इस श्रंखला की सभी पुस्तकों की भांति, मेरी इच्छा है कि आप इस व्याख्या के साथ साथ बाइबल के पदों को भी पढ़ें। यदि आप केवल इस व्याख्या को पढ़ते हैं तो आप उस प्रमुख भाग से चूक सकते हैं जो मेरा लक्ष्य है। यह व्याख्या बाइबल

की जगह नहीं ले सकती है। यह केवल अध्ययन में एक सहायक है। यह पुस्तक पवित्र आत्मा के बदले में भी नहीं है। मेरा पूरा भरोसा है कि इसे लिखने में पवित्र आत्मा ने मेरी मदद की है, मैं मानता हूँ कि पवित्र आत्मा इसे और इससे संबंधित वचन को पढ़ने और समझने में आपकी भी मदद करेगा। पवित्र आत्मा से आंतरिक समझ देने की प्रार्थना करें। वह समझ देने के लिए इस पुस्तक का इस्तेमाल करे या फिर सीधा आपको समझ दे सकता है।

इस अध्ययन को शुरू करते वक्त, क्या आप प्रभु के पास कुछ मुद्दों को लाने के लिए एक क्षण लेंगे? पहला, क्या आप प्रार्थना करेंगे कि वह इस अध्ययन को आपके जीवन में इस्तेमाल कर आपको प्रभु के और करीब लाने में मदद करे? दूसरा, इस व्याख्या की हजारों प्रतियां जरूरतमंद पासवानों और मसीह कार्यकर्ताओं तक मुत में पहुँचाई जाती हैं। प्रार्थना करें कि यह और इस श्रंखला की अन्य पुस्तकें दूसरों को मसीह के पास लाने में सफल साबित हों। इस अध्ययन के द्वारा प्रभु आपको बहुतायत से आशीष दे।

एफ. वैन मैक लियोड

तीतुस का परिचय

लेखक:

पौलुस तीतुस का लेखक है। तीतुस 1:1 में वह स्वयं की पहचान बताता है।

पृष्ठभूमि

तीतुस पौलुस और बरनबास के साथ गैर-यहूदी सह-कार्यकर्ता था। (गलातियों 2:1-3 देखें) उसने कोरिन्थ शहर में सेवकाई में समय बिताया। 2 कुरिन्थियों 7:6-15 में वही कोरिन्थ की कलीसिया का समाचार पौलुस तक लेकर आया था। कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पत्री से हमें पता चलता है कि तीतुस एक बहुत ही उत्साही कार्यकर्ता था जिसने स्वयं उनके बीच सेवकाई करने की पहल की थी। (2 कुरि. 8:16) पौलुस तीतुस की सेवकाई के पीछे दृढ़ता से बना रहा और कलीसिया को भी निर्देश दिए कि उससे परमेश्वर के अच्छे सेवक के रूप में प्रेम करे। (2 कुरि. 8:23-24)

जब पौलुस ने यह पत्र लिखा, उस समय तीतुस भूमध्यसागर के एक द्वीप क्रेते में था। पौलुस ने अगुवों को नियुक्त करने और कुछ अधूरे कार्य को पूरा करने तक तीतुस को वहीं कुछ समय तक रहने को कहा। (1:5)

ऐसा प्रतीत होता है कि क्रेते के विश्वासियों को मसीही जीवन जीने में मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। पौलुस और उनके एक कवि के अनुसार, क्रेतेवासी झूठ, दुष्टता और पेटुओं के रूप में कुख्यात थे। (तीतुस 1:12) क्रेते के विश्वासियों को मसीही जीवन जीने और परमेश्वर के वचन की सच्चाई में चलने का निर्देश देने की जिम्मेदारी तीतुस की थी। पौलुस अगुवों को नियुक्त करते समय उनकी योग्यताओं और परमेश्वर की कलीसिया के लोगों के आम गुणों के बारे में तीतुस को निर्देश देता है। तीतुस को लिखने के पीछे पौलुस का मकसद कलीसिया और इसके अगुवों की नियुक्ति के मामले में बुद्धिपूर्वक निर्णय लेने में तीतुस की मदद करना था।

आज के लिए पुस्तक का महत्व:

तीतुस की पत्री एकदम प्रायोगिक है। क्रेते की कलीसिया के लोग नये गैर-यहूदी होने के नाते, उन्हे मसीही जीवन जीने की मूलभूत शिक्षाओं को देना जरूरी था। पौलुस तीतुस को इस बारे में निर्देश देता है कि मसीह की ओर फिरे स्त्री पुरूषों को अब कैसे बर्ताव करना चाहिए। पुस्तक उस स्तर को दिखाती है जो परमेश्वर उसके साथ चल रहे हर विश्वासी के जीवन में देखना चाहता है।

पौलुस तीतुस को अधिकार के साथ बोलने को प्रोत्साहित करता है जो उसे परमेश्वर से उसके प्रतिनिधि होने के रूप में मिला है। उसे क्रेते के विश्वासियों को चेतावनी देने, सिखाने और प्रोत्साहन देने में अपना सर्वश्रेष्ठ करना था कि वे अंधकार और दुष्टता से भरे इस संसार में दैविकता का नमूना बनकर दिखा सकें।

1

विश्वास का एक सेवक

तीतुस 1:1-4 पढ़ें

अपनी रीति के मुताबिक, पौलुस स्वयं के परिचय से शुरू करता है। अक्सर अपने परिचय में, हम पौलुसके दिल और उद्देश्य की झलक को पाते हैं। तीतुस को लिखी इस पत्री में, पौलुस विश्वास का सेवक होने के अपने सौभाग्य के बारे में लिखता है।

पौलुस स्वयं को परमेश्वर के चुने हुओं के विश्वास और सच के ज्ञान के लिए परमेश्वर का सेवक और यीशु मसीह का प्रेरित कहता है। पौलुस के इस कथन को समझने के लिए हमें इसे खोलकर देखना होगा।

प्रेरित ने स्वयं को परमेश्वर का सेवक कहा। यहाँ युनानी शब्द 'डूलोस' का उपयोग हुआ है। अर्थात पौलुस परमेश्वर का दास था। एक दास स्वयं की इच्छाओं के बढ़कर अपने मालिक की पसंद को पूरी करने वाला होता है। दूसरे शब्दों में, अपने मालिक को प्रसन्न करने वाला एक दास। पौलुस भी स्वयं को परमेश्वर का सेवक अर्थात दास कहने में प्रसन्नता महसूस करता है। उसने अपने जीवन को अपने प्रभु एवं स्वामी की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। वह स्वयं का नहीं था। उसने अपने सारे अधिकार प्रभु को दिए, उसकी सेवा और उसे प्रसन्न करने के लिए स्वयं का जीवन समर्पित कर दिया। हमें भी अपने जीवन में इस स्थान पर पहुँचना है।

पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि वह मसीह का प्रेरित भी था। प्रेरित के रूप में, पौलुस को परमेश्वर ने विशेष रूप से चुनकर अपना प्रतिनिधि बनाया। ध्यान दें, प्रेरित के रूप में, पौलुस के दो लक्ष्य थे।

प्रथम, पौलुस परमेश्वर के चुने हुओं के विश्वास के लिए एक प्रेरित था। (पद 1) चुने हुए परमेश्वर के सच्ची संतान हैं। पौलुस ने प्रेरित के रूप में प्रभु यीशु से संबंधित हर व्यक्ति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को व्यक्त किया। वह उनके विश्वास के लिए प्रेरित था। दूसरों शब्दों में, परमेश्वर की संतानों के विश्वास को बढ़ाने की

जिम्मेदारी उसकी थी। प्रभु यीशु को प्रभु और व्यक्तिगत मुक्तिदाता स्वीकारने के बाद, हमारा अगला कदम अपने विश्वास को बढ़ाना होता है। हमारे कठिन समयों में हमें प्रोत्साहन की जरूरत होती है। गलत दिशा की ओर बढ़ते वक्त हमें सही किए जाने की आवश्यकता होती है। पौलुस का कर्तव्य परमेश्वर के लोगों के विश्वास को बल और बढ़ावा देना था। उसने प्रचार, प्रार्थना, लेख और उनके जीवन में विशेष चुनौती देकर अपने इस कर्तव्य को पूरा किया। प्रेरित होने के नाते, पौलुस का बोझ था कि वह विश्वासियों को उस हर कार्य में बढता हुआ देखे जो परमेश्वर उनसे चाहता है। उसे परमेश्वर ने उनके विश्वास को बल देने के लिए प्रेरित के रूप में बुलाया था।

दूसरा, ध्यान दें, पौलुस सच के ज्ञान का भी प्रेरित था जिससे दैविकता निकलती है। (पद 1) परमेश्वर ने अपने वचन का सच पौलुस को सौंपा। यह सच दैविकता और मसीह समान स्वभाव को उत्पन्न करने वाला सच है। पौलुस परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार था कि इस सच को पूरी विश्वासयोग्यता के साथ बाँटे। उसे इसका प्रचार करने और सिखाने के लिए बुलाया गया कि लोगों को परमेश्वर के उद्देश्य के करीब ला सके। सेवक होने के नाते अपने जीवन के द्वारा इस सच को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी पौलुस की थी। इस मामले में कोई समझौता या फेरबदल मान्य नहीं था। झुठे उपदेशों से इसका बचाव करने की उसकी जिम्मेदारी थी जिससे परमेश्वर के लोग सच को जानें और पवित्र एवं दैवीय जीवन जी सकें। पौलुस के द्वारा प्रचार किया गया सच दैविकता को उत्पन्न करने वाला सच था। यह मात्र कोई सिद्धांत या तथ्य नहीं था। यह सच जीवन को परिवर्तन करने वाला एवं प्रायोगिक था, और इसे स्वीकार करने वालों के दिल में दैविकता को प्रकट करता था।

पद 2 में ध्यान दें कि पौलुस दैविकता की क्या परिभाषा देता है। उसने अपने पाठकों को बताया कि यह दैविकता, झूठ नहीं बोलने वाले परमेश्वर के द्वारा पहले से वायदा किए गए अनंत जीवन की आशा पर आधारित विश्वास और ज्ञान था। आइए इसे और अधिक समझने की कोशिश करें।

पौलुस के द्वारा कही गई दैविकता विश्वास और ज्ञान से जुड़ी है। बिना विश्वास और ज्ञान के दैविकता का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। प्रभु यीशु मसीह के कार्य पर विश्वास के द्वारा ही हम परमेश्वर की संतान बनते हैं। उसके वचन के ज्ञान के द्वारा ही हम उसके साथ रिश्ते में बढ़ते हैं।

दैविकता अनंत जीवन की आशा के साथ भी जुड़ी है। एक विश्वासी के लिए अनंत जीवन की आशा क्या करती है? इससे उसे अपने जीवन में आने वाली कठिनाईयों और मुत्यु का उस ढ़ाढ़स के साथ सामना करने का धीरज मिलता है जो हमें पता है कि हममें बना है। अनंत जीवन की आशा हमें यह जानकर पवित्र और साफ जीवन जीने की चुनौती देती है कि जब हम प्रभु यीशु के सामने खड़े होंगे तो हमें अपने जीवन का हिसाब देना होगा। यह परमेश्वर के द्वारा हमें मिले उपहार और उसके साथ अनंत जीवन बिताने के सौभाग्य के प्रति हमारे दिलों को धन्यवाद से भरता है। दैविकता सीधे अनंत जीवन की आशा से जुड़ी है।

पौलुस पद 2 में तीतुस से कहता है कि उसका विश्वास, ज्ञान और अनंत जीवन की आशा उस परमेश्वर पर आधारित है जो झूठ नहीं बोलता। विश्वासी होने के नाते हम एक बात निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि प्रभु परमेश्वर से जुड़ा हुआ हर व्यक्ति हमेशा हमेशा के लिए जीएगा। पूरी अनंतता में हम उसकी उपस्थिति में रहेंगे और उसके साथ चलेंगे। यह वायदा हमें पूर्णतया भरोसेमंद परमेश्वर से मिला है।

ध्यान दें कि ज्ञान, विश्वास और विश्वासी की आशा का वायदा समय की शुरूआत में ही हो गया था। (पद 2) संसार के बनाए जाने से पहले, परमेश्वर ने उन लोगों को बनाने का निर्णय लिया जो उसके साथ हमेशा के लिए रहेंगे। इस संसार का इतिहास संसार को बनाने से पहले ही एक उद्देश्य के साथ परमेश्वर का अपने लोगों तक पहुँचने और उन्हे अपनी ओर आकर्षित करने का इतिहास है।

जबकि अनंत जीवन के लिए परमेश्वर का वायदा समय की शुरूआत से ही था, मनुष्य के लिए प्रारंभ में यह समझना मुश्किल था कि वह इस उद्देश्य को पूरा कैसे करेगा। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता उस समय की इंतजार में थे कि कब यह वायदा पूरा होगा और परमेश्वर एवं लोगों के बीच की दीवार समाप्त होगी। पद 3 में, पौलुस ने तीतुस को बताया कि एक नियुक्त समय में, परमेश्वर ने उस वायदे पर रोशनी डाली। उस वायदे का पूरा होना प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हुआ जो क्रूस पर मरे और हमारे पापों को उठा लिया। इस संदेश को दुनिया तक पहुँचाने का सौभाग्य पौलुस को मिला। उसने अपने पाठकों के सामने प्रभु यीशु मसीह की ओर इशारा कर उसे परमेश्वर के अनंत वायदों का पूर्तिकरण बताया।

प्रभु यीशु ही पौलुस के प्रचार का केन्द्र बिन्दु थे। अनंत जीवन के बारे में परमेश्वर के वायदों का पूर्तिकरण थे। पूरे संसार की आशा मसीह और उसके क्रूस पर टिकी थी। मसीह के बारे उसका यही संदेश चुने हुओं के विश्वास को बल और

उन्हे अनंत जीवन की आशा एवं निश्चय दे सकता है।

अपने पाठकों को अपनी बुलाहट के बारे में बताने के बाद, पौलुस अपना ध्यान अपने सहकर्मी तीतुस की ओर फेरता है। यह उसे याद दिलाता है कि वही विश्वास में उसका सच्चा पुत्र है। विश्वास में सच्चा पुत्र होने के नाते, तीतुस अनंत जीवन की आशा और परमेश्वर के वचन के सच पर चल रहा था। पौलुस उसे परमेश्वर के संपूर्ण अनुग्रह और शांति के अभिवादन से शुरू करता है।

सोच विचार के लिए:

- इस पद्यांश में पौलुस अपनी सेवकाई को कैसे चित्रित करता है?
- पौलुस ने स्वयं को मसीह का दास एवं सेवक समझा। इसका अर्थ क्या है? क्या आप कह सकते हैं कि आप मसीह के दास और सच्चे सेवक हैं?
- विश्वास, ज्ञान और आशा का दैविकता से क्या संबंध है?
- समय की शुरूआत से ही प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के वायदों का पूर्तिकरण कैसे हैं?
- प्रार्थना के लिए
- स्वयं को परमेश्वर के सामने सच्चे मन से समर्पित करने में प्रभु से मदद माँगें। आपके द्वारा सीमित की गई किसी भी चीज को आप पर प्रकट करने को कहें।
- क्रूस पर आपके लिए पूरे किए गए कार्य को याद कर परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- वायदों में विश्वासयोग्य होने के लिए परमेश्वर प्रभु का धन्यवाद करें।
    - दैविकता को उत्पन्न करने वाले विश्वास, ज्ञान और आशा के साथ जीने में प्रभु की मदद माँगें।

2

अगुवे

तीतुस 1:5-6 पढ़ें

यह पत्र अथवा खत पौलुस ने तीतुस को लिखा है। पौलुस का मकसद तीतुस को सुझाव देना है कि वह क्रेते में क्या करे। विशेष तौर पर, वह उसे अपनी बुलाहट को पूरा करने की चुनौती देता है। क्रेते की कलीसिया को सिद्ध और संगठित होना जरूरी था। पौलुस ने अपना कार्य तीतुस को सौंपा। यह हमें तीतुस की विशेष सेवकाई ही नही, अपने समय की कलीसियाओं के प्रति पौलुस की चिंता को भी दर्शाता है।

पौलुस ने तीतुस को याद दिलाया कि उसे क्रेते में छोड़ने का उद्देश्य अपूर्ण कार्य को पूरा करे। (पद 5) पौलुस ने उसे हर शहर में अगुवे नियुक्त करने के लिए छोड़ा था जहाँ जहाँ कलीसिया स्थापित होती है। पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण था कि कलीसिया के अगुवे सशक्त हों। पौलुस तीतुस को अगुवों के गुणों को बताता है जिस आधार पर उसे अगुवे चुनने हैं। इस अध्याय में हम पौलुस के द्वारा बताए गए अगुवों के गुणों को जाँचेंगे।

निर्दोष

अगुवा निर्दोष होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि अगुवे को सिद्ध होना चाहिए। अगुवे भी पाप में गिरते हैं। वे भी नहीं कही जाने वाली बातें कहते हैं। उनके स्वभाव हमेशा सही नहीं होते। कईयों को अतीत पापमय होता है। वे भी हमारी ही तरह मनुष्य हैं। जब पौलुस कहता है कि अगवों को निर्दोष होना चाहिए तो उसका मतलब है कि जब अगुवा पाप कर बैठे तो उसे उस पाप निपटना है, प्रभु के सामने स्वीकार करना है और प्रभु के पास वापिस लौटना है। वह परमेश्वर और उसके उद्देश्य के साथ चलने में प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति हो और जब गिर पड़े तो झट से उस पाप से निपटे जिससे कि यह पाप उसके और परमेश्वर के बीच में न आए।

एक पत्नी का पति

अगुवे का दूसरा गुण था कि वह एक पत्नी का पति हो। हमें यह समझना है कि उन दिनों में मनुष्य बहुविवाह किया करते थे। पौलुस तीतुस को कहता है कि यह परमेश्वर की योजना नहीं थी। समय की शुरूआत से ही, परमेश्वर की इच्छा थी कि पुरूष केवल एक पत्नी को ही रखे। उसने आदम को उसकी साथी के रूप में एक औरत दी। यह सच है कि बाइबल में कई पुरूषों ने अनेक पत्नियों को रखा परंतु शुरू से परमेश्वर की योजना या उद्देश्य यह नहीं था।

पौलुस का यह कथन कई सवालों को खड़ा करता है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात दूसरी औरत से विवाह करने वाला अगुवा बन सकता है? पुनर्विवाह में अगुवा दूसरी पत्नी लेता है। इसका उत्तर देने के लिए हमें यह समझना है कि मृत्यु वैवाहिक वाचा में जुड़े पुरूष एवं स्त्री को उनकी वाचा से मुक्त करती है। वचन में यह स्पष्ट है कि साथी की मृत्यु के पश्चात दूसरा व्यक्ति पुन: विवाह कर सकताध्ती है। (1 कुरि. 7:39) यह व्यक्ति यदि दूसरी स्त्री से विवाह करता है तो पाप नहीं करता है। वह एक अगुवा बन सकता है।

ऐसे व्यक्ति का क्या जो अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है? विश्वासयोग्यता को तोड़ते हुए वह दूसरी पत्नी से विवाह करता है। (यद्यपि उसने उससे विवाह नहीं किया हो) यह परिस्थिति हमारे पहले उदाहरण से बिल्कुल अलग है। इस मामले में, मनुष्य ने अपनी पत्नी, अपनी कलीसिया और परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है। वह निर्दोष नहीं रहा और कलीसिया इस मामले को पूरे अनुशासन के साथ निपटे।

साथ साथ, यीशु ने भी लैंगिक पाप करने वालों को माफ किया है। जब प्रभु क्षमा करते हैं, तो कभी भी दुबारा उसका लेखा नहीं लेते। (भजन 103:12; इब्रानियों 10:17) यद्यपि इन परिस्थितियों में हम चाहेंगे कि चंगाई हो, हमें परमेश्वर की क्षमा को भी पहचानना है। प्रेरित पौलुस ने प्रभु को जानने से पहले, परमेश्वर के कार्य को काफी क्षति पहुँचाई। पतरस ने विश्वासी होने के बावजूद प्रभु यीशु का इंकार किया। इन सब मामलों में, प्रभु ने उन्हे क्षमा किया और उनका उपयोग करता गया। हमें इस क्षमा को हमेशा हमारे सामने रखना है। मसीह की देह के रूप में हमारा लक्ष्य पतित विश्वासियों को उठाकर उन्हे वापिस सेवकाई में लगाना होना चाहिए। सावधान, प्रभु की क्षमा को पाए किसी भी भाई को हम कटघरे में खड़ा न करें।

तलाकशुदा लोगों का क्या? बाइबल कुछ परिस्थितियों में तलाक की अनुमति देती है। यह एक तलाकशुदा पुरूष नई पत्नी लेता है तो क्या वह दूसरी पत्नी नहीं लेता? परंतु पहले हमें इस तलाक का कारण समझना है। उसने अपनी पत्नी को तलाक क्यों दिया? क्या वह उससे थक चुका था? क्या वह इस वैवाहिक जीवन को जारी नहीं रखना चाहता था? या क्या किसी और ने उसे पसंद करना शुरू कर दिया था? परिवार को देखकर हम एक व्यक्ति के अगुवे होने के गुण को समझ सकते हैं। परिवार में उसका कार्य दिखायेगा कि वह कलीसिया में कैसा कार्य कर सकता है।

अगुवा कठिन समयों में भी विश्वासयोग्य रहकर स्वयं को साबित करने वाला हो। तौभी हमें इस अतीत के इतिहास को और मन फिराव एवं क्षमा के बारे में कहे गए इन शब्दों के बीच संतुलन बनाना है। लोग बदल सकते हैं। परमेश्वर क्षमा कर उन्हे वापिस ला सकता है। सवाल यह है कि अगुवे ने अपनी गलती से मन फिराया है और अपनी एक पत्नी के साथ विश्वासयोग्यता के साथ रह रहा है। अतीत में किए गए पापों के आधार पर लोगों को दोषी ठहराते समय हमें सावधान रहना है क्योंकि वे अब विजयी जीवन जी रहे होंगे।

विश्वास और सम्मान करने वाली संतान

तीसरा गुण, ध्यान दें, पद 6 में, अगुवे को अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में ही नही, अपने बच्चों के साथ संबंध में भी विश्वासयोग्य रहना है। पौलुस ने तीतुस से कहा कि उनके बच्चे विश्वास करने वाले हों, हिंसक या अनाज्ञाकारी नही। आइए इसे अधिक समझें।

अगुवे के बच्चे विश्वास करने वाले हों। पौलुस के इस कथन पर कुछ बहस बनी हुई है। संसार में ऐसे कई अगुवे हैं जिनके बच्चे प्रभु के साथ नहीं हैं या उसे अपना मुक्तिदाता स्वीकार नहीं किया है। क्या पौलुस यह कह रहा है कि यदि अगुवे के बच्चे विश्वास नहीं करते हैं तो वह कलीसिया का अगुवा नहीं बन सकता है? यदि ऐसा है तो, हमें उन बच्चों के बड़े होने और यीशु मसीह के द्वारा उन्हे स्वीकारे जाने तक इंतजार करना होगा। तो उसकी बुलाहट और सेवकाई बच्चों के व्यवहार पर निर्भर करेगी।

यहाँ उपयुक्त 'विश्वास' शब्द को हम 'विश्वासयोग्य' अथवा 'भरोसेमंद' भी कह सकते हैं। बाइबल के कुछ अनुवादों में यहाँ 'विश्वास' की जगह 'विश्वासयोग्य' का इसतेमाल किया है। विचार यह है कि अगुवे ने अपने बच्चो को दैवीय बनाने

में अपना सर्वोतम कार्य किया है। पौलुस अपने अगले कथन में इसे स्पष्ट करता है जहाँ वह कहता है कि बच्चे 'हिंसक' या 'अनाज्ञाकारी' न हों। अपनी संभाल के बच्चों के व्यवहार पर यदि अगुवा ध्यान नहीं रख सकता है तो वह कलीसिया में किस प्रकार अगुवाई दे सकता है।

इस पद्यांश का केन्द्र अगुवे का यह प्रयास है जिसमें एक एक बच्चे का समर्पण नहीं वरन् पूरे परिवार को दैवीय तरीके से बढ़ाना है। पुराने नियम पर एक नजर हमें दिखाती है कि परमेश्वर के कई लोगों के ऐसे बच्चे थे जो उनके कदमों पर नहीं चलते थे। दाऊद के बच्चे परमेश्वर से दूर थे। अब्राहम, इसहाक और अय्यूब के बच्चे परमेश्वर के कदमों पर नहीं चले। उनके बच्चों के कारण परमेश्वर ने उन्हे ठुकराया नही। तौभी उसने अवश्य चाहा कि वे अपने बच्चों को दैवीय तरीके में प्रशिक्षित करें। कोई गारंटी नहीं दे सकता है कि मसीह के बारे में बताने और सिखाने से बच्चे जीवनभर मसीह में ही बने रहेंगे। अगुवा अपने हर बच्चे के उद्धार की गारंटी नहीं दे सकता है परंतु वह प्रभु के मार्ग में उन्हे बढ़ाने और सिखाने के लिए अवश्य कर्तव्यबद्ध है।?

अगुवे को नमूना बनना चाहिए। उसे परमेश्वर के साथ अपनी चाल में निर्दोष रहना है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे सिद्ध होना चाहिए। उसे परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलना है और जब भी गिरे, झट से मन फिराना और प्रभु की ओर लौटना है। उसे अपने परिवार को सम्मान देकर, अपनी पत्नी पत्नी से प्रेम कर और बच्चों को प्रभु के मार्ग की शिक्षा देकर उनके प्रति भी आत्मिक अगुवा होने की जिम्मेदारी को पूरा करना है।

सोच विचार के लिए:

- निर्दोष होने का अर्थ क्या है? क्या यह आपके जीवन का भी स्वभाव है?
- यह पद्यांश एक मसीही अगुवे के लिए उसके परिवार के महत्व के बारे में क्या सिखाता है? एक मसीही अगुवा दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वयं के परिवार की जरूरतों को कितनी आसानी से नजरअंदाज कर सकता है?
- अपने जीवन साथी और बच्चों के साथ अपने रिश्ते को थोड़ी देर के लिए जाँचें। क्या आप अपने परिवार के लिए उनके आत्मिक अगुवे हैं?
- प्रार्थना के लिए:
- प्रभु से अपने जीवन में उन स्थानों को दिखाने के लिए कहें जहाँ आपको

प्रभु के संबंध में सही होना है।

- अपने साथी और बच्चों के लिए थोड़ी देर प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि वह उन्हे अपने करीब लेकर आए।
- अपनी कलीसियाई अगुवों की पत्नियों और बच्चों के लिए प्रार्थना करें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको अपने परिवार और कलीसिया दोनों में आत्मिक अगुवा बनने की सामर्थ प्रदान करे।

3

अध्यक्ष

तीतुस 1:7-9 पढ़ें

पौलुस क्रेते की कलीसिया में अगुवों को नियुक्त करने के बारे में तीतुस को बता रहा था। पिछले मनन में, पौलुस ने तीतुस को अगुवे के गुणों के बारे में निर्देश दिए। पद 7-9 में, पौलुस एक अध्यक्ष के गुणों के बारे में बताता है।

अध्यक्ष एक बिशप अथवा पासवान था। वह किसी एक कलीसिया अथवा कलीसियाओं के समूह पर जिम्मेदार हो सकता है। आइए देखें, अध्यक्ष के गुणों के बारे में पौलुस क्या कहता है।

पौलुस के अनुसार, अध्यक्ष को परमेश्वर का कार्य सौंपा गया है। 'सौंपा' शब्द महत्वपूर्ण है। यह कोई पद नहीं जिसे अध्यक्ष खुद लेता है। उसे परमेश्वर ने इस पद के लिए चुना है। परमेश्वर ने अपने राज्य के एक विशेष कार्य की देखरेख उसे सौंपी है। बहुत सारे लोग पासवान अथवा अध्यक्ष बनना चाहते हैं परंतु परमेश्वर हर एक को इस कार्य के लिए नहीं बुलाता है।

निर्दोष

चूँकि अध्यक्ष को यह जिम्मेदारी परमेश्वर ने सौंपी है, उसे एक अच्छे स्वभाव वाला होना चाहिए। अगुवे की ही भाँति, अध्यक्ष को भी निर्दोष होना चाहिए। हमने पिछले मनन में देख लिया है कि इसका मतलब यह नहीं है कि अध्यक्ष ने कभी भी पाप न किया हो। केवल प्रभु यीशु मसीह ही सिद्ध हैं। और अध्यक्ष को भी पाप में बने नहीं रहना है। उसका ऐसा स्वभाव हो जिसे लोग देखें और मानना चाहें। यदि वह पाप में गिरता है तो जल्दी से पाप से निपटकर परमेश्वर के पास आना है। वह परमेश्वर के इस्तेमाल के लिए स्वच्छ पात्र बना रहे।

हठी नही

पौलुस जारी रहता है कि अध्यक्ष हठी न हो। 'हठ' शब्द का यूनानी भाषा में

अर्थ है, 'स्वयं की इच्छा करने वाला' अथवा 'स्वयं को प्रसन्न करने वाला'। हठी अगुवा जानता है कि उसे क्या चाहिए और लोगों को दबाकर भी उसे पूरा करने की कोशिश करता है और इस प्रयास में आई दिक्कतों पर ध्यान तक नहीं देता है। ऐसा करने के द्वारा वह उन लोगों का निरादर करता है जिनके प्रति वह जिम्मेदार है। कई बार अपनी बातों को पूरा करवाने के लिए लोगों को अपने तरीके से दबाता है। पौलुस ने तीतुस को बताया कि अध्यक्ष लोगों के साथ सज्जनता से व्यवहार करे।

अक्सर हम पवित्र आत्मा की भूमिका लेना चाहते हैं। लोगों को पाप को बोध कराने और उनके मार्गों से उन्हे फिराने की जिम्मेदारी हमारी नहीं है। यह पवित्र आत्मा की सेवकाई है। अध्यक्ष सज्जन और धीरजवान हो। लोगों के जीवन में कार्य करने के लिए वह अपने समय में पवित्र आत्मा को अनुमति दे। वह उनसे प्रेम करे और पवित्र आत्मा के कार्य के दौरान धीरजवान बना रहे। यह हमेशा आसान नहीं होगा। हमारे विरोध के बावजूद हमारे प्रति परमेश्वर की सज्जनता और धीरज को याद कर, हमें भी उसका उदाहरण अपनाना है। अध्यक्ष के सेवा पा रहे लोग सिद्ध नहीं होंगे। वे हार सकते या परमेश्वर के स्तर से गिर सकते हैं। अध्यक्ष धीरज और प्रेमी तरीके से उनसे निपटे।

आसानी से क्रोधित नहीं होने वाला

अध्यक्ष आसानी से क्रोधित होने वाला न हो। (पद 7) इसका अर्थ है, उसे अपनी भावनाओं और जीभ को वश में रखना है। जरूरी नहीं कि हर बात अध्यक्ष की इच्छानुसार हो। लोग उसे निराश कर सकते हैं। कुछ लोग उसके कहे को ठुकरा सकते हैं। स्वाभाविक तौर पर ऐसे लोगों से वह कुपित हो सकता है। परंतु क्रोध परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं करता है। मानता हूँ, कई बार क्रोध उचित लगता है। तौभी, पौलुस तीतुस से कहता है कि अध्यक्ष को क्रोध करने में धीमा होना है। यहाँ हम एक बार और धीरज के महत्व को देखते हैं। अपने तरीकों को दूसरों पर थोंपने और क्रोध से प्रतिक्रिया देने वाला अगुवा कभी भी परमेश्वर का इच्छित सेवक नहीं हो सकता है। अध्यक्ष धीरजवान और भावनाओं को वश में रखने वाला हो।

पियक्कड़ न हो

अध्यक्ष पियक्कड़ न हो। शराब कभी भी एक अध्यक्ष को प्रभावित न करे और इससे परमेश्वर की सेवकाई कभी भी बाधित न हो। अध्यक्ष को स्वयं पर नियंत्रण रखना है। शराब का उपयोग करने वाला कभी भी अध्यक्ष न बने। मदिरा के द्वारा

नियंत्रित होने की बजाय, पवित्रात्मा से नियंत्रित हों। (इफि. 5:18)

हिंसक न हो

यदि कोई व्यक्ति अध्यक्ष की भूमिका निभाता है तो वह हिंसक या मारपीट करने वाला न हो। परमेश्वर का राज्य हिंसा से नहीं बढ़ता है। यह पवित्र आत्मा की सेवकाई से बढ़ता है। हिंसा चाहने वाला सोचता है कि परमेश्वर का राज्य उसकी ताकत से बढ़ता है। हिंसा शारीरिक मोह है। यह हिंसा अत्यधिक अनुशासन के रूप में आ सकती है। हिंसा दमन के रूप में आ सकती है। हिंसा चाहने वाले दबाव का उपयोग कर परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने की कोशिश करते हैं। ये लोग परमेश्वर के राज्य का प्रसार तो चाहते हैं परंतु वे तरस, दया और सज्जनता को भूल जाते हैं। वे पवित्र आत्मा से नही, शरीर से सेवकाई करते हैं। अध्यक्ष लोगों से प्रेम करे और उन पर तरस खाए। वह परमेश्वर के राज्य के मुताबिक बनाने के लिए लोगों को मजबुर करने वाला न हो। बजाय इसके, वह सज्जन और धीरजवान हो, स्वयं की शारीरिक अभिलाषाओं पर नही, वरन् परमेश्वर की आत्मा पर भरोसा रखने वाला हो।

नीच कमाई का लोभी न हो

अध्यक्ष नीच कमाई का लोभी न हो। वह लोगों के साथ लेनदेन में सच्चा हो। वह दूसरों की कीमत पर स्वयं को धनी बनाने के लिए अपने पद का इसतेमाल करने वाला न हो। धन और संपत्ति उसके प्रोत्साहक न हों। वह परमेश्वर के राज्य के लिए अपना सब कुछ समर्पित करने के लिए तैयार हो। वह अपनी सेवकाई में निस्वार्थी और स्वयं का त्याग करने वाला हो।

सत्कारी

स्वयं के लाभ को देखने की बजाय, अध्यक्ष आतिथ्य सत्कारी हो। (पद 8) अर्थात, परमेश्वर के द्वारा उसे मिले संसाधनों का वह परमेश्वर के राज्य के लिए इस्तेमाल करे। वह अजनबियों और दोस्तों पर एक समान दया दिखाए। वह दूसरों की सेवकाई के लिए देने और उनकी संभाल करने में प्रसन्न होने वाला हो।

भलाई का चाहने वाला

अध्यक्ष भलाई को चाहने वाला हो। इस संसार में बहुत सारी बुराई है। अध्यक्ष उन बुराईयों में दिलचस्पी नहीं दिखाता। वह उनमें शामिल ही नहीं होता, उसके बारे में सुनना या देखना भी पसंद नहीं करता है। उसका मन भलाई में टिका होता है।

उसका दिल परमेश्वर की बातों को पसंद करता है। परमेश्वर के वचन का विरोध करने वाली हर चीज को वह ठुकराता है। अपने पूरे दिल से वह परमेश्वर और उसके मार्गों से प्रसन्न होता है। उसमें पाखंड नहीं है।

संयमी

पद 8 में, पौलुस तीतुस से कहना जारी रखता है कि अध्यक्ष संयमी हो। संयम आत्मा का फल भी है। यह शरीर और इसकी अभिलाषाओं पर जय पाने के लिए परमेश्वर के द्वारा दी गई योग्यता है। शरीर बुराई की चाह करता है। यह पाप का भूखा होता है। शरीर की यह अभिलाषा अक्सर बहुत ताकतवर होती है। हम इसकी अभिलाषा और प्रभाव में फंस सकते हैं। पवित्र आत्मा हमें संयम का फल देना चाहता है। वह हमें शरीर के इस प्रभाव पर जय पाने का बल देगा। अध्यक्ष वो हो जो शरीर की परिक्षाओं पर जय पाने के लिए पवित्र आत्मा की सेवकाई के लिए अपना दिल खुला रखे। वह सफलतापूर्वक शरीर और इसकी पापमय अभिलाषाओं पर जय पाता है और आत्मिक विजय में जीता है।

सच्चा और पवित्र

अध्यक्ष सच्चा और पवित्र हो। सच्चो व्यक्ति परमेश्वर के साथ संबंध में सही होता है। अगुवा पवित्र हो। पवित्र होने का मतलब पाप से दुषित नहीं होना है, परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के लिए अलग होना है। पवित्र लोग अपने कार्यों, उद्देश्यों एवं इरादों में पवित्र होते हैं। पवित्रता परमेश्वर का वरदान है। पवित्र आत्मा इस नए एवं पवित्र स्वभाव का स्रोत है। अध्यक्ष अपने अंदर कार्यरत पवित्र आत्मा के सामने समर्पित होता है। वह नित दिन यीशु मसीह के समान बनता जाता है।

अनुशासित

अनुशासन अध्यक्ष का अगला गुण है। अनुशासन स्वयं को नियंत्रण रखने की योग्यता है। अनुशासित व्यक्ति सही कार्य करने के लिए अपनी भावनाओं और जोश पर नियंत्रण रखता है। वह अपनी जिम्मदारियों के प्रति आलसी या ढ़ीला नहीं होता है। वह राज्य के कार्य के लिए समर्पित होता है। वह इस राज्य के लिए कठिन कार्य करने या त्याग सहने से भी नहीं कतराता।

सच को दृढ़ता से थामे रहने वाला

अंत में, पद 9 में, अध्यक्ष सिखाए गए 'भरोसेमंद संदेश' को दृढ़ता से थामे रहने वाला होना चाहिए। अध्यक्ष सच को जानता और उसे दृढ़ता से थामे रहता है।

दुश्मन उस सच को लचीला बनाने की हरसंभव कोशिश करेगा। ऐसे समय आएँगे कि सच का प्रचार करना या सिखाना बहुत कठिन लगेगा। हर व्यक्ति उसको सुनना पसंद नहीं करेगा। कुछ मामलों में, सच का प्रचार सताव और कठिनाईयों को भी ला सकता है। लोग सच सुनाने वाले की मजाक उड़ाएँगे, निंदा करेंगे। तौभी, अध्यक्ष सच को दृढ़ता से थाम रखे और कभी समझौता न करे।

अध्यक्ष देह की उन्नति और प्रोत्साहन के लिए परमेश्वर के वचन का सच सुनाए। वह विश्वासयोग्यता के साथ उन्हे सही करे जो भटके हैं या सच का विरोध करते हैं। उसे इसका प्रचार करना है, इसे सिखाना है, इसका बचाव करना है और अपने जीवन में प्रयोग करना है।

अध्यक्ष बनने के कार्य को हल्का न लें। अध्यक्ष दैविकता और पवित्रता का नमूना हो। वह लोगों से प्रेम करे और उनके प्रति तरस एवं सज्जनता से भरा रहे। वह पवित्र आत्मा की भरपूरी से सेवा करे और परमेश्वर के वचन को विश्वासयोग्यता से थामे रहे। वह दूसरों को वचन के सच की ओर लेकर आए और स्वयं के जीवन एवं शब्दों से इसे प्रकट करे।

विचार विमर्श के लिए:

- परमेश्वर ने हमें अपने राज्य में विशेष बातों की देखरेख का कार्य सौंपा है। आपकी जिम्मेदारी क्या है?
- अध्यक्ष सज्जन और धीरजवान हो। यह लोगों के प्रति परमेश्वर की संभाल के बारे में क्या सिखाता है?
- क्या आपने कभी अपनी ताकत से लोगों को प्रभावित करने या बोध कराने के लिए पवित्र आत्मा का स्थान लेने की कोशिश की है? यह गलत क्यों है?
- अध्यक्ष के गुणों को बताने वाले इस पद्यांश के आधार स्वयं को थोड़ी देर के लिए जाँचें। क्या आप अपने जीवन में ये सारे स्वभाव प्रकट करते हैं? किन क्षेत्रों में बदलाव की आवश्यकता है?
- सच के प्रचार एवं बचाव के संबंध में एक अध्यक्ष की जिम्मेदारी क्या है?

प्रार्थना के लिए

- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको लोगों के प्रति तरस और सज्जनता से भरे।

- हमारे अधिकार एवं मार्गदर्शक परमेश्वर के वचन के लिए प्रभु का धन्यवाद करें। प्रार्थना करें कि वह इस वचन को अधिक समझने और प्रायोगिक तौर पर अपने जीवन में डालने में मदद करे।
- अपने आत्मिक अध्यक्षों के लिए कुछ क्षण प्रार्थना में बिताएँ। परमेश्वर से कहें कि वह उनको अपनी इच्छा के व्यक्ति बनाए। परमेश्वर के राज्य में उनकी भूमिका एवं स्वयं उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें।

4

विरोधी को चुप करें

तीतुस 1:10-16 पढ़ें।

हमने अब तक देखा कि पौलुस तीतुस को क्रेते में कार्य को बढ़ाने के लिए नियुक्त करता है। पहले उसे कलीसियाओं में अगुवों को नियुक्त करना था कि परमेश्वर की इच्छानुसार उसके वचन में बने रहें।

पहले अध्याय के इस अंतिम भाग में, हम क्रेते की हालत के बारे में पौलुस की समझ को देख सकते हैं जहाँ वो तीतुस को आदेश देता है वह झूठे उपदेश सिखाने वालों को चुप करे। हमने पिछले मनन में देखा कि अध्यक्ष की जिम्मेदारियों में से एक वचन को थामे रखना और इसे अपनी देखरेख के लोगों तक पहुँचाना है। पौलुस तीतुस को बताता है, अध्यक्षों के लिए वचन को बनाए रख इसका प्रचार करना इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि उनके बीच लोगों को गुमराह करने वाले विरोधी लोग मौजूद थे। आइए देखें कि पौलुस इस पद्यांश में झूठे उपदेशकों के बारे में तीतुस को क्या बताना चाहता है।

पद 10 में, पौलुस तीतुस को याद दिलाता है कि संसार में कई विरोधी मौजूद थे। उनका विरोध परमेश्वर और उसके वचन के सच से था। पौलुस के द्वारा उल्लेखित व्यक्ति परमेश्वर के वचन को स्वीकार करना अथवा उसके मार्गों में चलना पसंद नहीं करते थे।

पद 10 में, पौलुस बताता है कि ये लोग बकवादी होते हैं। उनके पास कहने को काफी कुछ था, परंतु उनके शब्दों में सच का कोई आधार नहीं था। उनके शब्द शक्तिहीन थे क्योंकि उनके पास पवित्र आत्मा की सामर्थ नहीं थी। वे मात्र मनुष्य के विचार और तत्वशास्त्र थे। ये लोग सिखाते और प्रचार करते थे परंतु उनके शब्द खोखले और उद्देश्यरहित थे।

पौलुस तीतुस को यह भी बताता है कि ये उपदेशक धोखेबाज थे। वे लोगों को परमेश्वर के वचन की सच्चाई से बाहर खींचने में शैतान के हाथों का औजार थे।

अदन की वाटिका में शैतान ने हव्वा को फल खिलवाकर धोखा दिया। उसने उसे फल को खाने पर बहुत कुछ देने का वायदा किया। हव्वा ने शैतान के झूठ पर विश्वास किया और उसके फंदे में फंस गई। क्रेते के झूठे उपदेशक भी ऐसे ही शैतान के बहकावे में थे। कईयों को तो ऐसा भी लगता था कि वे वचन का बचाव कर रहे हैं परंतु वास्तव में वे शैतान के हाथों के उपकरण बने हुए थे।

ध्यान दें कि पौलुस पद 10 में 'खतनेवालों' के बारे में बताता है। इस समूह ने सिखाया कि उद्धार पाने के लिए खतना करना एवं अन्य यहूदी कर्मों को करना जरूरी था। पौलुस पद 11 में तीतुस को बताता है कि इन लोगों को चुप करना जरूरी था क्योंकि वे पूरे घराने को नाश करने और उन्हे सच से फिराने में लगे थे।

पौलुस खतने के नही, परंतु उस शिक्षा के विरूद्ध था कि उद्धार पाने के लिए खतना जरूरी था। उद्धार केवल यीशु मसीह और क्रूस पर उसके कार्य में उपलब्ध है। यह कहना कि यीशु मसीह का कार्य अधूरा था और एक व्यक्ति को उद्धार पाने के लिए खतना करवाना भी जरूरी था, सबसे बड़ी ईशनिन्दा थी। पौलुस इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट था। केवल मसीह का कार्य हमारे पापों को क्षमा करने और हमें स्वर्ग के राज्य में ले आने के लिए काफी था। अन्यजातियों को मसीह बनने के लिए पहले यहूदी बनना जरूरी नहीं था। उसे केवल यीशु के कार्य की जरूरत थी। यह प्रचार करना कि एक व्यक्ति को मसीह के द्वारा किए गए कार्य के अलावा भी कुछ करने की जरूरत थी तो यह क्रूस पर यीशु के किए गए कार्य के महत्व को कम करना था। ये धोखेबाज कर्म पर आधारित उद्धार का प्रचार कर रहे थे। पद 11 के आधार पर, वे कई सारे क्रेतेवासियों के घरों में प्रवेश कर चुके थे। खतनावालों के गलत उपदेशों के द्वारा कई सारे परिवार धोखे में फंस चुके थे। वे कलीसिया में विभाजन ले आए और उन्हे चुप किया जाना जरूरी था।

पौलुस ने पद 11 में तीतुस से कहता है कि ये लोग वास्तव में इस झूठी शिक्षा से लाभ पा रहे थे। झूठी शिक्षाओं को घर घर पहुँचाने से वे धन और अन्य मदद भी पा रहे थे। उन दिनों में, इस प्रकार से मदद पाने वाले कई झूठे उपदेशक थे। पौलुस इन लोगों को मिलने वाले धन को 'नीच कमाई' कहता है। वे झूठ बोलकर और लोगों को धोखा देकर लाभ कमाते थे। उन्हे परमेश्वर को इस सबका हिसाब देना पड़ेगा।

ऐसा लगता है कि पौलुस के दिनों में, क्रेतेवासी झूठे, दुष्ट और आलसी पेटु के रूप में कुख्यात थे। (पद 12) ये शब्द कठोर लगते हैं परंतु ये पौलुस के शब्द

नहीं थे। ये शब्द उनके ही एक भविष्यद्वक्ता ने कहे थे जब उसने इन्हे इनकी दुष्टता के लिए डाँटा था। क्रेते रहने और कार्य करने के लिए आसान जगह नहीं थी। सुसमाचार के लिए बहुत कुछ करना था। क्रेते शैतान का दृढ़ गढ़ था। पौलुस तीतुस को उस समय के दुष्ट मार्गों में पड़े लोगों को डाँटने की चुनौती देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कलीसिया तक इस दुष्टता से प्रभावित थी। तीतुस को इन झूठे उपदेशों एवं कार्यों में पड़े लोगों को कठोर ताड़ना देनी है और इन सब सच्चाईयों को उनके ध्यान में लाना है जिससे वे अपने विश्वास में दृढ़ हो सकें और क्रेते में फैल रहीं यहूदी काल्पनिक कथाओं तथा झूठी शिक्षाओं को त्याग सकें। (पद 13, 14)

पौलुस हर अदैवीय चीज से अलग होने की बुलाहट देता है। मसीह के साथ अपने रिश्ते में हम अपनी पारिवारिक और व्यक्तिगत पृष्ठभूमियों को ले आए हैं? उद्धार हमें परमेश्वर के घर में लेकर आता है परंतु यह हमें सिद्ध नहीं बनाता है। हमारे उद्धार के बाद भी बहुत कुछ करना होता है। हमें अतीत के पापों के प्रति मरना होता है। प्रभु में बढ़ने से हमें रोकने वाली हमारी पृष्ठभूमि के दृढ़ गढ़ों से छुटकारा पाना होता है। तीतुस को अपने समय के क्रेते संस्कृति की दुष्टता का सामना करना था। उसे हर सांस्कृतिक और पापमय आदत अथवा स्वभाव पर रोक लगानी थी जो सुसमाचार की शिक्षा के पक्ष में नहीं थी। हमें भी उन गठरियों पर ध्यान देना है जो हम मसीह के साथ हमारे रिश्ते में अपने साथ लिए चलते हैं। क्रेतेवासी अपनी दुष्टता और बेईमानी के लिए प्रसिद्ध थे। जब वे मसीह में आए तो उन्हे ये सब छोड़कर मसीह और उसके उद्देश्य के सामने सब कुछ समर्पित करना था। उन्हे अपनी संस्कृति को भी बदलना था क्योंकि यह परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं था।

पद 15 को समझना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। पौलुस तीतुस से कहता है कि शुद्ध लोगों के लिए सब कुछ शुद्ध था। इस पद को समझने की कुँजी हृदय की अवस्था में है। शुद्ध व्यक्ति वह है जिसका परमेश्वर के साथ सही संबंध है। उसका मन और दिल मसीह के द्वारा शुद्ध किए गए हैं। यदि आपका मन और दिल मसीह के द्वारा शुद्ध और नए बन चुके हैं तो आप सब चीजें उसके नजरिये से देखते हैं। हमारा धन, हमारे विचार, हमारा निजी जीवन, और हमारा हर भाग उसको समर्पित है और उसके नाम को सम्मान और आदर देते हैं।

दूसरी ओर, यदि हमारे दिल और मन अशुद्ध हैं, तो हम वस्तुओं को भी अलग ही नजरिए से देखेंगे। शुद्ध और सम्माननीय लोग अशुद्ध और पापमय मन के द्वारा

अशुद्ध और पापमय हो सकते हैं। हम यह धन और लैंगिकता के मामले में देख सकते हैं। ये चीजें स्वयं में शुद्ध और सम्माननीय हैं परंतु अशुद्ध मन उन्हे भटका देता है। लैंगिकता का गलत उपयोग हुआ और अशुद्ध किया गया है। दुष्टत और अशुद्ध मन का स्पर्श पा चुका धन हर बुराई की जड़ बन जाता है।

हमें यह देखना है कि पाप दिल और मन से शुरू होता है। और यदि मन अशुद्ध है, तो पाप को बढ़ने की उपजाऊ जमीन मिल जाती है। यदि मन शुद्ध है तो पाप को निकलना पड़ता है। शुद्ध मन परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद की ओर अग्रसर होता है। अशुद्ध मन भलाई को मोड़कर बुराई में बदल देता है।

जब हम मन के द्वारा अशुद्ध किए गए पर कार्य करते हैं तो हमारा विवेक दुषित हो जाता है। पाप के मामले में परमेश्वर ने हमें दो छलनियाँ दी हैं। उसमें एक छलनी हमारा मन है। हमें अच्छे और बुरे की जानकारी के लिए मन दिया गया है। वचन को पढ़ने पर, वचन हमारे मन को आकार और निर्देश देते हैं, और हमारे सामने सही और दैवीय बातों को प्रकट करते हैं। यदि हम हमारे मन में सच का विरोध करते हैं तो पाप करते हैं, और फिर प्रभु हमारे दूसरी छलनी, विवेक को झकझोरता है। उस दौरान, हम या तो विवेक के कहे को ठुकरा सकते हैं, या उसकी बात मानकर अपने मार्गों को बदल सकते हैं। यदि हम विरोध करते हैं तो हमारा विवेक कठोर हो जाता है। धीरे धीरे यह बुराई करने पर भी हमें नहीं चुभेगा। क्रेते के विश्वासियों के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्होने अपने मन में सच का विरोध किया, विवेक की बातों की ओर अपना कान हटा लिया। दुष्ट कार्य किए और विवेक में बिना किसी कचोट के झूठ को सिखाया। उनका विवेक दुषित हो चुका था।

परमेश्वर के सच को ठुकराने और उसकी आंतरिक आवाज का विरोध करने वाले इन्ही लोगों ने दावा करना शुरू किया कि वे परमेश्वर को जानते और उसके प्रतिनिधियों के रूप में उसकी सेवा करते हैं। पौलुस के पास इन झूठे उपदेशकों के लिए कठोर शब्द थे। 16वें पद में वह उन्हे 'घृणित, अनाज्ञाकारी और किसी भी अच्छे काम के अयोग्य' कहता है।

क्रेते की कलीसिया पापमय सांस्कृतिक रिवाजों और झूठे उपदेशकों से घिरी थी। क्रेते शैतान की रणभूमि था। तीतुस के पास एक कार्य था। तीतुस क्रेते की बुराई के विरोध में बोलने के लिए जिम्मेदार था। उसे लोगों को उस हर चीज से अलग होने को कहना था जो परमेश्वर के वचन के पक्ष में नहीं थी। क्रेते को परमेश्वर के वचन की ओर वापिस लौटना था। कलीसिया और देश में से बुराई को उखाड़ना

जरूरी था कि बड़ी माप में परमेश्वर की आशीषें आ सकें।

सोच विचार के लिए:

- क्या आप अपने क्षेत्र में देख सकते हैं कि शैतान लोगों को परमेश्वर के वचन से अपनी ओर आकर्षित कर रहा है? वर्णन करें।
- कर्म के द्वारा उद्धार पाने में विश्वास करने के खतरे के बारे में यह पद्यांश हमें क्या बताता है?
- झूठे उपदेशें का प्रचार किस प्रकार नीच कमाई का लाभ होता है?
- परमेश्वर के साथ चलने में आपने अतीत से अपने साथ क्या लिया है? परमेश्वर के अपनी चाल को सही करने के लिए आपको क्या करने की जरूरत है?
- विवेक का महत्व क्या है? यह दुषित कैसे हो सकता है?
- क्या आपके समाज में झूठे उपदेशक हैं? वे क्या सिखाते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से अपना मन शुद्ध करने की प्रार्थना करें कि आप चीजों को सही तरीके से देख सकें।
- प्रभु को स्वयं की जाँच करने को कहें कि आपकी पृष्ठभूमि से कहीं कोई ऐसी चीज तो नहीं आ गई है जिसे अंगिकार करना और निपटना आवश्यक है।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि आपका उद्धार उसके कार्य पर आधारित है, हमारे किसी कार्य या कर्म पर नही।
- प्रभु से अपने मन और विवेक को धोने की प्रार्थना करें कि हम दुबारा उसकी और उसकी इच्छा की लय में आ सकें।
- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने समाज के झठे उपदेशकों को परमेश्वर के वचन के द्वारा सही करने के योग्य बना सके।

5

पुरूष, स्त्रियाँ और दास

तीतुस 2:1-15 पढ़ें

पिछले अध्याय के अंतिम शब्दों में, पौलुस ने तीतुस को क्रेते के उन झूठे उपदेशों को चुप कराने के निर्देश दिए जो लोगों को गलत एवं झूठे सिद्धांत सिखा रहे थे। उसने उसे उन समुदायों में अगुवों को नियुक्त करने का भी आदेश दिया जहाँ कलीसिया थी और उसे अगुवों एवं अध्यक्षों की नियुक्ति से पहले उनके गुणों के बारे में भी बताया। पौलुस अब अपना ध्यान कलीसिया के आम विश्वासी की ओर लगाता है, तीतुस को कलीसिया के विभिन्न समूहों के बारे में निर्देश देता है।

बुजुर्ग पुरूष

पौलुस सबसे पहले समूह, बुजुर्ग पुरूषों के बारे में तीतुस को बताता है। बुजुर्ग पुरूषों को अपने शरीर और जिज्ञासाओं पर नियंत्रण रखना है। अध्याय 1 में, हमने देखा कि अगुवे और अध्यक्ष पियक्कड़ न हों। सभा के व्यस्कों पर भी यही सिद्धांत लागु होता है। क्या यह भी हो सकता है कि उन लोगों के पास यह परीक्षा अधिक आती है जिनके पास अधिक खाली समय होता है?

बुजुर्ग पुरूष सम्माननीय हों और परमेश्वर के सामने आदरयोग्य जीवन जिएँ। उन्हे दैवीय बातचीत और व्यवहार का नमूना बनना है। सम्मान पाने के लिए, उन्हे अपने जीवन के किसी भी पाप से निपटना जरूरी है। उन्हे दूसरों के साथ अपने व्यवहार में भी सच्चे होना चाहिए।

स्वयं पर नियंत्रण एक और स्वभाव है जिस पर बुजुर्ग पुरूषों को ध्यान रखना है। यह पवित्र आत्मा का फल है जो हमें परीक्षाओं और शारीरिक पापों के ऊपर विजय पाकर जीने में मदद करता है। यह हमारे समय के उपयोग और हमारे कार्यों को भी प्रभावित करता है। यह आसान है कि बुजुर्ग व्यक्ति आराम करें और दूसरे कार्य करें। पौलुस उनसे कहता है कि वे अपने शरीर एवं मन पर नियंत्रण रखें और परमेश्वर के राज्य के लिए उसका इस्तेमाल करें। यह आराम करने, आलसी या

सुस्त बने रहने का समय नहीं था। वे अब भी कलीसिया और पूरे समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। उन्हे परमेश्वर के राज्य के कामों में स्वयं को अनुशासित करना होगा।

बुजुर्ग पुरूषों को विश्वास में भी दृढ़ रहना है। दूसरे शब्दों में, उन्हे विश्वास को जकड़े रखना है कि वे इसे अपनी अगली पीढ़ी को दे सकें। उसे परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षाओं या सच से भटके बिना अपने बच्चों तक इसे पहुँचाना है।

पौलुस ने बुजुर्ग पुरूषों को प्रेम से भरे रहने की भी चुनौती देता है। लोगों से अलग रहने, या स्वयं में बने रहने से प्रेम में बलवान एवं स्वस्थ बना नहीं रहा जा सकता। प्रेम में कार्य निहित है। पौलुस बुजुर्ग पुरूषों से कहता है कि उन्हे प्रेम की प्रायोगिकता में प्रवेश करना है। परमेश्वर के लोगों से प्रेम करने के अवसरों को खोजना है। जो जवान नहीं कर सके, बुजुर्ग पुरूष करने की कोशिश कर सकते हैं। कलीसिया को परमेश्वर पिता के प्रेम को प्रकट करने वालों की जरूरत है। मुझे याद है, रीयूनियन के द्वीप पर एक बार मैं आत्मिक अगुवों के एक समूह को सिखा रहा था। ये सारे आत्मिक अगुवे नौजवान थे। उनमें से एक ने अपना आत्मिक पिता बनाने लायक एक बुजुर्ग व्यक्ति को खोजने का बोझ बताया। मसीह की देह में आज ऐसे पितृ-प्रेम की अत्यधिक जरूरत है।

बुजुर्ग पुरूषों को धीरज में पक्के रहना है। वे कभी आशा छोड़ न दें। उन्हे सतत् बने रहना है। प्रभु की उपस्थिति में पहुँचने तक उनकी दौड़ चलती रहेगी। उनमें जान और सांस बने रहने तक, उन्हे कुछ न कुछ योगदान देते रहना होगा। उनके लिए सहज है कि वे आराम करें और नौजवानों को सब कुछ करने दें। पौलुस उन्हे हार नहीं खाने को कहता है। उनके पास योगदान देने को बहुत कुछ था और उन्हे यह अंत तक करते रहना है।

बुजुर्ग स्त्रियाँ

पौलुस का अगला संदेश बुजुर्ग स्त्रियों के बारे में था। उसने तीतुस को बताया कि बुजुर्ग स्त्रियों का चालचलन पवित्र हो। अपनी बात को समझाने के लिए, पौलुस पद 3 में कुछ विशेष उदाहरण का उपयोग करता है।

बुजुर्ग स्त्रियों को चुगली नहीं करने वालीं बनकर पवित्रता को दिखाना है। चुगली करना अपनी जीभ से चोट पहुँचाना है। यह एक व्यक्ति पर इस प्रकार दोष लगाना है जिससे उसका नाम खराब हो सके। ऐसा लगता है कि क्रेते की बुजुर्ग

स्त्रियों की यह एक समस्या थी। दूसरों के बारे में बात करते वक्त उन्हे सावधान रहना था। उन्हे अपनी जीभ को विभाजन अथवा देह की हानि का कारक नहीं बनाना था। बजाय इसके, उन्हे देह के विकास के अपने शब्दों को उपयोग करना था।

बुजुर्ग स्त्रियों की अगली परीक्षा मदिरा थी। अब चूँकि उसका परिवार व्यस्क हो चुका था, उसके पास काफी समय था, खाली समय पियक्कड़ बनने और चुगली करने की परीक्षा में पड़ने के लिए काफी था। जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ की कॉफी की दुकानें बुजुर्गों से भरी रहती थीं जो हर ताजा खबर को जानने के लिए कॉफी पीने आया करते थे। याद रखें, काफी से पहले के दिनों में, मदिरा सामाजिक पेय वस्तु था। इन बुजुर्ग स्त्रियों के लिए पीने के इकट्ठे होना और खबरों की अदला बदली करना कितना सहज था। पौलुस इनसे कहता है कि इन्हे पियक्कड़ नहीं बनना है। उन्हे इसके इस्तेमाल में नियंत्रित और संवेदनशील रहना है।

बुजुर्ग स्त्रियों के प्रति पौलुस का विचार था कि वे नौजवान युवतियों को अपने जीवन के अनुभव से सिखाएँ। यदि मसीह की देह में आत्मिक पिता की जरूरत है, तो आत्मिक माता की भी बहुत जरूरत है। नौजवान स्त्रियों को अपनी बातें बाँटने के लिए बुजुर्ग स्त्रियों की आवश्यकता होती है। कई ऐसे विषय हैं जिन्हे एक महिला दूसरी महिला को ही बता सकती है। पुरूष के द्वारा स्त्रियों को परामर्श देने के कारण आज समय में उठी समसयाओं की रोशनी में, पौलुस का यह सुझाव बहुत ही लाभदायक है। कलीसियाएँ परिपक्व स्त्रियों को प्रोत्साहित करें कि वे जवान स्त्रियों को अपनी सेवा और परामर्श दें। यह कलीसिया की जवान और बुजुर्ग दोनों प्रकार की महिलाओं के लिए आशीषमय रहेगा। बुजुर्ग स्त्रियाँ बैठी आराम न फरमाएँ। मसीह की देह में उनकी भी अहम भूमिका है।

नौजवान स्त्रियाँ

पद 4 में ध्यान दें कि बुजुर्ग स्त्रियाँ नौजवान विवाहित स्त्रियों को क्या सिखाएँ। उन्हे अपने पतियों और बच्चों से प्यार करना सिखाना है। नौजवान स्त्रियाँ छोटे बच्चों की वजह से आसानी से काम में अत्यधिक व्यस्त हो सकती हैं। वे अपनी प्राथमिकताएँ खो सकती हैं। हाँ, यह महत्वपूर्ण है कि भोजन तैयार हो, कपड़े धोए जाएँ और बच्चों को वस्त्र पहनाए जाएँ, परंतु यह सब बिना प्रेम के क्या मायने रखता है? नौजवान स्त्रियाँ बुजुर्ग महिलाओं के अनुभवों से सीख सकतीं हैं कि किस प्रकार वे अपने पतियों और बच्चों को समान रूप से प्रेम करना सीख सकें। सब

कुछ कहने और करने के बाद, पति और बच्चे एक पत्नी और माता के द्वारा किए गए कार्यों को अवश्य याद करेंगे। बर्तनों या फर्श को धोने की सच्चाई मिट सकती है, परंतु उसका प्रेम हमेशा अमिट रहेगा। वाह, बुजुर्ग महिलाओं की कितनी बड़ी जिम्मेदारी है कि वे नौजवान स्त्रियों को अपने जीवन में इस प्रेम को बनाए रखने में मदद कर सकें।

नौजवान स्त्रियाँ भी स्वयं पर नियंत्रण रखें। स्वयं पर नियंत्रण शरीर और मन को उन बातों में बनाए रखने के लिए अनुशासित करना है जो परमेश्वर हमसे चाहता है। यह शरीर, इसके मोह और सही करने या नहीं करने की परीक्षाओं पर जय पाने की परमेश्वर-देय योग्यता है। इसका मतलब था कि उन्हें अपनी भावनाओं, स्वभाव और कार्यों को नियंत्रित रखना था।

नौजवान स्त्रियाँ पवित्र हों। यह पवित्रता पति के साथ उसके रिश्ते से संबंधित है। उसे उसके प्रति हर बात में विश्वासयोग्य रहना है। यह परमेश्वर और उसके वचन की आज्ञाकारिता से भी संबंधित हो सकता है। उसे खुद को और अपने विचारों को सुरक्षित रखना है कि वे परमेश्वर के द्वारा स्वीकार्य हों।

पद 5 के अनुसार, नौजवान स्त्रियों को घर पर भी व्यस्त रहना है। उसे अपने परिवार की जरूरतों को पूरी करना है। अपने बच्चों की देखरेख करनी है। पौलुस क्रेते की नौजवान स्त्रियों को माता और संभाल करने वाली की अपनी भूमिका को गंभीरता से लेने की चुनौती देता है।

संभाल केवल अपने परिवार में ही नही, वरन् आसपास के लोगों पर भी नजर आना चाहिए। उसका दिल अपने परिवार की जरूरतों से परे, अपने समाज और कलीसिया तक पहुँचे। उसे अपने पड़ोसियों पर भी अपनी दया और उदारता दिखानी चाहिए। उन दिनों में, इसका मतलब पड़ोसियों को भोजन देना या बच्चों की मदद करना हो सकता है। उसे दूसरों के प्रति तरस और संभाल दिखाना है।

अंत में, नौजवान स्त्रियों को अपने पति के अधीन रहना है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह अपने पति की इच्छा के लिए उसकर दासी बनकर रहे। यह मतलब भी नहीं है कि वह अपनी कोई इच्छा या चाहत जाहिर कर ही नहीं सकती। इसका मतलब था कि उसे अपने पति और उसकी अगुवाई का आदर करना है। वह अपने मन से उसके साथ आई और कार्य कर रही है। स्वयं को उसने अपने पति के सामने समर्पित किया। वह उससे होड़ नही, उसके साथ कार्य करती है। उसने उसे और उसके अधिकार को नकारा नही, परंतु विचार विमर्श के द्वारा, वह उसके विचार के

साथ सहमत हुई। उसका दिल एकता, समरूपता और प्रेम का दिल था।

नौजवान पुरूष

अब पौलुस तीतुस को नौजवान पुरूषों के बारे में बताता है। नौजवान पुरूषों के सामने भी स्वयं पर नियंत्रण की चुनौती थी। नौजवान होने के नाते वे ताकत और उत्साह से भरे थे। वे सामने आने वाली हर चीज की अवज्ञा करने की परीक्षा में पड़ सकते हैं। पौलुस तीतुस को उन उत्साही नौजवानों को यह सिखाने को कहता है कि वे अपनी भावनाओं, जोश और कार्यों पर नियंत्रण रखें। वे अपने उत्साह को परमेश्वर से प्रार्थना करने, उसके समय और उद्देश्य के बीच में न आने दें। स्वयं पर यह नियंत्रण केवल उनके जोश में ही नहीं, परंतु उनमें नैतिक जीवन में दिखना जरूरी था। उनका मदिरा और सख्त नशा उनके मार्गों को बाधित कर सकता है। यह उनकी आम जीवन शैली तक को प्रभावित कर सकता है।

नौजवान तीतुस

पौलुस पद 7 में व्यक्ति संदेश देता है। यह स्पष्ट नहीं है कि तीतुस की उम्र क्या रही होगी, परंतु पौलुस की नजरों में, वह उसके विश्वास का पुत्र था। पौलुस उससे कहता है कि विश्वास में उसका पुत्र होने के नाते वह भी नौजवानों के सामने नमूना बनकर उन्हे सिखाए। नौजवान होने के नाते, तीतुस को सच्चाई, गंभीरता और संदेश की स्पष्टता के साथ सिखाना था। आइए इसके बारे में थोड़ा और देखें।

पहला, पौलुस तीतुस को अपनी शिक्षा में सच्चाई बनाए रखने को कहता है। सच्चाई शब्द में शुद्धता शामिल है। सच्चाई से भरी चीज दुषित और मलिन नहीं हो सकती है। इस पर सच ही की भरोसा किया जा सकता है। पौलुस तीतुस से कहता है कि सच का प्रचार करते और सिखाते वक्त उसे सच्चाई से भरा व्यक्ति बनना है। यदि आप स्वयं प्रचार किए जाने वाले सच में चलते हैं, तभी सच्चाई के साथ सिखा सकते हैं।

दूसरा, तीतुस को गंभीरता के साथ सिखाना है। मतलब, तीतुस को भय के साथ सिखाना था। उसे यह समझना जरूरी था कि वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय सिखा रहा था। सिखाते और प्रचार करते वक्त वह परमेश्वर का प्रतिनिधि था और उसे इस विषय को गंभीर रूप से लेना था। उसे सिखाए जा रहे विषय को स्वयं सम्मान और आदर देना था।

अंत में, तीतुस को संसार के सामने यह संदेश स्पष्टता (खराई) के साथ

बोलना था। यहाँ खराई का अर्थ स्वस्थ है। उसका सिखाया गया सच दुषित न हो। सिखाने वाले सच से स्वयं को भटकना नहीं है। लोगों की जरूरतों और इच्छाओं के अनुसार संदेश को तरल नहीं करना है। यद्यपि इसे स्वीकार नहीं किया जाए, बिना किसी समझौते के इसका प्रचार करना है।

पौलुस की सलाह और निर्देश को मानने में, तीतुस ने किसी को भी दोष लगाने का मौका कभी नहीं दिया। सच का विरोध करने वाले होंगे। (पद 8) सच्चाई, गंभीरता और स्पष्टता (खराई) के साथ सिखाने पर उसे कभी भी शर्मिन्दा नहीं होना पड़ेगा।

दास

इस पद्यांश में अंतिम निर्देश दासों को मिले हैं। यद्यपि पौलुस दासता का बढ़ावा नहीं देता था, उसने इस पापमय संसार में इसे एक सच्चाई के रूप में देखा। अपने पद्यांश में वह विशेष तौर पर मसीही दासों को निर्देश देता है। दासों के सामने उनकी विशेष परीक्षाएँ आती हैं। पौलुस उन सबसे यहाँ निपटना चाहता है।

दासों को हर बात में स्वामियों के अधीन रहने को कहा गया। कुछ दासों के स्वामी बहुत ही कड़े थे। ऐसे स्वामियों के दास विरोध करने की परीक्षा में पड़ सकते हैं। दासता में कोई प्रतिष्ठा नहीं थी। दास के रूप में, वे अपने स्वामियों के अधीन थे। अपने मालिकों का विरोध करना या उनका आदर नहीं करना बुरा नमूना थे। अपने मालिक का सम्मान और आदर नहीं करने वाले मसीही दास की कल्पना करें। कैसा नमूना होगा ये? यीशु मसीह के लिए यह कैसी गवाही हो सकती है? उन्हें अपनी हालत को प्रभु के द्वारा जीवन में लाये जाने वाले बदलाव को दिखाने के लिए उपयोग करना है। उन्हें अपने मालिकों के साथ व्यवहार में सम्मान और सच्चाई को दिखाना है और ऐसा करने से, वे अपने स्वर्ग के पिता का भी आदर करते हैं।

पौलुस ने दासों से कहा कि वे अपने मालिकों को प्रसन्न करने वाले हों। उन्हें एक अतिरिक्त मील भी चलने को तैयार रहना चाहिए। अपने स्वामियों को प्रसन्न करने के लिए वे अपनी बुलाहट से बढ़कर भी कार्य करने को तैयार हों। और ऐसा करना आसान नहीं है, खास तौर पर तब, जब स्वामी कठोर हो। तौभी यह उनमें मौजुद मसीह के प्रेम और स्वभाव की सच्चाई को दिखा पाएगा।

मसीही दास अपने जुबान पर काबु रखें। अक्सर उनके सामने मालिकों के

विरोध में बोलने की परीक्षा आती होगी। जब उन्हे लगता है कि उनके साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है, तो आसान लगता है कि उनकी बुराई या शिकायत करें। पौलुस पद 9 में दासों को कहता है कि वे उन्हे मालिकों के विरोध में बोलने की बजाय मुसिबत के समयों में परमेश्वर पर भरोसा करें।

पद 10 में पौलुस दासों को चोरी के खिलाफ चेतावनी देता है। ये स्वामी अक्सर सुख सुविधाओं में रहने वाले थे। और दास गरीबी में जीवन बिताते थे। ऐसे में, मालिकों की चीजों में से कुछ ले लेने का भाव आ सकता था। शायद मालिक को पता ही नहीं चले। हमारी नौकरी में भी यही नियम लागु होता है। जैसे परमेश्वर दासों को भरोसेमंद होने की बुलाहट दे रहा था, वैसे ही वह किसी भी कार्य को करने वाले विश्वासियों को भी सच्चाई के साथ कार्य करने की बुलाहट देता है। दासों को ऐसे जीना और मालिकों की सेवाक करनी थी कि मालिक उन पर पूरा भरोसा दिखा सकें। जीवन में मिले अपने पद के द्वारा उन्हे अपने मालिकों के सामने मसीह जीवन की असलियत को दिखाना है। अपने दासों और उनके भरोसे को देखकर मालिक भी उनके द्वारा बताए जाने वाले परमेश्वर के बारे में सुनने को तैयार होंगे।

परमेश्वर ने हमें जिस भी परिस्थिति में रखा है, वहाँ हमें उसके गवाह और साक्षी बनना है। शायद आप अपनी नापसंद का कार्य कर रहे होंगे। उस नौकरी में भी हर दिन प्रभु के गवाह बनने के अवसरों को खोजना कितनी बड़ी चुनौती है। परमेश्वर हर व्यक्ति को पासवान या कलीसिया का अगुवा बनने के लिए नहीं बुलाता है परंतु हम जहाँ भी हों, वह हमें सेवा करने अवश्य बुलाता है। दास भी जीवन में मिले अपने पद के द्वारा अपने मालिकों के सामने मसीह जीवन की असलियत को दिखाए। परमेश्वर हमें भी अपने कार्यों को इसी नजरिए से देखने को बुलाता है।

सोच विचार के लिए:

- पौलुस ने बुजुर्गों को आराम से बैठने नही, परंतु प्रभु की सेवा करते रहने की चुनौती दी। आज की कलीसिया में 'आत्मिक पिताओं' की भूमिका क्या है?
- कलीसिया की बुजुर्ग स्त्रियाँ नौजवान स्त्रियों को कैसे सिखा और प्रोत्साहित कर सकती हैं? कलीसिया में 'आत्मिक माताएँ' कितनी महत्वपूर्ण हैं?
- पौलुस ने निर्देश दिया कि बुजुर्ग स्त्रियाँ नौजवान स्त्रियों को अपने पति और

बच्चों से प्रेम करना सिखाएँ। अपने व्यस्त कार्यों में वे इस प्राथमिकता से चूक सकती हैं।

- तीतुस को पौलुस की चुनौती, नौजवान होने के नाते सच्चाई, गंभीरता और खराई में बने रहने की थी। क्या आप अपने जीवन में इन स्वभावों को दिखाते हैं?
- दास अपने मालिकों का सम्मान और उन्हे प्रसन्न करने के मकसद से उनकी सेवा करें। यह सिद्धांत आपके आज के कार्य पर कैसे लागु होता है? क्या आपके कार्यस्थल और विद्यालय में लोग आपके जीवन में यीशु को देखते हैं? ऐसा करने के लिए आपको क्या करना होगा?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने कार्यस्थल और विद्यालय उसका नमूना बनने में मदद करे।
- प्रभु से कहें कि वह आपको एक आत्मिक बेटा या बेटी दे जिसे आप विश्वास में दृढ़ कर सकें।
- इस पद्यांश में हर समूह को कहे गए पौलुस के निर्देशों को दोहराएँ। परमेश्वर से ऐसा कोई क्षेत्र आपके जीवन में दिखाने को कहें जहाँ आपको उसकी महिमा के लिए कार्य करने की जरूरत है।
- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने जीवन की परिस्थिति को स्वीकार करने और उस परिस्थिति में भी प्रभु की उपस्थिति और सामर्थ के गवाह बनने की ताकत दे।

6

हमारा उद्धार

तीतुस 2:11-15

तीतुस के इस पत्र में, पौलुस अगुवों और अध्यक्षों के गुणों के बारे में बता रहा था। अध्याय 2 के पहले भाग में, उसने तीतुस को निर्देश दिए कि वह पुरूषों, स्त्रियों और दासों को सिखाएँ कि प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता बना लेने के बाद का उनका जीवन कैसा होना चाहिए। इस विषय पर पौलुस का बल दिखाता है कि क्रेते की कलीसिया में निपटने के कई सारे मुद्दे थे। वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्वयं को सिद्ध नहीं बना पाए थे।

पौलुस पद 11 में अपने पाठकों को याद दिलाते हुए जारी रहता है कि परमेश्वर के अनुग्रह ही से उन्होंने उद्धार पाया था। हमारे लिए यह याद रखना बहुत जरूरी है। प्रभु ने हमें इसलिए नहीं बचाया क्योंकि हम उद्धार के योग्य था। उसने हमें इसलिए नहीं बचाया कि हमने उस योग्य कुछ किया हो। उद्धार प्रेमी परमेश्वर का उन लोगों को दिया गया अनुग्रह है जो इसे स्वीकार करना चाहते हैं। अनुग्रह के अलावा उद्धार का कोई और वर्णन नहीं दिया जा सकता। अनुग्रह हमारी अयोग्यता के बावजूद हमें मिली परमेश्वर की प्रसन्नता है। हम पाप से छुटकारा पाने के योग्य नहीं हैं, परंतु परमेश्वर हमें वो देता है जिसके हम योग्य नहीं हैं। वह अपने अद्‌भुत प्रेम और प्रसन्नता की वजह से हमें क्षमा करता और बदलता है।

पद 11 में ध्यान दें कि यह उद्धार सब मनुष्यों के लिए उपलब्ध है। उद्धार का न्यौता हर एक के लिए है पर हरेक इसे पाता नहीं है। जो इसे स्वीकार करते हैं, तो उनमें एक अद्‌भुत बदलाव आता है। पौलुस अगले पदों में इसी बदलाव के बारे में बताता है।

पद 12 में, पौलुस अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु यीशु के द्वारा दिए जाने वाले उद्धार ने उन्हे अदैविक और सांसारिक जोश अथवा लालसा को 'ना' कहना सिखाया। हमारे बदले में किए गए मसीह के कार्य को समझने से पहले हम इस

संसार की बातों और इसी के तरीकों में फंसे हुए थे। परमेश्वर की बातें हमें समझ नहीं आती थीं, न ही हम उनमें आनंद पाते थे। अब हमने मसीह और उसके उद्धार को जान लिया है, जीवन एक नए अर्थ की ओर मुड़ने लगता है। प्रभु को जानने वाले महान खुशी और उत्साह को पाते हैं। संसार की बातें फीकी पड़ती जाती हैं और इसके प्रति हमारी चाहत समाप्त हो जाती है। सांसारिकता और अदैविकता का आकर्षण खत्म हो जाता है। इच्छाएँ बदल जाती हैं। अब उनमें अदैविक प्रभावों और सांसारिक लालसाओं को 'ना' कहने वाला मसीह का दिल और मन आ जाता है।

प्रभु का उद्धार हमें दूसरी बात, स्व-नियंत्रित जीवन जीना सिखाता है। मसीह को उद्धारकर्ता मानने से पहले, हमें संसार और इसकी पापमय इच्छाएँ नियंत्रित रखती थीं। जब हमने प्रभु यीशु के कार्यों और उसके उद्धार को स्वीकार किया तो पवित्र आत्मा हमारे दिल में रहने आया। पवित्र आत्मा हममें स्व-नियंत्रण उत्पन्न करता है। वह हमें प्रभु की इच्छा को पूरा एवं दुष्ट का विरोध करने का बल देता है। शरीर हममें अब भी क्रियाशील रहता है। वह हमें परीक्षा में डालना और फिर से पुराने मार्गों में लाना चाहता है। स्व-नियंत्रण परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए शरीर एवं इसकी इच्छाओं पर जय पाने की आत्मा के द्वारा दी गई योग्यता है। प्रभु यीशु को जानते ही आप पवित्र आत्मा का वरदान पाते हैं जो आपको अस संसार की दुष्टता का विरोध करने की ताकत देता है। उद्धार केवल दिल और मन का बदलाव ही नही, पवित्र आत्मा की सेवकाई के द्वारा सही कार्य को करने की ताकत भी है।

पौलुस पद 12 में कहना जारी रखता है कि उद्धार हमें इस युग में सही और दैविक जीवन जीना सिखाता है। हम परीक्षाओं से घिरे हुए हैं। हमारी हर तरफ अदैविकता नजर आती हैं। उद्धार हमारे दिन और मन को बदलता है। यह हमें सही करने का बल प्रदान करता है। परिणाम, एक बदला हुआ जीवन जो पूरे संसार से अलग दिखता है। प्रभु यीशु को जानने वाले, पवित्र आत्मा की ताकत से इस युग की दुष्टता एवं शरीर की अभिलाषाओं पर जय पा सकते हैं। संसार उनमें एक बदलाव देखता है। वे दैवीय और सही लोग हैं क्योंकि वे यीशु मसीह के समान बन रहे हैं। एक और बात, इसका मतलब यह भी नहीं है कि एक विश्वासी पाप नहीं कर सकता है। विश्वासी भी गिर सकता और कुछ समय के लिए विरोधी जीवन जी सकता है। पौलुस हमें यह बता रहा है कि परमेश्वर हमें दैवीय और सही जीवन जीने के लिए हर जरूरी चीज देता है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम पवित्रात्मा की सामर्थ से दुष्ट का विरोध कर स्वयं को परमेश्वर और उसके उद्देश्य के सामने

समर्पित कर सकें।

पद 13 में इस उद्धार का एक और पहलू भी मौजूद है। पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि प्रभु यीशु का उद्धार चखने वाले एक आशा की बाट जोहते हैं। और वो आशा प्रभु यीशु का दुबारा आना है। जो तैयार नहीं हैं, उन लोगों के लिए यह दिन डरावना है। अविश्वासिओं के लिए यीशु मसीह का दुबारा आना भयानक होगा। परंतु उससे प्रेम करने वालों के लिए यह दिन अलग ही होगा। वे हर दिन को अपने पत्र की इंतजार कर रहे बच्चे की तरह जीते हैं। वे इस आशा से सुबह उठते हैं कि यही वो दिन होगा। वे उस आगमन के लिए हमेशा तैयार होकर जीते हैं। यह उनके जीवन की सर्वोपरी इच्छा है कि प्रभु को आमने सामने देखें।

पौलुस ने पद 14 में प्रभु यीशु के कार्यों के बारे में दो बातें बताता हैं। पहली, वह अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु यीशु हमें सब दुष्टता से छुड़ाता है। यह क्रूस पर हुआ जब यीशु ने हमारे पापों के लिए अपनी जान दी। हम मरने वाले थे परंतु उसने हमारा स्थान लिया, और उसकी कीमत चुकाई। उसने पाप के दोष से हमें छुड़ाया। ध्यान दें कि यीशु ने हमें 'सारी' दुष्टता से छुड़ाया। ऐसा कोई पाप या दुष्टता नहीं जिसे प्रभु क्षमा न कर सके या हमें छुड़ा न सके। सारी दुष्टता प्रभु यीशु के लहू में ढ़ाँपी गई है। हमारे लिए यह कितनी बड़ी आशा है।

प्रभु यीशु के कार्य के बारे में दूसरी बात, पौलुस कहता है कि उसने हमें स्वयं का बनाने के लिए शुद्ध करने हेतु स्वयं को दे दिया, अपने खुद के लोग। इसी कारण प्रभु यीशु आए। वह स्वयं के लोग बनाना चाहता है। वह उन लोगों को शुद्ध बनाना चाहता है। मेरे जीवन में ऐसे समय आए हैं जब मुझे लगा कि प्रभु के साथ गहरी संगति में रूकावट बने पाप पर मैं कैसे जय पा सकता हूँ। यह भाग मुझे बताता है कि मुझे मेरे प्रभु स्वयं शुद्ध करना चाहता है। प्रभु का कार्य ही मुझे शुद्ध करता है। वह हमें यह कार्य करने को नहीं कहता है। हम अपनी ताकत से कभी भी उसकी इच्छा के व्यक्ति नहीं बन सकते हैं। हमारे दिलों और स्वभाव को बदलने के लिए हमें उसकी जरूरत है। परमेश्वर स्वयं के लिए उन लोगों को शुद्ध करता है जो भला कार्य करने की खोज में रहते हैं। उसके रास्ते में न आएँ। उसके और उसके उद्देश्य के सामने समर्पित हों। उसकी अगुवाई में चलें। उसकी आवाज को पहचानें। उसकी आज्ञा मानें और अपनी इच्छा के मुताबिक आपको एक सुंदर बर्तन में बदलते हुए देखें।

पौलुस इस अध्याय को तीतुस के सामने एक विशेष चुनौती रखकर समाप्त

करता है कि वह लोगों को उसके द्वारा सिखाई गई बातें सिखाए। उसे उन्हे परमेश्वर के अधिकार के साथ प्रोत्साहित करना और डाँटना है। पौलुस पद 15 में याद दिलाता है कि वह किसी को भी उसकी निदा करने का अवसर न दे। सच के लिए खड़े रहने के कारण तीतुस के कई दुश्मन बन सकते थे। लोग उसकी सिखाई बातों को पसंद न करें। वह अपने लिए लोगों की पसंद या नापसंद को नियंत्रित नहीं कर सकता था। निंदा का अवसर नहीं देने के मतलब में, पौलुस दो बातें कह रहा था। पहली, वह तीतुस को कहता है कि वह किसी को भी उसे या उसकी सेवकाई को नीचा दिखाने या निंदा करने का कारण या वजह न दे। वह सबके सामने अच्छे नमूना पेश करे कि लोग उसे मानें। दूसरी, लोगों के द्वारा उसके या उसकी सेवकाई के विरोध में कही गई बातें कभी भी उसे रोक या हताश न कर पाएँ। तीतुस को याद रखना है कि परमेश्वर ने उसे बुलाया है। लोगों की टिप्पणियाँ या अपमान उसे परमेश्वर की बुलाहट से दूर न करने पाए। यदि परमेश्वर ने उसे सेवकाई के लिए बुलाया है तो कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग उसके बारे में क्या बोलते हैं। तीतुस को परमेश्वर का सेवक होने के नाते अपने अधिकार का उपयोग करना था। उसे अपनी शिक्षा में शर्मशार या डरपोक होने की जरूरत नहीं थी। मसीह के राजदूत के अधिकार के साथ उसे सिखाना था। उसकी शिक्षाओं को सुनने वाले सिखाने के उसके अधिकार को देखकर उसका आदर करने पाएँ।

सोच विचार के लिए:

- जब पौलुस ने अपने पाठकों को सिखाया कि उनको मिला उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के परिणामस्वरूप उन्हे मिला हुआ उपहार था तो उसका क्या मतलब था?
- आपके उद्धार ने आपका जीवन कैसे बदला?
- अपने जीवन में पवित्र आत्मा के द्वारा आपको ताकत देने का क्या प्रमाण आपने देखा है?
- क्या आप अपने पापों पर जय पाकर जी रहे हैं? कौनसे पापों पर अभी भी आपको जय पानी है?
- पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि मसीह उन्हे शुद्ध करना चाहता है। खुद मसीही जीवन जीने की कोशिश करने और मसीही को शुद्ध करने की अनुमति देने में अंतर क्या है?
- परमेश्वर ने आपको क्या करने को बुलाया है? क्या आप उस बुलाहट के अनुसार चल रहे हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको खोजकर आपमें वो मार्ग दिखाए जहाँ आप आत्मिक विजय में नहीं चल पा रहे हैं।
- पवित्र आत्मा की ताकत देने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें। प्रार्थना करें कि वह पवित्र आत्मा की सेवकाई के लिए आपका दिल खोल सके।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह आपको शुद्ध करना चाहता है और दैविकता में चलने के लिए हर जरूरी चीज को उपलब्ध करवाया है। उससे अपने दिल को खोलने की प्रार्थना करें कि वह आपमें अपनी इच्छा पूरी कर सके।
- प्रभु में आने के बाद आपके जीवन में आए बदलाव के लिए उसका धन्यवाद करें।

7

भलाई करना

तीतुस 3:1-15 पढ़ें

पौलुस तीतुस को क्रेते के लोगों को यह निर्देश देने के लिए उत्साहित कर रहा था कि वे प्रभु यीशु के विश्वासी होने के नाते किस प्रकार का जीवन जिएँ। इस अध्याय में, पौलुस तीतुस को समाज में लोगों के साथ संबंध बनाते समय सभी मसीहियों के लिए जरूरी आम गुणों के बारे में बताता है।

शासकों और अधिकारियों के अधीन

पौलुस तीतुस को बताता है कि परमेश्वर के लोगों को अपने शासकों और अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। हमें यह याद रखना है कि सभी राजनैतिक अधिकारी यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं। कुछ अधिकारी भ्रष्ट होते हैं। यद्यपि एक मसीही का प्रथम कर्तव्य परमेश्वर और उसका उद्देश्य है, उसे परमेश्वर के द्वारा उस पर नियुक्त किए गए अधिकारियों के अधीन समर्पण में चलना पड़ेगा। मसीही समाज की भलाई चाहने वाले नागरिक बनें और समाज पर शासन के लिए परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गये लोगों का सम्मान करें।

आज्ञाकारी

विश्वासी आज्ञाकारी बनें। परमेश्वर के वचन के प्रति ही नही, देश के नियमों के प्रति भी। पद की पृष्ठभूमि बताती है कि हमें देश के अधिकारियों के आज्ञाकारी और अधीन रहना है। देश के नियमों की अनदेखी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने और विश्वासी होने की गवाही को खराब करने के समान है।

भलाई करने को तैयार रहें

तीतुस को प्रेरित बताना जारी रखता है कि विश्वासी हरदम भलाई करने के लिए तैयार रहें। पद 2 में पौलुस भलाई शब्द के तात्पर्य को बताता है। उसने तीतुस से कहा कि विश्वासी चुगली न करे। चुगली करना एक व्यक्ति और उसके नाम को

अपने बुरे शब्दों के द्वारा दुषित करना है। विश्वासी के मूँह से निकलने वाले दयालु और दैवीय हों। वे बनाएँ और आशीष दें।

पद 2 में ही, पौलुस ने तीतुस को बताया कि विश्वासी शांति बनाने वाले हों। बहस और विभाजन परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पूरा नहीं करते हैं। मसीहियों को यह जानना जरूरी है कि वे भी कभी मसीह के दुश्मन थे। जब दुश्मन थे, तब मसीह ने अपना जीवन उनके लिए दिया कि वे परमेश्वर के साथ मेल (शांति) कर सकें। विश्वासी भी दुसरों के साथ अपने रिश्तों में इस नमूने को अपनाएँ। वे भाईयों और बहनों के बीच समन्वय बनाने और दुश्मनों के साथ भी शांति बनाने की कोशिश करने वाले हों।

मसीही लिहाज करने वाले हों। स्वयं को आगे रखना एक आम स्वभाव है। जब प्रभु यीशु इस दुनिया में थे तो उन्होने हमारे सामने उदाहरण रखा। वे खुद के लिए नही, वरन् दूसरों के लिए जिए। उन्होने दूसरों की पसंद और जरूरतों को प्राथमिकता दी। विश्वासियों को मसीह का उदाहरण अपनाकर अपने कार्य में दूसरों को प्राथमिकता देनी चाहिए। वे दूसरों को आशीष देने के लिए स्वयं एवं खुद की पसंद को मारने के लिए तैयार है।

अंतत: पद 2 में, पौलुस तीतुस को याद दिलाता है कि विश्वासी दूसरों के प्रति नम्रता दिखाने वाले हों। यह नम्रता खुद की जरूरतों से ऊपर दूसरों की जरूरतों को देखने से दिखाई देती है। आस पास के लोगों के प्रति अपने व्यवहार में नजर आती है। वे स्वयं को दूसरों से ऊपर न उठाएँ। वे यीशु की तरह भाईयों और बहिनों के पाँवों को धोने के लिए भी तैयार रहें। (देखें यूहन्ना 13:5)

पौलुस क्रेते के विश्वासियों को उनके अतीत के जीवन की याद दिला रहा है। (पद 3) वो जीवन अब जीने जा रहे मसीह में जीवन के बिल्कुल विपरीत था। अविश्वासियों के रूप में, क्रेतेवासियों ने मूर्खता का जीवन जीया। उनमें से कुछ पियक्कड़ थे और अनैतिक जीवन जी रहे थे। वे केवल क्षणिक सुख के लिए जी रहे थे, उन्होंने कभी भी अनंत जीवन या परमेश्वर के उद्देश्यों की परवाह नहीं की।

इतना ही नही, वे परमेश्वर के वचन को भी नहीं मानते थे। वे इस दुनिया की चकाचौंध और लालसा से धोखा खाए बैठे थे। वे मानने लगे कि उनका उद्देश्य और अर्थ मात्र शरीर की अभिलाषाओं को संतुष्ट करना था। वे उन सुख सुविधाओं और प्रवृतियों के दास बन चुके थे। वे खुद को आनंद देने के लिए जिए परंतु वह आनंद क्षण भर का था।

वे एक दूसरे के प्रति विद्वेष से भरे थे। एक दूसरे को नकारने में लगे थे। उन्होने एक दूसरे को धोखा दिया और झूठ बोला। अपने कार्यों की वजह से, उनसे लोग घृणा करने लगे, वे एक दूसरे से भी घृणा करते थे। वे केवल स्वयं के बारे में ही चिंतित रहते थे। वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक दूसरे को दबा देने के लिए भी तैयार थे।

पौलुस पद 4 में क्रेतेवासियों को बताता है कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की दया और प्रेम के आते ही किस प्रकार वे हर तरफ से बदल गए। वह उनके पास इसलिए नहीं आया कि वे भले थे। (पद 5) जब वे एकदम बुरे थे, वह उनके पास आया। वह झूठों और धोखेबाजों के समाज में आया था। वह एक दूसरे से घृणा करने और नकारने वाले लोगों के बीच में आया था।

जब प्रभु यीशु ने स्वयं को क्रेतेवासियों पर प्रकट किया, उसने उन्हे 'दुबारा जन्म से धोए जाने' और 'पवित्र आत्मा के नवीनीकरण' से शुद्ध किया। उसने क्रेतेवासियों को साफ किया। वे पाप और दुष्टता से कलंकित थे। यीशु मसीह ने आकर उनके पापों को उठा लिया। उन्हे साफ और माफ किया। अपना पवित्र आत्मा उन्हे दिया और नया जीवन प्रदान किया। नया जीवन पवित्र आत्मा में जीवन था जो उनमें रहकर हर दिन उन्हे साफ किया करता था। उनके विचार परिवर्तित हो गए। अपने पुराने कामों में अब उनकी दिलचस्पी नहीं रही। वे उन पर आए पवित्र आत्मा के द्वारा धोए जाकर एवं आत्मा के नवीनीकरण से नए लोग बन गए।

परमेश्वर ने क्रेतेवासियों के लिए ऐसा इसलिए किया कि अनुग्रह के द्वारा धर्मी इहराए जा सकें। धर्मी ठहराने का मतलब परमेश्वर के साथ सही मेल में आना है। क्रेतेवासी तभी परमेश्वर के साथ सही मेल में आ सकते थे जब उनकी पापरूपी रूकावट को हटा दिया जाए। यीशु ने उनके जीवन की पाप की बाधा को अपने ऊपर ले लिया कि परमेश्वर के साथ संबंध पुनः बनाया जा सके। ये झूठ बोलने और दुष्टता में फंसे क्रेतेवासी, जिन्हे पापों की क्षमा मिल चुकी थी, अनंत जीवन और परमेश्वर की आशीषों के भागीदार बन गए। (पद 7)

पौलुस क्रेतेवासियों को याद दिलाता है कि इस अनुग्रह को पा लेने के बाद, उनकी केवल एकमात्र उचित प्रतिक्रिया रह जाती है और वह है, भलाई करने में स्वयं को सौंप देना। (पद 8) परमेश्वर का अनुग्रह और दया उनकी सेवा के प्रेरणादायक बनें। इससे बड़ी प्रेरणा और क्या हो सकती है? परमेश्वर की सेवा करने में सबसे बड़ी प्रेरणा हमारे लिए किए गए कार्य के प्रति हमारा प्रेम और धन्यवाद

ही हो सकता है। जब हमारी प्रेरणा यह है तो जब बातें मुश्किल भी क्यों न लगती हों, जब आगे बढ़ाना जारी रखते हैं। हमारे चारों ओर उसकी दया के कारण हम स्वयं को पूरा उसके हाथों में समर्पित कर देते हैं। हमारे लिए उसके किए गए कार्य के प्रति हम धन्यवाद से भरे हैं; और बदले में हम स्वयं को पूरा समर्पित करते हैं।

जब हम प्रभु यीशु के पास आए तो हमारे जीवन की चीजें बदलने लगीं। इसका मतलब यह नहीं है कि अब हमारे जीवन में सही करने को कुछ नहीं रह गया है। यद्यपि उद्धार हमें परमेश्वर के साथ सही घोषित करता है, यह हमें सिद्ध नहीं बनाता है। पद 9 में, पौलुस ने क्रेतेवासियों को कहा कि उन्हे मूर्ख विवादों, वंशावलियों, बहसों और नियम के झगड़ों से बचना था। ये विचार विमर्श मसीह की देह के लिए लाभदायक नहीं थे, ये केवल विभाजन करने वाली बातें थीं। अविश्वासी संसार ने कलीसिया को देखा और इसमें विभाजन और विवाद को पाया। पौलुस ने क्रेते की कलीसिया को चुनौती दी कि इन अंतरों से बचकर रहें।

तीतुस को विभाजन करने वालों से निपटना था। (पद 10) विभाजन करने वाले को चेतावनी देना जरूरी था। यदि वह नहीं सुनता है, दूसरी बार चिताया जाए। दो चेतावनियों के बावजूद, यदि वह नहीं सुनता है तो उसे कलीसिया की संगति से बाहर निकाल देना चाहिए ताकि विभाजन और विवाद करना जारी न रखे। पौलुस के अनुसार, इस प्रकार का व्यक्ति पाप में जीता है और अपने ही आलोचना एवं विभाजन की बातों और कार्य के जाल में फंस जाता है। (पद 11)

तीतुस को कहे अपने अंतिम शब्दों में, पौलुस मसीह की देह के लिए उसके दिल में डाले गए प्रभु परमेश्वर के प्रेम को प्रकट वाली किसी वस्तु को प्रकट करता है। पौलुस ने तीतुस को कहा कि वह अरतिमास या तुखिकुस को उसके कार्य में प्रोत्साहन के लिए भेज रहा है। वह यह भी चाहता था कि तीतुस उसके पास आने के लिए भी अपनी पूरी कोशिश करे। तीतुस के प्रति पौलुस का प्रेम प्रत्यक्ष था।

पद 13 में, पौलुस तीतुस को प्रेत्साहित करता है कि वह जेनास व्यवस्थापक और अप्पुलोस की हर संभव मदद करे। उसे अपने संगी विश्वासियों के साथ मिलकर इनके बीच प्रभु की सेवकाई कर रहे इन भाईयों की हर जरूरतों को पूरा करना था।

परमेश्वर के लोगों को भलाई करते रहने में समर्पित रहना था। उन्हे मसीह की देह की दैनिक जरूरत को पूरा कर और फलदायक जीवन जीकर वे इस कार्य को कर सकते थे। उन्हे अपने वरदानों, समय और संसाधनों का परमेश्वर के राज्य और

कलीसिया की भलाई के लिए उपयोग करना था।

पौलुस ने अपने संग रह चुके लोगों और विश्वास में उससे प्रेम करने वालों को धन्यवाद देने का तीतुस को निर्देश देते अपने शब्दों को समाप्त करता है।

सोच विचार के लिए:

- क्या आपने कभी भी अपने अधिकारियों की आलोचना की है? पौलुस इसके मामले में क्या कहना चाहता है?
- क्या आपकी कलीसिया आपके आस पास के लोगों की जरूरतों का ध्यान रखती है? कुछ उदाहरण दें।
- दूसरों के साथ आपके रिश्तों में प्रभु क्या बदलाव लेकर आए?
- प्रभु की सेवा करने के लिए हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा क्या होनी चाहिए?
- क्या आपको मसीह की देह में विभाजन के संकेत दिखाई देते हैं? वे कौन कौन से हैं? इन मामलों से निपटना महत्वपूर्ण क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से अपनी आँखें खोलने की प्रार्थना करें कि आप अपने आसपास के लोगों की जरूरतों को देख सकें।
- प्रभु से उन दीवारों को तोड़ डालने की प्रार्थना करें जो आज के सच्चे विश्वासियों को विभाजित करती हैं?
- प्रभु को जानते ही आपके जीवन में आए बदलाव के लिए प्रभु का धनयवाद करें।
- प्रभु से प्रार्थना करें कि भलाई करते रहने और दूसरों के सामने सही नमूना पेश करने में आपकी मदद करे।

फिलेमोन
का परिचय

लेखक

पौलुस फिलेमान 1:1 में स्वयं को इस पत्र का लेखक बताता है जिसे उसने खुद अपने हाथों से लिखा है। (पद 19) इसे लिखते समय पौलुस रोम के कैदखाने में था। (1:1, 9 देखें)

पृष्ठभूमि

यह पत्र कुलुस्से में पौलुस की सेवकाई के दौरान प्रभु में आए एक विश्वासी, फिलेमोन को लिखा गया है। (फिलेमोन 1:19) फिलेमोन एक धनी व्यक्ति और दास का स्वामी था। फिलेमोन 1:1-2 से नजर आता है कि कलीसिया उसके घर में लगा करती थी।

यह एक बचकर निकले दास के बारे में पौलुस के द्वारा फिलेमोन को लिखा गया व्यक्तिगत खत है जो रोम पहुँच गया था। दास का नाम उनेसिमुस था। वह पौलुस की सेवकाई से प्रभु में आ गया था और पौलुस उसे मालिक के पास वापिस भेज रहा था। इस खत में, पौलुस उनेसिमुस के जीवन के लिए विनती करता है और फिलेमोन से कहता है कि वह उससे अच्छा व्यवहार करे, यद्यपि वह उसे छोड़कर भाग गया था। उनेसिमुस की वजह से फिलेमोन को हुए किसी भी नुकसान का पौलुस स्वयं चुकता करने का निश्चय देता है।

कुलु. 4:7-9, उनेसिमुस तुखिकस के साथ वापिस लौटता है और लगता है कि वही पौलुस कुलुस्सियों के लिए पत्री लेकर आया था।

पुस्तक का वर्तमान महत्व

फिलेमोन को लिखे खत से हमें आज के समय के लिए कई महत्वपूर्ण सबक सीखने को मिलते हैं। पौलुस फिलेमोन को याद दिलाता है कि यद्यपि उनेसिमुस उसे छोड़कर भाग गया था, परंतु सर्वोच्च परमेश्वर उसे पौलुस के पास ले आता है जहाँ यीशु के साथ उसकी मुलाकात होती है। भयानक लगने वाली परिस्थिति परमेश्वर के महान कार्य का मंच बन जाती है। हमें याद रखना है कि परमेश्वर हमारे जीवन की हर परिस्थिति पर सर्वोच्च है और अपने उद्देश्य को पूरा करता है।

इस पत्र में दूसरी बात, पौलुस, उनेसिमुस और फिलेमोन का संबंध है। फिलेमोन दास का स्वामी एवं धनी व्यक्ति था। उनेसिमुस दास था। पौलुस ने दोनों के साथ भाई के समान व्यवहार किया। उसने कभी भी उनेसिमुस को अपने स्वामी से नीचा नहीं समझा।

पौलुस ने कभी प्रतीक्षा नहीं की कि फिलेमोन उनेसिमुस को पदोन्नत करे, परंतु विनती की कि वह उसे मसीह में भाई के रूप में स्वीकार करे। यह हमें दिखाता है कि मसीह की देह में समानता है, परंतु हर एक की भूमिका अलग अलग हो सकती है। पौलुस चाहता था कि उनेसिमुस अपने मालिक के पास लौटे और चूंकि वह मसीह को जान चुका है, एक सर्वश्रेष्ठ दास बनने की कोशिश करे। वह चाहता था कि फिलेमोन उनेसिमुस के साथ पूरे सम्मान और आदर के साथ बर्ताव करे। यह उस व्यक्ति से बात करता है जो परमेश्वर से मिली जिम्मेदारी के मामले में उलझन में पड़ा है।

8

फिलेमोन, अफफिया और अर्खिपुस

फिलेमोन 1:1-7 पढ़ें

फिलमोन की पत्री प्रेरित पौलुस का कुलुस्से के एक व्यक्ति फिलेमोन को लिखा गया व्यक्तिगत खत है। खत एक सेवक के बारे में है जो घर छोड़कर भाग गया था और बाद में मसीह को जान चुका था। संभव है कि फिलेमोन पौलुस की सेवकाई के फलस्वरूप मसीही बना होगा। इसीलिए पौलुस भागे सेवक के बारे में फिलेमोन को पूरी स्वतंत्रता के साथ लिखता है।

खत को लिखते समय पौलुस कैदखाने में था। ध्यान दें कि कैसे वो स्वयं को मसीह का कैदी कहता है। हमें यह आभास मिलता है कि पौलुस इस पद पर गर्व करता है। वह मसीह के लिए कैदी कहलाने में शर्म नहीं महसूस करता था। यह बात पौलुस के बारे में बहुत कुछ बताती है। वह कैद की शर्तों को मान चुका था। उसके साथ घटी बातों को वह स्वीकार कर चुका था और सुसमाचार के लिए कैद में जाना उसके लिए गर्व की बात थी।

ध्यान दें कि यह खत तिमुथियुस से भी आया है। (पद 1) वह पौलुस का सहकर्मी और प्रभु में उसका पुत्र था। तिमुथियुस पौलुस के जीवन की इस घड़ी में उसके लिए सहायक रहा।

खत फिलेमोन को लिखा गया है जिसे पौलुस एक प्रिय मित्र और सहकर्मी बताता है। अभिवादन अफफिया और अर्खिपुस को भी जाता है। हम अर्खिपुस के बारे में कुलुस्सियों 4:17 में पढ़ सकते हैं जहाँ उसे प्रभु के द्वारा मिले कार्य को पुरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अनेक व्याख्याकर्ताओं का मानना है कि अफफिया फिलेमोन की पत्नी और अर्खिपुस उसका बेटा है। यह तथ्य इस पृष्ठभूमि में सही लगता है क्योंकि वे सब साथ रहते हैं। पौलुस उनके घर में मिलने वाली कलीसिया को भी अभिवादन भेजता है। (पद 2)

निसंदेह, फिलेमोन एक धनी व्यक्ति था। उसके पास कई दास और एक इतना

बड़ा घर था जहाँ विश्वासीगण सभा के लिए एकत्रित हो सकते थे। दासों को रखना हमें चकित न करे, क्योंकि यह उस समय की प्रथा थी।

पौलुस फिलेमोन व उसके परिवार को अभिवादन देता और उन पर परमेश्वर के अनुग्रह (अयोग्य होने के बावजूद प्रसन्नता), और शांति की कामना करता है। यह बात वह अक्सर अपने अभिवादन में कहा करता है। शांति प्रभु यीशु के साथ सही संबंध और परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य एवं शुद्ध चाल का चिन्ह है। परमेश्वर की क्षमा और आज्ञाकारिता के बाहर वास्तविक एवं सतत शांति नहीं पाई जा सकती है।

ध्यान दें, पौलुस ने फिलेमोन से कहा कि वह प्रार्थना में उसे याद करते वक्त उसके लिए सदैव परमेश्वर का धन्यवाद करता है। जब परमेश्वर पौलुस के मन में लोगों का ध्यान लाता तो वह उनके लिए प्रार्थना व धन्यवाद किया करता था। परमेश्वर दिन में कितनी बार आपके मन में लोगों का ध्यान लाता है? जब पौलुस लोगों को याद करता तो उन्हे प्रार्थना में प्रभु के हाथ में सौंप दिया करता था। कई बार वह उनके लिए प्रभु का धन्यवाद कर दिया करता था।

पौलुस ने फिलेमोन के विश्वास और संतों के प्रति उसके प्रेम के बारे में सुनकर प्रभु का धन्यवाद दिया। यहां प्रेम से पौलुस का मतलब मात्र कोई भावना नहीं है। पौलुस अपना प्रेम भावना या शब्दों के द्वारा नही, वरन् प्रायोगिक तौर पर प्रकट कर रहा था। संभव है कि वह अपने आसपास के लोगों की जरूरतों को पूरा किया करता था। वह एक धनी व्यक्ति था। संभवतया वह अपने धन का उपयोग समुदाय में रह रहे लोगों के जीवन में प्रभु की महिमा को देखने के लिए कर रहा था। पद 7 में, पौलुस फिलेमोन को धन्यवाद देता है क्योंकि परमेश्वर ने 'संतों के दिलों के दिलासा देने' के लिएउसका उपयोग किया था। ऐसा हो सकता है कि उसके प्रेम और दया के कारण लोगों की आत्मा को दिलासा मिला और वे सेवकाई में ही जारी रहे।

पौलुस ने प्रार्थना की कि फिलेमोन वचन और कर्मों के द्वारा अपने विश्वास को बांटने में बना रहे जिससे वह मसीह में उसके लिए उपलब्ध हर भलाई की पूरी जानकारी पा सके। हममें से किसने देने में संपूर्णता और खुशी को अनुभव नहीं किया है? जब हम दूसरों को देते हैं, हम स्वयं परमेश्वर की संपूर्णता और खुशी को अनुभव करते हैं। हम देने के लिए धनी हैं। हम उसके सेवक बनने में संतुष्ट हैं।

हमने इसी की बुलाहट पाई है। उसके वरदानों का उपयोग कर, फिलेमोन गहन संपूर्णता को अनुभव कर पाया।

फिलेमोन के प्रेम का प्रायोगिक प्रकटीकरण पहले ही मसीह की देह के लिए एक बडी आशीष था। पौलुस यह सुनकर बहुत ही खुश हुआ कि किस प्रकार फिलेमोन ने देने और दया के द्वारा कई संतों को प्रोत्साहित किया था। फिलेमोन पौलुस की तरह प्रचार करने वाला या सामने आने वाला नहीं था, परंतु परमेश्वर से उसे मिले स्रोतों के द्वारा वह एक अहम भूमिका निभा सकता था। हर एक को प्रचार के लिए नहीं बुलाया गया है। कुछ लोगों को परमेश्वर ने प्रायोगिक तरीके से मसीह के प्रेम को प्रकट कर 'संतों के दिलों को दिलासा देने' के लिए भी बुलाया है।

सोच विचार के लिए:

- कैद के कारण पौलुस का व्यवहार कैसा था? अपनी कठिनाईयों और परीक्षाओं में क्या आपका भी व्यवहार ऐसा ही होता है?
- क्या आज आपके दिल में परमेश्वर के साथ मेल अथवा शांति है? उस शांति को कौन हटा सकता है?
- अपने प्रेम को प्रायोगिक रूप से प्रकट करने के बारे में पौलुस क्या कहता है? क्या आपने अपने परिवार, मित्र एवं साथियों के प्रति अपना प्रेम दिखाया है?
- इस पद्यांश में फिलेमोन अपना विश्वास कैसे बाँटता है? प्रचार के अलावा, और किस तरीके से हम अपना विश्वास बाँट सकते हैं?
- आज आप किसी संत के दिल को किस प्रकार दिलासा दे सकते हो?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आज परमेश्वर किसी व्यक्ति को आपके मन में डाल रहा था? उस व्यक्ति के लिए कुछ क्षण प्रार्थना करें।
- परमेश्वर से कहें कि वह किसी व्यक्ति के प्रति अपना प्रेम प्रायोगिक तौर पर दिखाने में आपकी मदद करे।
- आज आप किस परीक्षा में से होकर गुजर रहे हैं? प्रभु से अपने व्यवहार को सुरक्षित रखने की याचना करें कि उसके द्वारा परमेश्वर का दिल और स्वभाव प्रकट हो।

9

उनेसिमुस

फिलेमोन 1:8-25 पढ़ें

इस पत्र के पहले भाग में, हम फिलेमोन और उसके परिवार से मिले। हमने देखा कि कैसे पौलुस ने उसे प्रभु में अपना मित्र और सहकर्मी समझा। संतों के प्रति आशीष बनने के लिए पौलुस उसे सराहता भी है।

फिलेमोने को खत लिखने में पौलुस का एक खास मकसद था। प्रेरित होने के नाते, पौलुस के कुछ अधिकार थे। वह फिलेमोन को बताता है कि प्रभु में और धीरज दिखाकर वह उसे सही कार्य करने का आदेश दे सकता था परंतु इसकी बजाय, वह उससे प्रेम और तरस के साथ अनुरोध करता है (इसी स्वभाव के लिए फिलेमोन जाना जाता था)। यह भी ध्यान दें कि पौलुस फिलेमोन से एक बुजुर्ग एवं मसीह का कैदी बनकर अनुरोध करता है। (पद 9) दूसरे शब्दों में, यदि फिलेमोन पौलुस के पद, उम्र और कार्य का आदर करता है तो अवश्य उसकी सुनेगा। फिलेमोन से उसके अनुरोध का यही आधार है।

पौलुस अपना विचार फिलेमोन पर थोंप सकता था। कलीसिया में उसका अधिकार और पद था। आज ऐसे कई अगुवे मिल जाएँगे जो अपने विचारों को दूसरों पर थोंपने में इच्छुक रहते हैं। अधिकार का होना एवं इस अधिकार का इस्तेमाल करना अलग अलग बातें हैं। अधिकार का मतलब अपनी माँगों को पूरी करवाना नहीं होता है। यह लोगों को अपने अधीन करने की भी इजाजत नहीं देता है। पौलुस नहीं चाहता था कि फिलेमोन कर्तव्य अथवा आभार के बोझ से इस कार्य को करे। वह चाहता था कि वह इसे प्रेम के साथ करे क्योंकि सही तरीका था।

ध्यान दें कि पौलुस का अनुरोध 'उनेसिमुस' नामक घर से भागे दास के बारे में था। उनेसिमुस का अर्थ है 'उपयोगी अथवा लाभदायक', परंतु इसने अपने मालिक फिलेमोन को नीचा दिखा दिया था।

जैसे तैसे दास उनेसिमुस पौलुस से मिलने आया। उनेसिमुस से मुलाकात के बारे में पौलुस कोई ब्यौरा नहीं देता है परंतु उनकी मुलाकत का परिणाम साफ था। उनेसिमुस प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करता और कैद के दौरान पौलुस के लिए लाभदायक साबित होता है। पौलुस ने उसे अपना बेटा कहा।

यहाँ पौलुस और उनेसिमस के आपसी रिश्ते पर ध्यान देना जरूरी है। पौलुस उसे अपना बेटा समझता था। उनेसिमुस एक भागा हुआ दास था। सामाजिक तौर उसका स्तर काफी नीचे था। परंतु पौलुस सामजिक स्तर को तूल नहीं देता है। उसे दासता से परे, एक वास्तविक मनुष्य को देखा। उसने उनेसिमुस को यीशु की नजरों से देखा। हमारे साथ सामाजिक समानता नहीं रखने वाले लोगों को नीचा देखना कितनी आसान बात है। शायद वे किसी जनजाति या जनसमूह के होंगे। पौलुस जाति, रंग या सामाजिक स्तर नहीं देखता है। उसकी नजर केवल वास्तविक लोगों और उनकी वास्तविक जरूरतों पर है। उनेसिमुस प्रभु में उसका बेटा था। उसने उससे ऐसा प्रेम किया जैसे कि वह उसका अपना खून और संबंधी हो।

हमने पहले देखा कि उनेसिमुस का अर्थ ''लाभदायक या फायदेमंद''। पौलुस ने फिलेमोन से कहा कि उसका दास उसके लिए 'अनुपायोगी' रहा होगा। वह भाग गया था और मालिक के लिए वास्तव में समस्या बन चुका था। अब चूँकि उसकी मुलाकात यीशु से हो चुकी थी, वह अपने नाम के मुताबिक जी सकता था। वह केवल पौलस के लिए ही नहीं वरन् अपने मालिक फिलेमोन के लिए भी लाभदायक बन सकता था। सुसमाचार लोगों के जीवन और दिलों में कितना बदलाव ला सकता है। उनेसिमुस उसे सुनाए गए सुसमाचार के द्वारा पुर्णतया बदल चुका था। यीशु ने उसके जीवन को बदला था। जो कभी बिल्कुल अनुपयोगी दास था, सुसमचार की वजह से एक ताकतवर हथियार बन चुका था।

पौलुस ने फिलेमोन से कहा कि वह उनेसिमुस को वापिस उसके पास भेज रहा है। उसने फिलेमोन को याद दिलाया कि वह उनेसिमुस को बहुत चाहता है। (पद 12) फिलेमोन के पास भेजे जाने वाले इस शब्द एक बड़ा प्रभाव मौजूद था। अपने दास के बारे में पौलुस के विचार जानकर, फिलेमोन अवश्य ही उसके साथ व्यवहार करने के बारे में दो बार सोचेगा क्योंकि वह वापिस आ गया था।

हमें यहां यह भी देखना है कि जब पौलुस ने उनेसिमुस को अपने मालिक के पास वापिस भेजा तो वह दासता को माफ नहीं कर रहा था। परंतु वह उसे एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाना चाहता था। उनेसिमुस के लिए अपने मालिक फिलेमोन को

देखना आसान था। परंतु पौलुस निश्चित करना चाहता था कि वे अपने अंतर को ठीक करें। मालिक से पुनर्मिलाप किए बगैर उनेसिमुस प्रभु में अपनी चाल को आगे नहीं बढ़ा सकता था। फिलेमोन भी बिना उसे क्षमा किए स्वयं नहीं बढ़ सकता था। हमें हमारे टूटे रिश्तों की मरम्मत करनी है। हमारे किसी भी भाई या बहिन के प्रति हम क्षमाहीनता न भरे रहें कि परमेश्वर के साथ हमारा चाल बाधित हो जाए।

पौलुस ने उनेसिमुस को फिलेमोन के पास अपने संबंधों को सही करने के लिए वापिस भेजा। उसने फिलेमोन से यह भी कहा कि वह उसके लिए उपयोगी था और उसे अपने पास रखना भी चाहता था। (पद 13) तौभी वह उसे बिना फिलेमोन की अनुमति के रखना नहीं चाहता था। उसने उसे फिलेमोन के पास भेजा दिया कि वह पूरी आजादी के साथ अपना निर्णय ले सके।

पद 15 में, पौलुस ने फिलेमोन को याद दिलाया कि जो कुछ हुआ, उसका एक उद्देश्य था। उनेसिमुस फिलेमोन के पास से भाग गया था परंतु परमेश्वर का एक मकसद था। उनेसिमुस के भागने का परिणाम अब सबके सामने था। वह प्रभु से मिल चुका था और अब फिलेमोन के घराने में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित करने के लिए तैयार था। परमेश्वर को उस पर कार्य करने के लिए कुछ देर तक दूर ले जाना पड़ा। फिलेमोन के पास लौटने वाला अब वही पुराना मनुष्य नहीं था। वह दास के रूप में गया परंतु प्रभु में भाई के रूप मे लौट रहा है। एक ऐसा भाई जिसे पौलुस भी बहुत पसंद करता है।

फिलेमोन को उनेसिमुस का पौलुस के समान स्वागत करना था। प्रेरित ने उनुसिमुस को सुसमाचार में अपना भागिदार समझा। पद 18 में, पौलुस ने वायदा किया कि यदि उनेसिमुस ने कुछ भी गलत किया था या कुछ चुकाना बाकी था तो पौलुस खुद उसे चुकाएगा।

पद 19 से, पौलुस ने यह वायदा अपने हाथों से लिखा। ऐसा करने से, वह अपना वायदा औपचारिक एवं वैध बना रहा था। उसने कानुनी तौर पर वैध तरीके से स्वयं को उनेसिमुस से बाँधा और उसके कर्ज चुकाने का वायदा दिया। उसने फिलेमोन को याद दिलाया कि उस पर पौलुस का कर्ज स्वयं उसका जीवन था (शायद एक इशारा कि फिलेमोन भी पौलुस की सेवकाई के द्वारा प्रभु में आया होगा)। पौलुस से फिलेमोन से सही कदम उठाने की गुहार की। उसे निश्चय था कि फिलेमोन उसके मांगने से भी ज्यादा करेगा। (पद 21) पौलुस से उससे मिलने की भी इच्छा जाहिर की और कहा कि एक अतिथि कक्ष तैयार रखे। उसका विश्वास

था कि इतने सारे संतों की प्रार्थना के फलस्वरूप परमेश्वर उसे अवश्य कैदखाने से छुटकारा दिलाएगा।

पौलुस अपना पत्र इपफास की ओर से अभिवादन देते हुए समाप्त करता है जो उसके साथ कैद में था। (पद 23) वह मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लुका की ओर से नमस्कार भेजता है जो सुसमाचार सुनाने में उसके सहकर्मी थ।

फिलेमोन के प्रति पौलुस की इच्छा थी कि मसीह का अनुग्रह उसकी आत्मा के साथ रहे। इस पत्र में फिलेमोन को पौलुस के द्वारा इसके बारे में बताना सटीक लगता है। यीशु ने अनुग्रह से ही फिलेमोन को क्षमा कर अपनाया था। पौलुस की प्रार्थना है कि फिलेमोन भी यही अनुग्रह अपने दास उनेसिमुस के साथ के संबंध में प्रकट करे।

विचार विमर्श के लिए:

- पौलुस का फिलेमोन के साथ व्यवहार लोगों के बीच के अंतर और स्वयं का मन बदलने की आजादी के बारे में हमें क्या शिक्षा देता है? क्या आपने परमेश्वर पर भरोसे की बजाय, बदलाव को लोगों पर थोंपने की कोशिश की है?
- पौलुस का दास उनेसिमुस के साथ क्या रिश्ता था? यह हमें क्या सिखाता है? वे कौनसे लोग है जिनसे आप प्रेम करने में दिक्कत महसूस करते हैं?
- प्रभु को जानने से आज तक आपके जीवन में क्या बदलाव आया है?
- मसीह में भाई और महिन के साथ मेल मिलाप करना कितना महत्वपूर्ण है? क्षमा नहीं करने वाली आत्मा परमेश्वर के साथ हमारी चाल को कैसे प्रभावित कर सकती है?
- हमें खतरनाक दिखने वाली बातों को भी परमेश्वर अपने मकसद को पूरा करने में कैसे इस्तेमाल कर सकता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से सतानेवालों को माफ करने का अनुग्रह देने की प्रार्थना करें।
- उन सब समयों के लिए प्रभु से क्षमा मांगे जब जब आपने अपने तरीकों को लोगों पर लादने का प्रयास किया था। उनसे निपटते वक्त धैर्य से भरने की प्रार्थना करें।
- प्रभु से आपको भी वही योग्यता देने की प्रार्थना करें कि आप भी प्रभु की

तरह लोगों को देख सकें, उनके सामाजिक स्तर या जाति के आधार पर नही।

- हमारे जीवन में होने वाली हर घटना के लिए उसका धन्यवाद करें कि वह उन्हे हमारी भलाई के इस्तेमाल कर सकता है।

इब्रानियों का परिचय

लेखक:

इस पुस्तक का लेखक ज्ञात नहीं है। कई सारे संभावित लेखकों के सुझाव प्रचलित हैं (सीलास, बरनबास, अपुल्लोस या पौलुस), परंतु इस पुस्तक में इसके लेखक के बारे में कोई इशारा नहीं है। सर्वाधिक सहमत मत है कि पौलुस ने इसे लिखा परंतु हमारे पास इसके अधिक प्रमाण नहीं हैं।

पृष्ठभूमि:

हम समकालीन वृतान्त से समझ सकते हैं कि यह पुस्तक यहूदी मत से मसीहत में आए हुओं के लिए लिखी गई थी। पुस्तक की भाषा साबित करती है कि पाठक यहूदी धर्म और रिवाज से अच्छी तरह से परिचित थे। यह भी स्पष्ट है कि उन्हे इस नए विश्वास को अपनाने के कारण काफी सताव को सहना पड़ा था। (देखें इब्रानियों 10:32-34; 12:2-4; 13:3) जब यह पत्र लिखा गया था तो उस दौरान मसीहत के इन पाठकों ने काफी कुछ सहा था (शायद सताव के कारण) उन्होने अपने आत्मिक जीवन में काई उन्नति नहीं की थी। (5:11-14) वे संसार और इसकी अभिलाषाओं के मोह में पड़ रहे थे और लेखक उन्हे धन के लालच से दूर रहने की चेतावनी देता है। (13:5) कुछ लोग झूठी शिक्षाओं में पड़ रहे थे (13:9), तो कुछ लोगों ने अपने आत्मिक अगुवों को सम्मान देना बंद कर दिया था। (13:17) कुछों ने तो मसीहियों से मिलना भी बंद कर दिया था (10:25) ऐसा प्रतीत होता है कि इस विश्वासियों में एक समान निराशा छाई हुई थी।

इस पत्र में, लेखक अपने पाठकों को प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के बारे में बताता है। वह उन्हे याद दिलाता है वह (मसीह) स्वर्गदुतों, मूसा, और मूसा के द्वारा दी गई व्यवस्था से भी ऊँचा अथवा महान है। वह बताता है कि कैसे मसीह एकदम नई रीति से महायाजक बनकर आया जिनमें नई आज्ञाएँ और नियम थे। संपूर्ण पुराना नियम उसकी और उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों की ओर इशारा करता था। उसके कार्य के द्वारा, उसने पुराने नियम की व्यवस्था से हमें आजाद किया। इस कार्य में महत्वपूर्ण विश्वास है।

पाठकों का यीशु मसीह की तरफ इशारा करने के बाद, लेखक अपनी कही

हुई बातों के प्रकाश में, उन्हे मसीह और उसके कार्य पर भरोसा करने, डटे रहने और उसकी खातिर कष्ट सहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आज के लिए पुस्तक का महत्व:

निराशा के बीच और आत्मिक ललक की कमी में, लेखक ने पाठकों का इशारा यीशु मसीह और उसके कार्य की ओर करता है। ये विश्वासी व्यवस्था और नियमों में अटके पड़े थे पर कोई संतुष्टि नहीं थी। मसीह में एक नया दर्शन और उसका कार्य ही उनकी ललक और समर्पण को पुन: लौटा सकता था। आज भी हमारी यही सच्चाई है। इब्रानियों हमारा ध्यान यीशु की ओर लगाता है। उसे ताजा देखने पर हमें प्रोत्साहन मिलता है और हम विश्वास और ललक को पुन: पाते हैं।

मसीह और मूसा की व्यवस्था पर उसके कार्य की सर्वोच्चता को हमारे सामने रखने के कारण इब्रानियों की पत्री एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह हमें सिखाती है कि वे एक नए क्रम के महायाजक हैं। मसीही अब भी मूसा की व्यवस्था और नियमों के बंधे नहीं हैं। उद्धार का कार्य हमारे नए महायाजक के कार्य आधारित है जिसने पुराने नियम की हर जरूरत को सफलतापूर्वक पूरा किया और हमें दण्ड एवं पापबोध से छुटकारा देता है।

इब्रानियों के विश्वासी जिस समस्या से जूझ रहे थे, वो यह थी कि उन्होने कभी मसीह में मिले नए विश्वास की तरक्की नहीं की थी। वे व्यवस्था और जीने के पुराने तरीकों में फंसे पड़े थे। यह हमें अपने जीवन को देखने की चुनौती देता है कि क्या हम कलवरी क्रूस पर पूरे किए गए मसीह के कार्य की रोशनी में जी रहे हैं।

10

मसीह और स्वर्गदूत

पढ़ें इब्रानियों 1:1-14

इब्रानियों के लेखक पर लंबे समय से बहस चलती रही है और इस भक्तिमय मनन की व्याख्या के दौरान मैं उस बहस में नहीं पड़ना चाहता। पुस्तक का उद्देश्य बिल्कुल साफ है। यह यहूदी मसीहियों के लिए लिखी गई है। इसका उद्देश्य यहूदी मसीहियों को मसीही विश्वास में मूसा की व्यवस्था का स्थान दिखाना है।

लेखक अतीत की बातों को याद दिलाते हुए शुरू करता है कि कैसे प्राचीन समय में परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से बात की। परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं से कई तरीके से बात करता है। कभी परमेश्वर का वचन भविष्यद्वक्ता के स्वपन में आता है, तो कभी सुन सकने वाली आवाज में आता है। तो कभी परमेश्वर तश्वीरों और चिन्हों के द्वारा बात करता है। पुराने और नए, दोनो समयों में भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के दिल की बातों को लोगों तक पहुँचाने के लिए उसके द्वारा शक्तिशाली तरीके से इस्तेमाल किए गए। केवल चुनिंदा लोग ही परमेश्वर के साथ बात कर सकते थे।

परंतु पद 2 में, लेखक अपने पाठकों को बताता है कि इन अंतिम दिनों में, (मसीह के प्रथम आगमन के बाद) परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु के द्वारा बात करना चुना। इस विचार से इब्रानियों का लेखक अभिभूत लगता है। यीशु मसीह के कार्य के द्वारा, हम सब परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ संबंध में प्रवेश कर सकते हैं। हम पुत्र के द्वारा पिता तक सीधे जा सकते हैं। सारी रूकावटें हट चुकी हैं।

मसीह के द्वारा किए गए कार्य का विचार मात्र इस पुस्तक के लेखक के दिल को स्तुति और आराधना से भर देता है। अगले कुछ पदों में, वह इस मसीह की सुंदर तश्वीर प्रस्तुत करता है जिसने परमेश्वर और हमारे बीच की हर बाधा को दूर कर दिया है।

वह सब वस्तुओं का वारिस नियुक्त किया गया है (पद 2)

परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र यीशु मसीह को सब वस्तुओं का वारिस घोषित किया है। यह तश्वीर उस पिता की है जो अपनी संपत्ति अपने पुत्र को देता है। क्रूस के कार्य के द्वारा, यीशु स्वयं के लिए लोगों को लौटा ले आया। उसने पाप और मृत्यु पर जय पाई। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। उसके सामने हर घुटना टिकेगा। परमेश्वर ने उसे सम्माननीय स्थान दिया है। वह सबका प्रभु है। सब कुछ उसके और उसकी इच्छा के सामने समर्पित हो।

उसने संसार की सृष्टि की (पद 2)

ध्यान दें कि परमेश्वर ने जगत को अपने पुत्र यीशु के द्वारा रचा। परमेश्वर का पुत्र होने के नाते, यीशु जगत के निर्माण में शामिल था। यह उसका है और इसमें का सब कुछ पिता और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर किए गए उसके कार्य का कर्जदार है।

परमेश्वर की महिमा का प्रकाश (पद 3)

यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश है। उसने इस धरती पर परमेश्वर का रूप पूरी सिद्धता के साथ प्रकट किया। पद 3 हमें बताता है कि वह परमेश्वर के रूप का सटीक प्रतिनिधि था। दूसरे शब्दों में, उसने ही हमें बिल्कुल सही तरीके से दिखाया कि परमेश्वर कौन है। यदि आप परमेश्वर को जानना चाहते हैं तो आपको केवल यीशु की ओर देखना है। उसने परमेश्वर को हमारे सामने प्रकट किया। वह स्वभाव में परमेश्वर की सटीक तश्वीर है। वह परमेश्वर है।

वह सब चीजों को अपने वचन से थामता है। (पद 3)

प्रभु यीशु को सब चीजों पर प्रभुता ही नहीं दी गई, वह स्वयं सब कुछ अपने वचन की सामर्थ से थामता है। हम सब चीजों में यीशु के कर्जदार हैं। यह हमें आत्मिक और शारीरिक दोनों प्रकार का जीवन देता है। उसके मूँह से निकला शब्द, और समुद्र थम गया। उसने एक शब्द कहा और दुष्टात्माएं भाग खडी हुई। वह हमें जीवन और श्वास देता है। हमारा जीवन उसके हाथों में है। इस संसार का भविष्य उसके हाथों में है। उसके बिना हमारा अस्तित्व नहीं है।

उसने पापों को धोया (पद 3)

हमने देखा कि प्रभु यीशु इस दुनिया में हमें पाप और उसके प्रभाव से छुड़ाने आए। क्रूस पर उसकी मृत्यु ने कीमत चुकाई जो हमें दण्ड से छुटकारा देने और

कानूनी तौर पर आजाद करने के लिए जरूरी था। उसमें हमें पाप और दुष्टता के संक्रमण के क्षमा मिली और साफ किया। प्रभु यीशु के कार्य के द्वारा हम परमेश्वर के सामने साफ और शुद्ध खड़े हो सकते हैं। पाप का मारक धब्बा हटा दिया गया।

वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा (पद 3)

क्रूस पर कार्य को पूरा करने के बाद, प्रभु यीशु अपने पिता के पास जाने के लिए पुनः जीवित हुए। पद 3 में ध्यान दें कि वह स्वर्ग की महिमा में अपने पिता के दाहिन हाथ कैसे जा बैठा। दाहिना हाथ सम्मान का स्थान था। उसे स्वर्ग में सम्मान का स्थान दिया गया क्योंकि उसने पिता के द्वारा दिए गए कार्य को पूरी सिद्धता के साथ पूरा किया था। उसने पाप के लिए शुद्धिकरण उपलब्ध करवाया और अपने लोगों के पाप के परिणामों से आजाद किया। इसीलिए उसे सम्मान के साथ ऊँचा उठाया गया। वह हमारी स्तुति और धन्यवाद के योग्य है।

स्वर्गदूतों से बड़ा (पद 4)

बाइबल समयों के यहूदी के स्वर्गदुतों के बारे में विभिन्न विचार थे। स्वर्गदूतों स्वर्ग के वे प्राणी थे जो परमेश्वर के संग रहते हैं और प्रतिनिधियों के तौर पर धरती पर भेजे जाते थे। कुछ मामलों में, स्वर्गदूतों की आराधना भी हुई है। (कुलु. 2:18 में पौलुस की चेतावनी देखें) इब्रानियों की पुस्तक का लेखक स्वर्गदूतों के प्रति सांस्कृतिक भावना को समझ चुका था। यह यहां अपने पाठकों को याद दिलाता है कि प्रभु यीशु मसीह सब स्वर्गदूतों से बड़ा था। इनमें स्वर्ग के ऊँचे दर्जे वाले स्वर्गदूत भी शामिल हैं। वह अगले पदों में उनके बारे में अधिक जानकारी देता है।

मसीह नाम में स्वर्गदूतों बड़ा है। (पद 4) इसे साबित करने के लिए लेखक पद 5 में भजन संहिता 2:7 से पद उद्धत करता है:

क्योंकि स्वर्गदूतों में से उस ने कब किसी से कहा, कि तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ? और फिर यह, कि मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा?

स्वर्गदूतों की एक अहम भूमिका थी, परमेश्वर ने उन्हें कभी भी पुत्र नहीं पुकारा। यह विशेष सम्मान केवल यीशु को दिया गया। यह हमें बताता है कि परमेश्वर के मन में, प्रभु यीशु का नाम और पद किसी भी स्वर्गदूत से काफी ऊँचा था। उसने उसे पुत्र कहा क्योंकि वह उसके स्वभाव का भागीदार था।

एक और कारण है कि यीशु क्यों स्वर्गदूतों से बड़ा है। पद 6 में, हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को अपने पुत्र यीशु के सामने गिरकर दण्डवत करने का आदेश दिया। यदि स्वर्गदूतों को यीशु की आराधना करने को कहा गया तो निसंदेह, वह उनसे बड़ा और उनकी स्तुति के योग्य है।

जब परमेश्वर ने स्वर्गदूतों की बात कही तो उन्हे हवा या आग की लपट कहा। (पद 7) हवा और आग प्रकृति के ताकतवर तत्व हैं। चक्रवात, तुफान और बवंडर में हम कभी भी हवा पर शक नहीं करते हैं। हमने आग की ध्वंस करने वाली ताकत को भी देखा है। स्वर्गदूतों को आग और हवा का नाम देकर, परमेश्वर दिखाता है कि उनको बड़ी ताकत दी गई है। स्वर्गदूतों के बारे में यह कहकर, लेखक यह कहना जारी रखता है कि यीशु मसीह का सिंहासन सदैव बना रहेगा। धार्मिकता उसके राज्य का राजदण्ड होगी। वह पद 8 में अपने पुत्र को परमेश्वर भी बुलाता है। जबकि स्वर्गदूत ताकतवर हवा और आग है, यीशु सिंहासन पर परमेश्वर की तरह, पूरी धार्मिकता और अधिकार के साथ राज करता हुआ बैठा है। उसके स्वर्गदूत ताकतवर सेवक हैं परंतु यीशु राजा है जिसका राज और सामर्थ सदैव बने रहेंगे।

चूँकि प्रभु यीशु ने धार्मिकता से प्रेम और दुष्टता से बैर किया, परमेश्वर ने उसे सब नामों से ऊँचा किया। उसने उसे आनंद के तेल से अभिषेक दिया। दूसरे शब्दों में, यह सामर्थ और अधिकार का आनंदमयी अभिषेक था। वह अपनी सृष्टि पर सामर्थ और अधिकार के साथ राज करेगा। यीशु मसीह अभिषेक में स्वर्गदूतों से बड़ा था।

संसार के निर्माण के कार्य में यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा है। परमेश्वर होने के नाते, उसका कोई आरंभ नहीं है। उसने धरती की नींव डाली। उसने हमारे ज्ञात संसार की रचा। (पद 10) एक दिन संसार का अंत होगा। यह पुराने कपड़े की तरह फट जाएगा परंतु प्रभु यीशु हमेशा बने रहेंगे। यीशु आदि में थे। उसने संसार को रचा। वह हमेशा बने रहेंगे। कौनसा स्वर्गदूत ऐसा कह सकता है?

प्रभु परमेश्वर ने कभी भी किसी भी स्वर्गदूत को अपने दाहिने बैठने को नहीं कहा। (पद 13) सम्मान का वो स्थान केवल यीशु के लिए आरक्षित था। स्वर्गदूत सेवा करने वाले सेवक थे। उन्हे यीशु ने उन लोगों की सेवा करने को भेजा जो उसके हैं। (पद 14) यीशु पिता के दाहिने हाथ में बैठे। स्वर्गदूत उसके बच्चों की सेवा कर उसके पूरा करने में लगे रहे। हम देखते हैं कि यीशु हर स्वर्गदूत से बड़ा है।

इब्रानियों के लेखक ने इस पुस्तक को प्रभु यीशु के बारे में एक बहुत ही ताकतवर कथन कहते हुए शुरू किया। पाठकों के मन में किसी भी प्रश्न की गुंजाईश ही नहीं रहेगी कि प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। वह स्वर्ग के दूतों से महान और स्तुति के योग्य है।

सोच विचार के लिए:

- परमेश्वर और मनुष्य के बीच की बाधा क्या है? यह परमेश्वर के साथ हमारी बातचीत को कैसे प्रभावित करता है?
- यीशु मसीह परमेश्वर के साथ हमारी बातचीत का दरवाजा कैसे खोलते हैं?
- प्रभु यीशु को स्वीकार कर लेने के बाद, आप परमेश्वर को जानने और उसके साथ बात करने की योग्यता में क्या अंतर महसूस करते हैं?
- मसीह स्वर्गदूतों से महान कैसे हैं?
- स्वर्गदूत और उनकी भूमिकाओं के बारे में हम इस अध्याय में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह पापों की क्षमा के द्वारा परमेश्वर की ओर के मार्ग को खोलने आया।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह कभी नहीं बदलता।
- सेवा करने वाले स्वर्गदूतों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- आपके लिए मसीह ने जो किया और वो जो है, उसके लिए कुछ देर उसकी स्तुति और आराधना करें।

11

मनुष्य और स्वर्गदूत

पढ़ें इब्रानियों 2:1-9

पहले अध्याय में हमनें देखा कि किस प्रकार लेखक यीश मसीह की तुलना यीशु के साथ करता है। लेखक याद दिलाता है कि वे परमेश्वर के शक्तिशाली सेवक हैं परंतु यीशु मसीह राजा और सबके प्रभु हैं। स्वर्गदूत उसके दास हैं। यीशु मसीह स्वर्गदूतों से कहीं बढ़कर है। इस अगले भाग में हम स्वर्गदूतों और मनुष्य के बारे में इस पुस्तक की शिक्षाओं पर ध्यान देंगे।

पहले पद में पाठकों को पढ़ी जाने वाली बात पर ध्यान देने की चुनौती मिलती है कि कहीं वे भटक न जाएँ। हमें इस पद और अध्याय 1 में पढ़ी गई बातों की आपस में तुलना करनी है। अध्याय 1 में हमने देखा कि पिता ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात की परंतु अब वह हमसे प्रभु यीशु मसीह और उसके कार्य के द्वारा बात करता है। वह हमें याद दिलाता है कि यीशु मसीह स्वर्ग के दूतों और अन्य किसी भी संदेशवाहक से बहुत महान है। वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। वह ब्रह्माण्ड का रचियता और हमारा उद्धारकर्ता है। इसी पृष्ठभूमि में हमें इस पद को समझना जरूरी है। मसीह की सर्वोच्चता और सब चीजों के ऊपर उसका कार्य वो सच है जिससे हमें भटकना नहीं चाहिए।

ध्यान दें कि इस सच से भटक जाने की पूरी संभावना हमारे सामने है। याद रखें कि शत्रु हमेशा वचन की स्पष्ट शिक्षाओं के प्रति संदेह को डालने की कोशिश करता रहा है। अदन की वाटिका में उसने यही किया और आज हमारे दिनों में भी करने में लगा है। यदि हम यीशु और उसके वचन की स्पष्ट शिक्षाओं से भटकना नहीं चाहते हैं तो हमें पूरा ध्यान देना पड़ेगा। शत्रु बड़े ही उचित तरीके से हमारे पास आकर हमें भटका सकता है। अक्सर हमें पता भी चल पाता है कि कब उसने आकर सच की महत्वपूर्ण कुंजियों से हमारा समझौता करवा दिया। हमें सदैव सचेत रहना है। सच के ऊपर हमेशा युद्ध बना रहता है। हमें हमेशा तैयार और चौकस रहने, पूरा ध्यान देने को कहा गया है जिससे कि दुश्मन हमें हमारी सशक्त नींव पर

से धकेल न दे।

पद 2 और 3 में, लेखक पाठकों को याद दिलाता है कि यदि स्वर्गदूतों के द्वारा बोला गया संदेश बंधनपूर्ण था और हर अनाज्ञाकारिता को सजा दी गई, तो अगर हम परमेश्वर के वचन को ही नकार दे तो सजा कितनी बड़ी होगी। संपूर्ण बाइबल में हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों को चेतावनी देने के लिए स्वर्गदूतों को भेजता है। उदाहरण के तौर पर, सदोम का संदेश लूत को दिया जाता है। (उत्पति 19 देखें) स्वर्गदूतों ने लूत से कहा कि परमेश्वर शहर को नाश करने जा रहा है। यदि लूत इस संदेश को नजरअंदाज कर देता तो क्या होता? एक दूसरे उदाहरण में, स्वर्गदूत यूसुफ को बताने जाता है कि राजा शिशु यीशु को मारने की फिराक में है। (मति 2:13) उसे नगर छोड़ने को कहा गया। क्या होता यदि यूसुफ इस वचन को अनसुना कर देता? स्वर्गदूत के एक संदेश को गंभीर रूप से लिया गया। यदि यह सच है, तो प्रभु यीशु के कहे गए संदेशों अथवा शब्दों को नजरअंदाज करना कितना खतरनाक होगा जो स्वयं स्वर्गदूतों से कितना महान है।

पद 3 में, लेखक याद दिलाता है कि उद्धार का संदेश हमारे पास प्रभु यीशु मसीह के कार्य और सेवकाई के द्वार पहुँचा। यदि स्वर्गदूतों के संदेश को अनसुना करना एक जीवन तक को नाश कर सकता था तो हमारे लिए जरूरी उद्धार के बारे में प्रभु यीशु मसीह के संदेश को कितना महत्व दिया जाना आवश्यक है।

यीशु मसीह के द्वारा हमारे पास लाया गया उद्धार का संदेश इसे सुननेवालों के द्वारा प्रमाणित भी किया गया। (पद 3) कुछ लोगों ने इस संदेश को व्यक्तिगत तौर पर सुना ही नही, वरन् उद्धार के उस सच की गवाही भी दी। उनके जीवन में परिवर्तन नजर आया था। वे उसके बोले गए संदेश के गवाह थे।

उद्धार के इस संदेश को परमेश्वर के चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा भी प्रमाणित किया गया। हर सुनने वाले के लिए परमेश्वर ने, यीशु मसीह के द्वारा कहे गए हर संदेश को यीशु और उसके चेलों के चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा साबित किया। ये सारे चिन्ह और चमत्कार यीशु के द्वारा दिए गए उद्धार के संदेश को साबित करने के लिए ही थे। उन चिन्हों ने साबित किया कि वह परमेश्वर की ओर से था और उन्हे गंभीर से लेना जरूरी था।

मसीह के द्वारा लाए गए संदेश के बारे में कोई संदेह हो ही नहीं सकता। इसे कहा गया और हर सुनने वाले ने इसे प्रमाणित किया। इसे इसका प्रचार करने वाले लोगों के द्वारा दिखाए गए चिन्हों और चमत्कारों ने भी साबित किया। परमेश्वर ने

अपने संदेश को प्रमाणिक करने के लिए हर संभव कार्य किया। आज भी वो ऐसा ही कर रहे हैं। वह अपने सेवकों को प्रचार करने और उसकी सामर्थ को प्रकट करने की बुलाहट देने में लगे हैं। उसने इसे हमारे लिए अपने वचन में सुरक्षित रखा है। अनगिनत जीवन बदलते हैं। नजरअंदाज करने का मतलब उस संदेश को नजरअंदाज करना होगा जिसे परमेश्वर ने हर बार सच साबित किया है।

मसीह के द्वारा हमारे पास पहुँचे वचन के सच और इसकी गंभीरता के बारे में पाठकों को याद दिलाते हुए, लेखक पद 5 में उन लोगों के बारे में कहना जारी रखता है जिनके पास यह वचन पहुँचा। वचन स्वर्ग के दूतों के पास नहीं वरन् मेरे और आपके जैसे मनुष्यों के पास पहुँचा। मनुष्यों को दिया गया उद्धार का वचन पाप की क्षमा और भविष्य में मसीह के साथ राज करने का संदेश था। उसने स्पष्ट किया कि मसीह के साथ राज करने यह वायदा स्वर्गदूतों को नहीं परंतु मनुष्यों को मिला है। मनुष्य को परमेश्वर के दिल में एक विशेष स्थान मिला है। वह उसके कार्य और उसके द्वारा लाए गए उद्धार के संदेश का केन्द्र बिन्दु है। हम मनुष्यों के लिए ही प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर आए। इन्ही मनुष्यों की सेवा में परमेश्वर स्वर्गदूतों को भेजता है।

परमेश्वर का मनुष्यों को केन्द्रबिन्दु बनाने का यह तथ्य अक्सर हमारी समझ के परे है। भजनकार भी इस विचार पर चकित है कि मनुष्य परमेश्वर के दिल में केन्द्र स्थान पाए है। भजन संहिता 8:4-6 में से लिखते हुए, इब्रानियों की पुस्तक का लेखक पद 6-8 में लिखता है:

तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।

उस बात पर ध्यान दें जो लेखक पाठकों को बताना चाहता है। वह इस तथ्य से जूझ रहा है कि क्या परमेश्वर मनुष्यों पर ध्यान देगा या उनकी संभाल करेगा। हम कौन हैं कि परमेश्वर हमारी इस प्रकार सुधि ले। भजनकार इस बात से चकित है कि मनुष्य में ऐसा क्या है कि परमेश्वर उसे इतना सम्मान देता है। वह इस बात से अवाक है कि परमेश्वर पापी स्त्री एवं पुरूषों की संभाल करता है।

लेखक चकित है कि मनुष्य में ऐसा क्या है कि परमेश्वर उसकी इतनी संभाल करता है। वह चकित है कि परमेश्वर किसी पापी व्यक्ति की परवाह कैसे कर

सकता है। उनको इतना बेशकीमती उद्धार दिया जाना, वे अवश्य ही परमेश्वर के विशेष होंगे। वे उसकी नजर में बहुमूल्य होंगे तभी तो वो उनके लिए मरने को तैयार है। हम कभी नहीं समझ पाएँगे कि परमेश्वर हममें क्या देखता है परंतु हमें परमेश्वर के द्वारा हमारे जीवन को दिए गए मूल्य को अवश्य समझना है।

भजनकार के मुताबिक, मनुष्य स्वर्गदूतों से थोड़ा सा नीचे रचा गया। (पद 7) इसका मतलब यह नहीं है कि वह कम महत्वपूर्ण या कम मूल्य का है। थोड़ा नीचे रचे गए के अर्थ से भजनकार हमें कमजोर मानुषिकता की याद दिलाता है। हमारे शरीर थक और हार जाते हैं। एक दिन ये शरीर मर जाएँगे। हमारी सीमाएँ हैं, स्वर्गदूतों की नहीं क्योंकि वे स्वर्ग के प्राणी हैं। इतना कहने के बावजूद, हमें यह भी समझना है कि जब स्वर्ग के दूत गिरे (शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ), उन्हे उसी क्षण नरक का दण्ड दे दिया गया। परंतु जब मनुष्य गिरा, प्रभु परमेश्वर ने अपने पुत्र को उसके लिए मरने भेजा। क्या आप परमेश्वर की संतान होने के आदर और उस प्रेम को समझ पा रहे हैं जिसे स्वर्ग के दूत तक अनुभव नहीं कर पा रहे थे? परमेश्वर ने स्वर्ग से गिरे हुए दूतों के लिए उद्धार का प्रबंध नहीं किया।

प्रभु ने कमजोर और दुर्बल मनुष्य को महिमा और आदर का मुकुट पहनाया। वह उनके लिए उद्धार का प्रबंध करने आया। वह उनमें पवित्र आत्मा डालने आया। उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया। उसने उन्हे पृथ्वी पर अधिकार दिया। वह हमें उद्धार का संदेश देकर अपने नाम के साथ भेजता है।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि ऐसा कुछ भी बचा नहीं था जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के अधिकार तले नहीं दिया हो। (पद 8) जबकि मनुष्य परमेश्वर के अधीन है, स्वर्गदूतों को उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया गया है। पृथ्वी और इसमें का सब कुछ मनुष्य को राज करने और अपनी जरूरतों के अनुसार उपयोग करने के लिए दिया गया। (उत्पति 1:28) लेकिन, पाप के कारण सब कुछ हमारे अधीन नहीं है। रोग, बिमारियाँ और प्राकृतिक अपदाएँ इस संसार के पाप का परिणाम हैं। जिस घड़ी पाप ने धरती में प्रवेश किया, इसकी वजह से नाश, बिमारी, दर्द और दुख उत्पन्न होने लगे। मनुष्य के स्वभाव ने भी इस संसार से बदला लिया। मानव स्वभाव से निकलने वाली हत्या, प्रताड़ना, चोरी और हर प्रकार के अपराधों ने हर तरफ दर्द और कष्ट को पैदा किया। पाप से भरी इस धरती पर, अब भी कई सारी ऐसी चीजे हैं जिन पर अधिकार पाना और अपने पैरों तले लाना अभी बाकी है।

यद्यपि वर्तमान में सब कुछ हमारे अधीन नहीं है, हमारे संग मसीह का ढ़ाढ़स है। (पद 9 देखें) मसीह को भी हमारी ही तरह स्वर्गदूतों से थोड़ा नीचे रचा गया। हमारी ही तरह वह इस पृथ्वी पर जिया और चला। हमारे समान, वह भी और उससे भी ज्यादा सताया गया। परंतु अब वह महिमा का मुकुअ पहने है। उसने मृत्यु सही। उसने हमारे सब पापों को अपने साथ कब्र में ले जाने के लिए ऐसा किया। वह हमारी सजा को चुकाने के लिए मरा। उसने मृत्यु और पाप पर जय पाई। उसके मरने से, हम सदा के लिए जी सकते हैं। पाप और उसके सारे प्रभाव पर पूरी जय पा ली जाएगी। मृत्यु, रोग और भ्रष्टाचार, यद्यपि हमारे वश में नहीं हैं, एक दिन खत्म कर दिए जाएँगे और हम प्रभु की उपस्थिति में सदा सर्वदा वास करेंगे।

इस पद्यांश में हम परमेश्वर के द्वारा हमारे जीवन को दिए गए महत्व को देखते हैं। वह सृष्टि में हमें सम्मान का स्थान देता है। वह चाहता है कि हम उसके पास आएँ और उसके समान बनें। वाह! क्या सौभाग्य है कि हम उसकी संतान और उसके अद्‌भुत प्रेम के लायक बनाए गए हैं।

सोच विचार के लिए:

- प्रभु यीशु मसीह कौनसा संदेश देने आए?
- दुश्मन कैसे कोशिश करता है कि हम परमेश्वर के सच पर सवाल उठाएँ? वह आपके समाज और कलीसिया में किस प्रकार की कोशिश में लगा है?
- मसीह हमें जो संदेश देने आए, उसका उत्तर देना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है? वह संदेश हम पर किस प्रकार प्रमाणित किया गया?
- परमेश्वर आपको क्या मूल्य देता है? आप उसके लिए कितना महत्वपूर्ण हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने मसीह के उस संदेश को समझने में हमारी मदद की जो वह हमें देने आया था।
- हमसे प्रेम करने और हमें अपने ध्यान का केन्द्रबिन्दु बनाने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- प्रभ से मदद माँगे कि आप भी उसे अपने ध्यान का केन्द्रबिन्दु बना सकें।
- पाप और मृत्यु पर जय पाने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें। मदद माँगें कि वह आपको इस विजय में चलने का साहस और अनुग्रह प्रदान करे।

12

मसीह के भाई

इब्रानियों 2:10-18 पढ़ें

हम इस अध्याय में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच रिश्ते के बारे में देख रहे थे। ये एक ऐसा रिश्ता था जिसका स्वर्गदूतों ने भी अनुभव नहीं किया था। यद्यपि उन्हें मनुष्यों से थोड़ा ऊँचा बनाया गया, उन्हें यह सौभाग्य नहीं मिला। लेखक इसी बिन्दु के बारे में अध्याय के बाकी हिस्से में अधिक जानकारी देता है।

पद 7 और 8 में हमें याद दिलाया गया कि प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों को महिमा का मुकुट पहनाया और सब कुछ उनके पाँवों तले कर दिया। उसने महिमा के सामने की रूकावट को दूर कर ऐसा किया। उसने अपने पुत्र को भेजा, हमारे पापों का दण्ड चुकाया। यीशु ने मानव देह धरी और हमारे बीच वास किया। वह हमारी ही तरह परखा और सताया गया। उसने हर रूकावट का सामना कर, उस पर जय पाई ताकि हम विश्वास के द्वारा उसके पास आकर पिता के संग उसके उद्धार के आनंद और हमारे अधिकार को जान सकें।

पद 10 में ध्यान दें कि हमारे उद्धार के कर्ता (प्रभु यीशु) सताव के द्वारा सिद्ध बने। पहली नजर में, यह पद समझने में कठिन प्रतीत होता है। परमेश्वर होने के नाते, प्रभु यीशु सिद्ध थे। तौभी, याद रखें, मनुष्य होने के नाते, उसे भी हमारी तरह सभी परीक्षाओं को सहना पड़ा। बच्चे के रूप में, उसे हमारी तरह सीखना और बढ़ना था। जैसे जैसे वो बढ़ता गया, उसे शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक रूप में विकसित होना था। उसने अपने स्वर्ग के पिता के बारे में जानना और उसके प्रेम में बढ़ना था। उसे अपनी उम्र के किसी भी बच्चे की ही तरह ये सब कुछ सीखना था। परमेश्वर ने पृथ्वी पर की उन चीजों के द्वारा अपने पुत्र को विकसित करना चुना। उसने परीक्षाओं और जाँचों की अनुमति दी जैसे वो हमारे लिए करता है।

धरती पर आकर, हमारी तरह दर्द और सताव को सहकर, प्रभु यीशु ने हमारे साथ अपनी सिद्ध पहचान बनाई। वह वचन के हर भाव में हमारा भाई बना। उसमें

हमारे समान लहू और शरीर था। हमारी ही तरह उसे भूख और प्यास लगी। वह भी दर्द और निराशा से होकर गुजरा। उसे भी हमारी ही तरह सीखना और शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक तौर पर विकसित होना पड़ा। आज वो स्वर्ग में हैं तौभी हमें भाई बहिन कहने में वो नहीं झिझकते। हम उसके परिवार का हिस्सा हैं।

इस बात को समझने के लिए, लेखक पुराने नियम के लेखों में से उल्लेख करता है। वे यीशु मसीह के इस दुनिया में आने से पहले लिखे गए वचन हैं, वे भविष्यद्धाणीय लेख हैं जो मसीहा प्रभु यीशु मसीह के लोगों के साथ के संबंध को दिखाते हैं। लेखक यहूदी पाठकों को यह दिखाता है कि उसके द्वारा बताया गया सब कुछ पुराने नियम के ठोस प्रमाणों पर आधारित है।

पहला पद्यांश भजन संहिता 22:22 में है और इसे पद 12 में लिखा गया है:

पर कहता है, "मैं तुम्हारा नाम मेरे भाईयों को सुनाऊँगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा।"

भजनकार के द्वारा, प्रभु कहते हैं कि वह पिता के सामने 'अपने भाईयों' के नाम को घोषित करेंगे। मसीहा के भाई कैसे हो सकते हैं? यहूदी मन में, परमेश्वर के भाई होना ईशनिन्दा के समान था। हमारे लिए भाईयों के होने का केवल एक ही तरीका हो सकता है कि वह मानव देह धरे और हमारी प्रकृति को पहने। लेखक ने पाठकों के सामने साबित कर दिया कि यीशु हमारे समान मनुष्य बने।

पद 13 का दूसरा पद्यांश यशायाह 8:17-18 से लिया गया है:

और फिर यह, "कि मैं उस पर भरोसा रखूँगा" और फिर यह कि देख, "मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।"

पद 13 में उद्धत यशायाह के इस कथन में हमें दो चीजें देखनी हैं। पहली, लेखक कैसे अपना भरोसा परमेश्वर पर डालने की बात कह रहा है। हम इस पद्यांश यीशु की बात कर रहे थे जिसने मनुष्य का रूप धरा और हमारी तरह सताया गया। वो कैसे इस सताव को सहने में काबिल हुए? उसने यह अपने पिता परमेश्वर पर भरोसा रख कर किया। हमें याद दिलाया गया है कि कैसे मसीह ने हमारे सताव में समानता दिखाई, परमेश्वर, अपने पिता पर भरोसा रखा। फिर, लेखक पाठकों को दिखाना चाहता है कि प्रभु यीशु मसीह ने पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के आधार पर सताव सहा।

यशायाह के इस उद्धरण में हम दूसरा बिन्दु देख सकते हैं कि उसके सताव के द्वारा क्या पूरा हुआ। सताव के पूरे होते ही प्रभु यीशु अपने पिता से कह सकते थे: "मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।" यहाँ मैं एक पत्नी की तश्वीर देख सकता हूँ, जो शिशु जन्म के पूरे दर्द में से गुजरी है, और अब अपनी बाँहों अपनी संतान को लिए हुए पिता के साथ उसका परिचय करवा रही है, "यह है वो लड़के जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।"

प्रभु ने ठीक ऐसा ही किया। वह इस धरती पर आया, क्रूस पर दुख सहा और अपने सताव के द्वारा पिता की दी गई सब संतानों को जीवन दिया। मसीह के कार्य को स्वीकार करने वाले उसकी संतान बनते हैं। उनके लिए सताव सहने के बाद उन्हे पिता के समक्ष पेश करने में मसीह प्रसन्न है। पुराने नियम के इस उल्लेख का पूरा तात्पर्य पाठकों को दिखाना है कि भविष्यवाणियों में वर्णित मसीहा के रूप में वह हमें भाई बुलाने में गर्व महसूस करते हैं। जैसे एक माता अपने बच्चे को अपने मित्रों और चहेतों के सामने पेश करता है, यीशु गर्व के साथ अपने भाईयों बहनों को बुलाता है।

हमें परमेश्वर की संतान बनाने के लिए यीशु के द्वारा चुकाई गई कीमत भी याद दिलाई जाती है। यीशु को मनुष्य का रूप धरना पड़ा और भयानक मौत सहनी पड़ी। उस शरीर में यीशु ने हमारे बड़े दुश्मन शैतान और मृत्यु का सामना किया। यद्यपि वे सब कमजोरियों और परीक्षाओं से परिचित थे, हम जानते हैं कि यीशु ने शैतान और कब्र पर जय पाकर हमें उनके प्रभाव से मुक्त किया।

अदन की वाटिका में शैतान के हव्वा को बहकाने से लेकर, हम सब मृत्यु की सामर्थ तले दबे पड़े थे। यीशु ने हमारे ऊपर से मृत्यु की सामर्थ को तोड़ डाला। उसने मृत्यु के भय और आने वाले न्याय से हमें आजाद किया। अब हम ढ़ाढ़स के साथ कब्र का सामना कर सकते हैं क्योंकि वह अंत नहीं है। यह कब्र के परे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन की आशा है। अब परमेश्वर की संतानों के लिए मृत्यु परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की सीढ़ी है। विश्वासियों में न्याय का भय नहीं है। इसके आतंक को मिटा दिया गया है क्योंकि पाप पर जय पाकर उसे क्षमा कर दिया गया है।

जब इब्रानियों का लेखक प्रभु यीशु के द्वारा मनुष्य के लिए किए गए कार्यों को देखता है तो चकित रह जाता है। वह पद 16 में अपने पाठकों को याद दिलाता है कि यीशु ने ऐसा कभी भी स्वर्गदूतों के लिए नहीं किया। प्रभु ने कभी भी स्वर्गदूतों

के समान बनने के लिए अपनी महिमा को नहीं छोड़ा। शैतान के साथ स्वर्ग में से गिरने वाले सारे स्वर्गदूत हमेशा के लिए नाश हो चुके हैं। (यहुदा 6 देखें) प्रभु ने उनहे पाप में ही छोड़ दिया। वह उन्हे बचाने नहीं आया। उसके भाई और संतान बनने का हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है। हमारे प्रति कितना अद्‌भुत प्रेम दिखाया कि हमारे लिए उसने सब कुछ छोड़ दिया, हमें भाई और बहन कहा एवं अनंत नाश से हमें बचाया।

पद 17 कहता है कि यीशु हर तरीके में हमारे समान बना ताकि हमारे साथ सिद्ध पहचान बना सके। हमारी तरह उसने सताव सहा कि वह हमारे लिए दयालु महायाजक बना। अक्सर लोगों के साथ पहचान बनाने का एकमात्र तरीका उनकी तरह बातों को करना या सहना होता है। जब हम किसी दुख को सहते हैं तभी उसी दुख को सहने वाले लोगों के असली दर्द को सम समझ पाते हैं। यीशु हमें समझते हैं क्योंकि उसने वह सहा जो हम सहते हैं। वह सताव और जाँच में हमारा भाई है। वह दयालु है और हमें समझता है। उसने यह हमारे द्वारा सही जाने वाली बातों को स्वयं सहकर सीखा।

मसीह के सताव और मृत्यु का एक और मकसद था। यह हमारे पापों का प्रायश्चित लेकर आया। (पद 17) दूसरे शब्दों में, इसने हमारे पापों की कानुनी तौर पर अनिवार्य सजा को चुकाया और परमेश्वर के साथ सही मेल की ओर लौटा लाया। पुराने नियम में, पापों को एक मेम्ने या बैल के लहू के द्वारा ढ़ाँपा जाता था। चढ़ाए जाने वाले मेम्ने या बैल में कोई दोष नहीं दिखना चाहिए था। मनुष्य बनने और पिता के सामने सिद्ध जीवन जीने के कारण यीशु हमारे पापों के सिद्ध बलिदान थे। पापी मनुष्य होने के कारण हममें से कोई भी स्वीकार्य बलिदान नहीं था। केवल मनुष्य के सिद्ध पुत्र का लहू ही न्याय की माँग को पूरी कर पाप के दण्ड को चुका सकता था। हमारी तरह बनकर यीशु ने सिद्ध बलिदान के रूप में प्रायश्चित किया और हमें पिता की ओर लौटा ले आया।

उसके सताव ने हमें परमेश्वर के साथ मेल कराया। यह हमें दिखाता है कि वह हमारे सताव और जाँचों में हमारे साथ पहचान बना सकता है। आज आप जो भी सह रहे हैं, प्रभु यीशु ने सब कुछ सह रखा है। उसने केवल सताव का सामना ही नहीं किया वरन् उस पर जय भी पाई। वह परीक्षा और जाँच को हराकर उस पर जय पाना जानते हैं। और वो हमारे माँगने पर हमारी मदद करना भी जानते हैं। वह आपको अपना भाई और बहन मानते हैं। आप निश्चित तौर उससे मदद पा सकते

हैं जिससे कि आप पिता की महिमा के लिए अपना जीवन जिएँ।

सोच विचार के लिए:

- इब्रानियों के लेखक का तात्पर्य क्या है जब वो कहता है कि हमारे उद्धार के कर्ता को सिद्ध होना जरूरी था?
- प्रभु यीशु के द्वारा अपनी दैविकता अथवा महिमा को छोड़ अथवा उतार देने का मतलब क्या है?
- हम किस प्रकार यीशु को अपना भाई कह सकते हैं?
- यीशु मसीह ने मृत्यु के आतंक और सामर्थ को कैसे दूर किया?
- प्रभु के साथ विश्वासियों का रिश्ता प्रभु के साथ स्वर्गदूतों के रिश्ते से किस प्रकार भिन्न है?

प्रार्थना के लिए:

- अपने भाई और बहन के रूप में हमें दिए गए प्रेम के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- उसका धन्यवाद करें क्योंकि वह हर तरीके में हमारे साथ पहचान बना सकता है और उसने हमारी ही तरह सताव और दर्द को सहा।
- उसका धन्यवाद करें कि उसने हमारे पापों की सजा चुकाकर मृत्यु के आतंक को समाप्त कर डाला।
- आज हमारे साथ वो जो संबंध चाहता है उसे अच्छी तरह से समझने में उसकी मदद माँगें।
- हमारे उद्धार के लिए उसने जो महान कीमत चुकाई, उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करें।

13

मूसा से महान

इब्रानियों 3:1-6 पढ़ें

अध्याय 2 के अंतिम भाग में, हमने देखा कि कैसे परमेश्वर ने मनुष्य को महिमा और आदर का मुकुट पहनाया। हमें बताया गया कि किस प्रकार यीशु ने मनुष्य रूप धरा, हमारे हर दर्द और परीक्षा में हमारे साथ पहचान बनाई। हमारे पापों का दण्ड चुकाने के लिए पूरे मन से क्रूस पर अपनी जान दी। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को पद 1 में बताता है कि उसकी स्वर्गीय बुलाहट में भागीदार होने वाले अपने विचारों को प्रभु यीशु पर केन्द्रित करें। दूसरे शब्दों में, उन्हे प्रभु यीशु को अपने विचारों और कार्यों का केन्द्रबिन्दु बनाना है। हमारे लिए उसके द्वारा किए गए कार्य के लिए, हमें उसे अपने जीवन का प्रभु बनाना है। हमें स्वयं को उसके और उसके उद्देश्यों के सामने समर्पित करना है।

पद 1 में ध्यान दें कि यीशु प्रेरित और महायाजक हैं जिसे हम विश्वासी के रूप में अंगिकार करते हैं। प्रेरितों को आरंभिक कलीसिया के संस्थापकों ने विशेष रूप से चुना। वे नई सीमाओं को खोलने, मसीही जीवन और सेवा को दूसरों में स्थापित करने के लिए परमेश्वर के द्वारा चुने गए औजार थे। यीशु ने प्रेरित की भूमिका निभाई जिसमें उसने आगे आकर शत्रु की सामर्थ को तोड़ा। वही परमेश्वर के अद्भुत राज्य के कर्ता एवं मुखिया थे।

प्रभु यीशु केवल प्रेरित ही नही, महायाजक भी थे। महायाजक परमेश्वर और लोगों के बीच में खड़ा रहने वाला व्यक्ति होता है। वही हर दिन परमेश्वर के सामने बलिदान चढ़ाता है। वास्तविक तौर पर, प्रभु यीशु ने यही हमारे लिए किया। उसने पापों का पूरा दण्ड चुकाने के लिए सिद्ध बलिदान के रूप में अपने जीवन को हमारे लिए चढ़ाया। उसने परमेश्वर और मनुष्य के बीच की खाई को खत्म किया और हमें पिता की उपस्थिति में ले आया। इसी यीशु का हम अंगिकार करते और अपने सभी कार्यों में स्थान देते हैं। प्रेरित के रूप में उसने पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित किया। महायाजक के रूप में परमेश्वर और मनुष्य के बीच की दूरी को समाप्त किया।

पद 2 में, इब्रानियों का पाठकों को लेखक याद दिलाता है कि प्रभु यीशु मसीह नियुक्त करने वाले के प्रति विश्वासयोग्य था, जैसे मूसा परमेश्वर के भवन में विश्वासयोग्य रहा। यीशु ने विश्वासयोग्यता के साथ पिता की सेवा की। मृत्यु भी उसे विश्वासयोग्य रहने से रोक नहीं पाई। पूरे मन से उसने अपना जीवन पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए सौंप दिया।

मूसा व्यवस्था को देने में परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य था। परंतु यीशु मूसा से भी अधिक सम्मान के योग्य थे। (पद 3) हमने देखा कि यीशु स्वर्गदूतों से महान हैं। इब्रानियों का लेखक याद दिलाता है कि यीशु व्यवस्था देने वाले मूसा से भी बड़ा था।

यहूदी मन में मूसा का स्थान बहुत बड़ा है। व्यवस्था देने के कारण उसका स्थान सम्माननीय था। उसने परमेश्वर की महिमा को देखा था और अपने जीवन में परमेश्वर के द्वारा सामर्थ के साथ उपयोग किया गया था। मूसा के द्वारा परमेश्वर के लोगों ने मिस्र की बंधुवाई से छुटकारा पाया। इस व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर ने कई सारे चिन्ह और चमत्कार किए। इब्रानियों के लेखक ने पाठकों को बताया, इसके बावजूद, मूसा से कहीं अधिक महान थे, यीशु मसीह।

हमें यह समझना है कि जब इब्रानियों का लेखक मूसा की बात करता है तो वह मूसा की सेवकाई में बारे में भी बताता है। मूसा परमेश्वर की व्यवस्था लाया। प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के उद्धार के लिए क्रूस पर बलिदान के द्वारा परमेश्वर की क्षमा लाए। मूसा के द्वारा दी गई व्यवस्था अच्छी थी, परंतु वह हमारी पाप समस्या का अंतिम हल नहीं थी। न तो मूसा की व्यवस्था किसी आत्मा को बचा सकती थी, और न ही यह दुष्ट हृदय को बदल सकती थी। यीशु संपूर्ण उद्धार देने आए। वे केवल बाहरी तौर पर बदलने नही, परंतु दिल को भी बदलने आए।

यीशु मूसा से भी अधिक सम्मान के योग्य थे। केवल इसलिए नहीं कि वे कौन थे, इस आधर पर भी उसने क्या किया। इब्रानियों का लेखक पद 3 में इस बात को उदाहरण के द्वारा समझाता है जहाँ वह एक घर और घर को बनाने वाले की तुलना करता है। अधिक सम्मान के कौन योग्य है, घर या घर को बनाने वाला? घर चाहे कितना भी संदर क्यों न हो, यह एक बनाने वाले के हाथों की रचना है। बनानेवाला ही सम्मान और आदर का हकदार है। इसी तरह, हमारे उद्धार के कर्ता प्रभु यीशु उद्धार के इस अद्‌भुत कार्य के लिए सर्व सम्मान और आदर के योग्य हैं। उन्होने वह किया जो मूसा व्यवस्था के द्वारा नहीं कर पाया। उसने परमेश्वर और मनुष्य के बीच की दरार को खत्म किया।

मूसा परमेश्वर के घर में विश्वासयोग्य दास था। (पद 5) रूकावटों के बावजूद उसने सेवा की। उसे हमेशा सराहना नहीं मिलती थी। उसकी सामर्थ और बुलाहट से ईर्ष्या करने वाले वहाँ मौजूद थे। उसने कितने ही सालों तक लोगों के कुड़कुड़ाने और शिकायत को चुना। कुछ लोग तो उसे मार देना चाहते थे। भविष्यद्वक्ता होने के नाते, उसने परमेश्वर के द्वारा कही गई बातों को विश्वासयोग्यता के साथ लोगों तक पहुँचाया। जबकि मूसा परमेश्वर के घर में दास के रूप में विश्वासयोग्य था, यीशु पुत्र के रूप में विश्वासयोग्य था। पुत्र होने के नाते, वह पूरे घर के ऊपर नियुक्त था। मूसा दास था परंतु यीशु मालिक थे। यीशु परमेश्वर के घर में अपने स्थान के कारण, मूसा से बड़े और महान थे।

पद 6 में ध्यान दें कि इब्रानियों के पाठक परमेश्वर के घर के भाग थे यदि वे धीरज और आशा को जकड़े रहते हैं। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है। कुछ लोग इसकी व्याख्या कर सकते हैं कि विश्वासी यदि आशा को जकड़े नहीं रखें तो वे अपने उद्धार को खो सकते हैं। परंतु हमें यह समझना है कि यह भाग उद्धार के खोने के बारे में नहीं बात कर रहा है। यह तो बता रहा है, हम कैसे जानें कि हम परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। नए नियम में, यीशु ने स्पष्ट तौर पर सिखाया है कि उसे प्रभु कहने वाले सभी उसके लोग नहीं हैं। हमारी आज की कलीसियाएँ स्वयं को विश्वासी कहने वाले कई लोगों से भरी पड़ी हैं। परंतु प्रभु यीशु कहने वाले सभी सच्चे विश्वासी नहीं हैं।

आप कैसे जानेंगे कि सच्चा विश्वासी कौन है? इब्रानियों का लेखक स्पष्ट करता है कि सच्चे विश्वासी की एक पहचान यह है कि वह अपने धीरज और आशा को जकड़े रहता है। दूसरे शब्दों में, सच्चे विश्वासी डटे रहेंगे। उनके दिलों को परमेश्वर ने छुआ है। वे आंतरिक बदलाव पाए हुए लोग हैं। वे एकमात्र आशा के रूप में प्रभु की ओर ताकते हैं। वे संसार की झूठी आशाओं में भटक नहीं जाते। सच्चा विश्वासी वह है जो अंत तक विश्वासयोग्य रहे। स्वयं को विश्वासी कहने वाले अनेक हैं, परंतु जैसे ही कोई सताव आता है, वे भाग खड़े होते हैं।

जब मूसा ने पुराने नियम में लोगों को अगुवाई दी तो वह परमेश्वर के घर में मात्र एक दास था। परंतु यीशु मसीह घर का मुखिया है। उसने शत्रु पर जय पाने के लिए अपने पूरे मन के साथ अपना जीवन सौंप दिया। ऐसा मूसा नहीं कर सकता था। प्रभु के इस उद्धार को जानने वाले, उसे मिलने वाली आशा को थामे रहें और धीरजवान रहें। यीशु उद्धार लेकर आए। उसमें विजय है। हम अपना भरोसा मूसा या उसके द्वारा लाई गई व्यवस्था पर न डालें। मात्र यीशु ही हमारा भरोसा है।

विचार विमर्श के लिए:

- यीशु मसीह पर ध्यान करने या अपने विचारों को उस पर केन्द्रित करने का मतलब क्या है? हमारे जीवन और कार्य को कैसे प्रभावित करता है?
- यीशु मसीह हमारे प्रेरित और महायाजक कैसे हैं?
- यीशु मूसा से महान कैसे हैं? उसके कार्य मूसा के कार्य से महान क्यों हैं?
- मसीह ने हमें कौनसी आशा दी है? क्या अपने अपना ध्यान उस पर केन्द्रित किया है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह हमें ऐसा उद्धार देने आया जो मूसा की व्यवस्था कभी नहीं दे सकती थी।
- उसके पास आने से आपके दिल और जीवन में आए बदलाव के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- उसकी उपस्थिति में अनंत जीवन बिताने की उसकी आशा के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- प्रभु से माँगें कि अपने जीवन और सब कार्यों में अपने विचारों को उस पर केन्द्रित करने में आपकी मदद करे।
- प्रभु से अपनी आत्मिक चाल में धीरज धरने और डटे रहने की सामर्थ माँगें। उसका धन्यवाद करें कि जब हम अपना ध्यान उस पर केन्द्रित करते हैं, तो हम डटे रह सकते हैं।

14

अपने दिलों को कठोर न करें

इब्रानियों 3:7-19 पढ़ें

मेरे जीवन में भी ऐसे समय आए हैं जब मैंने पवित्र आत्मा की महीन आवाज को मुझे चेतावनी देते हुए सुना है, परंतु शरीर का दबाव इतना अधिक था कि मैंने उस चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया। इब्रानियों के लेखक के दिल की चाह है कि उसके पाठक उसकी बातों के सच को सही तरीके से पहचान सकें। वह उन्हें यीशु को स्वर्गदूतों एवं मूसा से महान दिखा रहा है। वह उन्हें बताता है कि यीशु उद्धार देने आए जो मूसा की व्यवस्था नहीं दे सकती है। लेखक पाठकों को चिताता है कि वे इस पुस्तक में सिखाए जाने वाले महत्वपूर्ण सच को सुनने में दिलों को कठोर न करें।

पद 8 में, इब्रानियों का लेखक पाठकों को उस समय की ओर ले चलता है जब इस्राएली जंगल में भटक रहे थे। जंगल में कई बार उन्होंने परमेश्वर का विरोध किया। परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर और उसके तरीकों की शिकायत की, कुड़कुड़ाए। आज्ञाओं को नहीं माना और अविश्वास के कारण पराजित हुए। लगभग 40 साल तक, उन्होंने बड़े हठ के साथ परमेश्वर और उसके उद्देश्यों का विरोध कर परमेश्वर की दया और धैर्य को परखा। परमेश्वर के लोगों ने जंगल में परमेश्वर की आवाज सुनी। उन्होंने अपने बीच चमत्कार होते देखे। परमेश्वर ने अद्‌भुत तरीके से उनके खाने और पीने का इंतजाम किया। वह पहाड़ों को हिलाता हुआ उनके बीच में आया। परमेश्वर के लोगों ने जंगल में भटकने के दौरान कई बार परमेश्वर की आवाज सुनी। सुनने के बावजूद, उन्होंने मुँह फेरा और अपनी मर्जी करते रहे। उनके दिल लगातार भटक रहे थे। (पद 10)

परिणाम, प्रभु परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित हो गया। वे उन स्थलों के देवी देवताओं को मानने लगे जहाँ जहाँ से वे गुजर रहे थे। उन्होंने परमेवर की व्यवस्था को तोड़ा। परमेश्वर की आवाज सुनने के बावजूद, वे उसके मार्गों पर नहीं चले। इस विरोध ने परमेश्वर को एक ऐलान करने को प्रेरित किया, "वे मेरे विश्राम में

प्रवेश नहीं कर पाएँगे।'' उसने यह पद 11 में कहा। इसका अर्थ था कि जंगल में भटक रहे इस्राएली वायदे के देश में प्रवेश नहीं कर पाएँगे जिसका वायदा परमेश्वर ने उनके पूर्व पिताओं से किया था। कठोर दिलों की वजह से कई सारे जंगल में ही मर गए। इसी प्रकार, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उपलब्ध उद्धार में प्रवेश नहीं करने वाले भी परमेश्वर के वायदारत विश्राम में कभी भी प्रवेश नहीं कर पाएँगे।

इसीलिए इब्रानियों का लेखक याद दिलाता है कि उनमें अविश्वास से भरा मन बिल्कुल भी न हो जो उन्हे परमेयवर से अलग करता है। यद्यपि यह भविष्यद्वाणी अविश्वासी के लिए सही है, कई सारे ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा विश्वासी भी अविश्वास और पाप से भरा मन दिखा सकते हैं। और ऐसा हम अपने शरीर एवं इसके मोह को सुनने के कारण करते हैं। दाऊद परीक्षा में गिरा और व्यभिचार कर बैठा। पतरस ने तीन बार प्रभु का इंकार किया।

परमेश्वर के द्वारा कही गई बात पर कम विश्वास और भरोसा दिखाने से हम अविश्वास का दिल प्रकट कर सकते हैं। परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने एवं उसकी आज्ञा मानने की बजाय, हम पीछे हट अपनी मर्जी का कार्य कर सकते हैं। हमें पूरे बल के साथ परमेश्वर की आज्ञा माननी एवं उसके तरीकों से कार्य करना चाहिए। कभी कभार परमेश्वर के तरीके, हमारे मानवीय दिमाग को अर्थहीन लग सकते हैं। अक्सर हमें शक रहता है कि परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करेगा भी या नही। इस जीवन की कठिनाईयों और परेशानियों के बीच, कईयों के सामने परमेश्वर को छोड़ देने की परीक्षा आ खड़ी होती है।

हमारे दिलों को कठोर करने के पाप से कैसे छुटकारा पाएँ? हम शत्रु और हमारे शरीर के मोहों पर जय पाकर कैसे परमेश्वर की पुरी आज्ञाकारिता में जी सकते हैं? पद 13 में, हमें, जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, एक दूसरे का प्रोत्साहन करने को कहा गया है। दूसरे शब्दों में, जब तक हम इस दुनिया में हैं, हमें इस मामले में एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहना है।

पद 13 में उद्धत शब्द ''प्रोत्साहन'' का एक बड़ा अर्थ है। इसका अर्थ ढ़ाढ़स देना अथवा उपदेश देना भी हो सकता है। इसमें सिखाने और बल देने का अर्थ भी शामिल है। दूसरे शब्दों में, शत्रु और उसकी परीक्षाओं का सामना एवं प्रभु के सामने अपने दिल को मृदुल रखने के लिए हमें हमारे विश्वासी भाईयों बहनों के सहयोग, उत्साह, सांत्वना और डाँट की जरूरत पड़ेगी।

कल्पना करें कि एक सैनिक पूरी सेना के साथ लड़ने की कोशिश कर रहा

है। यह सोचना ही मूर्खता है कि एक अकेला सैनिक पूरी सेना से युद्ध करेगा, परंतु हम मसीही अक्सर ऐसा ही करते हैं। परमेश्वर ने हमें परिवार का सदस्य बनने के लिए बुलाया है। उसने अपने सारे आत्मिक वरदान किसी एक को नहीं दे दिए। परंतु उसने वरदानों को इस प्रकार बाँटा है कि हमें एक दूसरे की जरूरत रहे। हमें युद्ध में जय पाने के लिए, हमें भाईयों और बहनों की आँखों और हाथों की जरूरत है कि हम आने वाले खतरे को भाँप सकें। परीक्षाओं और खतरों के दौरान हमें संभालने वाली बाँहें चाहिएँ। यात्रा कठिन लगे तो आने बढ़ते रहने के लिए हमें सुझाव और प्रोत्साहन चाहिए। युद्ध जीतने के लिए हमें एक दूसरे जरूरत है।

परमेश्वर की संतान होने के नाते, हम मसीह के कष्टों में शामिल होते हैं। हमें संसार ठुकराएगा। हम दुश्मन के तीरों का निशाना बनेंगे। संसार हमें नहीं समझेगा, जैसे उसने यीशु को नहीं समझा। कुछों को तो अपने विश्वास के लिए मरना तक पड़ सकता है। परंतु पद 14 में वायदा है, यदि हम डटे रहें तो मसीह की महिमा और आशीषों में भी शामिल होंगे। लि को कठोर करने के यदि बड़े परिणाम हैं, तो आज्ञा मानने एवं विश्वासयोग्य लोगों के लिए भी महान उपहार हैं। हम कैसे जय पा सकते हैं? हमने पद 13 में एक दूसरे की जरूरत को देखा। यहाँ पद 14 में, हमें मसीह में मिली आशा के बारे में बताया गया है। जय पाने के लिए हमें उस आशा को हमारे सामने रखना है। डटे रहने वालों को मिलने वाले वायदे को हमें सदा याद रखना है। इन तात्कालीन कष्टों की हम मसीह में मिलने वाली आशीषों से तुलना नहीं कर सकते हैं। यह आशा मसीह के आज्ञाकारी एवं विश्वासयोग्य बने रहने में हमारी मदद करे।

लेखक अध्याय 3 को एक बार फिर जंगल में भटक रहे इस्राएलियों की याद दिलाते हुए समाप्त करता है। उन्हे परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के प्रति दिल कठोर नहीं करने की चेतावनी दी गई है। जंगल में उन्होने परमेश्वर और उसके धीरज को 40 साल तक परखा। उनकी कुड़कुड़ाहट एवं शिकायत को सहा परंतु दिल कठोर करने वाले परमेश्वर के वायदारत देश को नहीं देख पाए। वे जंगल में ही मर मिट गए। वे इच्छित विश्राम को नहीं पा सके। (पद 18) उनके पाप और अविश्वास से भरे दिल ने उन्हे परमेश्वर की आशीषों की संपूर्णता को देखने से वंचित कर दिया। हम विश्वासयोग्यता एवं विश्वास के द्वारा ही, परमेश्वर की आशीषों की संपूर्णता को देख सकते हैं। यदि हम हमारे जीवन में, परमेश्वर की आशीषों की संपूर्णता को देखना चाहते हैं तो हमें हमारे दिल को संभालना है कि संसार, शरीर और शैतान इसे कठोर न कर सके।

विचार विमर्श के लिए:

- परमेश्वर की आवाज सुनने से हमें क्या वंचित करता है?
- क्या आपको कभी लगा है कि आपने परमेश्वर की बुलाहट और अगुवाई का विरोध किया है? वर्णन करें।
- परमेश्वर की बातों के प्रति अपने दिलों को कठोर करने के क्या परिणाम निकलते हैं? क्या एक विश्वासी अपने दिल को कठोर कर सकता है? वर्णन करें।
- इब्रानियों का लेखक के अनुसार, हम अपने दिलों को कठोर होने से कैसे बचा सकते हैं?
- क्या आपके आसपास कठोर दिलों वाले लोग हैं? उनके प्रति आपकी क्या जिम्मेदारी है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को अपने जीवन में वो क्षेत्र दिखाने को कहें जहाँ आपका दिल कठोर हुआ है। प्रभु से उस कठोरता को तोड़ने की प्रार्थना करें।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि जीवन में परेशानियाँ होने के बावजूद भी उसमें हमें अद्‌भुत आशा मिली है।
- प्रभु से कहें कि वह इस समय परेशानियों में से गुजर रहे भाई या बहन को उत्साह देने के लिए आपकी आँखों को खोले।

15

हमारे विश्राम में प्रवेश करना

पढ़ें इब्रानियों 4:1-11

इब्रियों के लिए पिछले अध्याय की चुनौती परमेश्वर की बुलाहट के लिए उनकी आँखों को खोलना और परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों के प्रति अपने दिलों को कठोर नहीं करना था। उन्हे परमेश्वर एवं उसके उद्देश्यों के प्रति दिलों को कठोर करने के परिणामों के बारे में चिताया गया।

इन परिणामों के प्रकाश में, इब्रियों को सावधान रहना था जिससे कि वे परमेश्वर के द्वारा वायदारत् विश्राम में प्रवेश करने से वंचित न रह जाएँ (पद 1)। पद 1 में ध्यान दें कि विश्राम का वायदा बना हुआ था। दूसरे शब्दों में, उद्धार एवं परमेश्वर के साथ मेल का वायदा अभी भी उनके लिए वास्तविकता था। शायद आप भी चकित रहे होंगे कि परमेश्वर के साथ आपका मेल कैसे हो सकता है। आप अपने जीवन में किसी विषय में उलझे पड़े हैं और अब शायद ही इस मसले पर कोई आशा बची है। इब्रानियों का लेखक पाठकों को बताता है कि परमेश्वर के विश्राम का वायदा अभी भी उनके लिए मौजूद था। उसका वायदा बना हुआ था। जब यीशु इस धरती पर थे तो उन्होने वायदा किया कि जो उनके पास आएगा, उनके विश्राम को जानेगा। हम मती 11:28-29 में पढ़ते हैं:

हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।

यीशु के द्वारा उस समय किया गया वायदा आज भी हमारे लिए उपलब्ध है। वह आज भी हमें अपना विश्राम देता है। हम चाहे किसी भी हालात में क्यों न हों, हम इस विश्राम की वास्तविकता को पहचान सकते हैं। यह वायदा उनके लिए सच है जो प्रभु का उद्धार पाने की कोशिश करते हैं, उन विश्वासियों के लिए भी सच है जो पाप और हमारे जीवन पर इसके प्रभाव के ऊपर जय पाना चाहते हैं। परमेश्वर की इच्छा हमें अपना विश्राम देना है।

पद 1 की चुनौती परमेश्वर के पास आने वाले सब लोगों को मिलने वाले विश्राम से वंचित नहीं होना है। पाठकों के लिए यह कितनी बडी त्रासदी होगी कि उन्हे यह वायदा तो मिला है परंतु इस सच्चाई को अपने जीवन में अभी तक पाया नहीं है। जीत उनकी थी, परंतु अभी तक वे सच्चाई तक पहुँचे थे। कितने ही विश्वासी हैं जो पाप, व्यवहार अथवा कार्यों में विजय को पाए बिना ही यात्रा में संलग्न हैं। कितने ही अविश्वासी सुसमाचार को सुनने के बाद भी मसीह को पाए बिना जीवन जीते हैं। वायदा अभी भी बना है, परंतु हमें इसे पाने के लिए अपने दिल को खोलना है। कितने दुर्भाग्य की बात है कि बहुत सारे लोग अपने जीवन में आशीषों की संपूर्णता को पाने से चुक जाते हैं।

पद 2 में ध्यान दें कि यहूदियों को सुसमाचार का संदेश मिला परंतु उनके जीवन में इस संदेश का कोई मोल नहीं था क्योंकि यह विश्वास के साथ मिला हुआ नहीं था। दूसरे शब्दों में, उन्होने संदेश के लिए अपने दिलों को नहीं खोला। विश्वास परमेश्वर को उसके वचन के अनुसार स्वीकार करना है। परमेश्वर आज हमें अपने विश्राम का वायदा देता है। उसके वचनानुसार उसे स्वीकार करें। दिए गए वायदे की वास्तविकता को पूरा होते हुए देखे बिना तृप्त न होना। वो जो देना चाहते हैं उसे पाने के लिए अपना दिल खोलें।

विश्वास करने वाले ही परमेश्वर के वायदे के विश्राम में प्रवेश कर पाए थे। (पद 3) यहाँ लेखक के द्वारा वर्णित विश्राम विश्वास के द्वारा आता है। हमें इसे विस्तृत रूप से देखना है।

इब्रानियों की पत्री मुख्य तौर पर यहूदियों के लिए लिखी गई थी। यहाँ लेखक के द्वारा वर्णित विश्राम (विश्वास के द्वारा आने वाला विश्राम) यहूदी मन के लिए अपरिचित था। पद 3 में, लेखक बताता है कि यहाँ वर्णित विश्राम सृष्टि के सातवें दिन पर लिया गया विश्राम नहीं था। उत्पति 2:2 बताता है कि परमेश्वर ने पूरी सृष्टि की रचना करने के बाद सातवें दिन विश्राम किया था। हर सब्त पर यहूदी इस विश्राम का उत्सव मनाते थे। यहूदियों के लिए, सब्त एक महत्वपूर्ण दिवस था। उस दिन पर कार्य करना मृत्युदण्ड लाने वाले पाप को करने के समान था। (निर्गमन 31:15) सब्त के अर्थ में 'विश्राम' को समझना यहूदियों के लिए आसान था। परंतु, इब्रानियों का लेखक यहूदियों को बताना चाहता है कि सब्त से भी बढ़कर एक विश्राम है। यह बात उन्हे समझाने के लिए, वह भजन संहिता 95:11 का उद्धरण लेता है, "इसलिए मैंने क्रोध में शपथ खाई कि वे कभी मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएँगे।"

भजन संहिता 95 का यह भाग लोगों के जंगल में से होकर गुजरने के संबंध में लिखा गया था। परमेश्वर उनसे कह रहे हैं कि उनके पापों के कारण वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएँगे। इसकी बजाय, उन्हे जंगल में चालीस साल भटकना पड़ा। पद 4 में इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को यह बताना जारी रखता है कि यहाँ वर्णित विश्राम सब्त को नहीं दर्शाता है। उस दौरान, परमेश्वर के लोग हर सप्ताह सब्त का उत्सव मनाया करते थे और अनेक सालों तक करते रहे। इससे स्पष्ट है कि भजन 95:11 में वर्णित विश्राम सब्त को नही, वरन् विश्राम के किसी अन्य रूप को दिखाता है।

इस विशेष मामले में, भजनकार के द्वारा बताया गया विश्राम कनान के देश में मिलने वाला था (पूर्वजों को वायदारत् देश)। यह उनके जंगल में भटकने एवं बंधुवाई से विश्राम था। यह मिस्र की दासता से विश्राम था। यहाँ वर्णित विश्राम उनके स्वयं के वायदे का देश और उस देश में उन पर परमेश्वर की आशीष था।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को पद 6 में बताता है कि मूसा के समय की तरह ही, कई सारे ऐसे लोग थे जो परमेश्वर के वायदेरत् विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाए थे। इन सब को सुसमाचार सुनाया गया था, परंतु वे प्रवेश नहीं कर पाए। यह हमें दिखाता है कि अंततः विश्राम का मतलब सुसमाचार को स्वीकार करना और परमेश्वर के साथ विश्राम को जानना है।

दाऊद ने भजन 95:7, 8 में भविष्यद्वाणी करते हुए, अपने लोगों से कहा, "आज, यदि तुम उसकी आवाज सुनो, और अपने दिलों को कठोर न करो।" ये शब्द जंगल में परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहे थे। जब दाऊद ने पवित्रात्मा से भरकर उनसे बात की, तो उनके लिए नहीं जो जंगल में मर चुके थे, परंतु उनके लिए थी जो उसे सुन रहे थे। उसने अपने समय के लोगों के सामने परमेश्वर की चुनौती को नया बनाया। उसने उन्हे अपने दिलों को कठोर नहीं करने की चेतावनी दी कि वे भी परमेश्वर के द्वारा उनके लिए नियुक्त बातों से चूक न जाएँ।

कुछ यहूदियों ने माना होगा कि लेखक के द्वारा वर्णित विश्राम मिस्र से छुटकारे को पाकर वायदे के देश में प्रवेश करने पर मिलने वाला विश्राम होगा। परंतु हमें यह बात ध्यान में रखनी है कि पौलुस यहाँ वायदे के देश में प्रवेश करने पर मिलने वाले विश्राम की बात नहीं कर रहा। पद 8 में, उसने अपने पाठकों को बताया कि यहोशु ने उन्हे परमेश्वर के द्वारा वायदारत् विश्राम नहीं दिया। यहोशु के कनान पर विजय पा लेने के बावजूद, वायदा अब भी बना हुआ था कि परमेश्वर अपने लोगों

को विश्राम दे रहा है। परमेश्वर के लोगों के लिए एक "सब्त-विश्राम" अभी भी बाकी था। (पद 9) वायदारत् विश्राम न तो सब्त के मानने से आया और न ही कनान में प्रवेश करने पर मिला।

इब्रानियों के लेखक के अनुसार, परमेश्वर के द्वारा कहा गया विश्राम, कार्य से उस प्रकार विश्राम करना था जब परमेश्वर ने अपने कार्य से विश्राम किया। (पद 10) इस बात को यहूदी, जो व्यवस्था के अधीन थे, समझ सकते थे। पूरे कलीसियाई इतिहास में, स्त्री एवं पुरूष ने स्वयं को अनुशासित एवं इंकार तक किया। कुछ सुनसान जगहों पर रहे, परमेश्वर के सामने सही साबित करने के लिए स्वयं को हर प्रकार के दर्द में डाला। उन्होने बार बार परमेश्वर की प्रसन्नता पाने के लिए स्वयं का इंकार किया, दण्ड सहा। इब्रानियों का लेखक यहां इसी भावी दर्द के खत्म होने की बात कर रहा है।

यहां वर्णित विश्राम शारीरिक कार्य से विश्राम पाने वाला पुराने नियम का सब्त नहीं था। मिस्र से छुटकारा पाकर कनान में प्रवेश करने पर मिलने वाला विश्राम भी नहीं था यह। यहां वर्णित विश्राम उस दर्द और कष्ट से छुटकारा है जो धार्मिक एवं भले कार्यों के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश के परिणामस्वरूप सहना पड़ता है। यह विश्राम हमें तब मिलता है जब हम अंततः परमेश्वर के साथ मेल कर उससे रिश्ता जोड़ लेते हैं। यह इस विचार से मिलने वाला विश्राम है कि परमेश्वर के साथ मेले करने के लिए जरूरी हर कार्य को यीशु मसीह ने पूरा कर दिया है। हमें केवल इसे स्वीकार करना जो उसने किया है।

संपूर्ण पुराने नियम में, परमेश्वर लोगों को याद दिलाते रहे कि अभी भी उनके सामने एक विश्राम है जिसका उन्होने अभी तक अनुभव नहीं किया है। यह विश्राम केवल प्रभु यीशु मसीह, मसीहा में ही मिल सकता है। मसीह वो देने आए जो मूसा या व्यवस्था नहीं दे पाए। वह पिता परमेश्वर के साथ मेल और विश्राम देने आए। लेखक अपने पाठकों से गुहार लगाता है कि वे परमेश्वर के साथ विश्राम में प्रवेश करने की हर संभव कोशिश करते रहें।

सोच विचार के लिए:

- क्या हम परमेश्वर के वायदे से चूक सकते हैं? वर्णन करें।
- क्या आपने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की आशीषों को अपने जीवन में महसूस किया है? क्या विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के पास आपको देने के लिए अभी भी बहुत कुछ है?

- क्या आपने परमेश्वर के साथ विश्राम को पाया है? विश्रा का मतलब क्या है? इस विश्राम से आपके जीवन में क्या बदलाव आया है?
- विश्वास नहीं करने वालों के लिए परमेश्वर के वायदों का क्या लाभ है? वर्णन करें।
- यहूदी विश्राम को कैसे समझते हैं? उन्होने क्या खो दिया?

प्रार्थना के लिए:

- हमें दिए गए वायदों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें। प्रार्थना करे कि विश्वास के साथ इन वायदों में कदम रखने में मदद पाने के लिए हमें अपना अनुग्रह दे।
- परमेश्वर से आपको और अधिक विश्राम देने को कहें। उससे जीवन का वो भाग प्रकट करने को कहें जहाँ आपने अभी तक समर्पण नहीं किया है।
- प्रभु यीशु का धन्यवाद करें कि उसने हमारे उद्धार के लिए जरूरी हर कार्य को पूरा किया है। उस भरोसे के लिए उसका धन्यवाद करें कि आप परमेश्वर के साथ मेल कर सकते हैं।

16

आइए करीब चलें

इब्रानियों 4:12-16 पढ़ें।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को विश्राम करने के बारे में बता रहा था। यह अध्याय 4 का अंतिम भाग है, और वह उन्हे ढ़ाढ़स के साथ परमेश्वर के सिहांसन के करीब जाने को उत्साहित कर रहा है कि वे विश्राम में प्रवेश कर सकें। उसने उन्हे वायदारत् विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाने की त्रासदी भी याद दिलाई।

यह भाग इस चेतावनी से शुरू होता है कि परमेश्वर का वचन जीवित और क्रियाशील है। वचन उन्हे वास्तव में बदल सकता है जो इसे पढ़ते हैं। उन्हे पाप और बलवे का बोध होता है। आज्ञा मानने वालों को वे आशीष देते एवं नहीं मानने वालों को शाप देते हैं। सालों से लोगों ने परमेश्वर के वचन को नाश करने की सोची परंतु आज तक कोई भी सफल नहीं हो पाया। परमेश्वर का वचन आज भी लोगों को बदल रहा है। जब इन वचनों में उस पर ध्यान करते हैं, तो वह हम पर स्वयं को प्रकट करता है। यीशु मसीह के दिए जाने वाले विश्राम में प्रवेश करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, जीवित वचन में अपना समय अवश्य बिताए।

वचन के लिए अपना दिल खोलना हमेशा आसान नहीं है। यह दोधारी तलवार से भी तीखा है। यह हमें अंदर तक भेदता है। ध्यान दें, लेखक कह रहा है कि वचन हमारी आत्मा, प्राण, जोड़ों और मज्जा के अंदर तक जाता है। अर्थात, परमेश्वर का वचन हमें अंदर तक छूता है। यह हमारे दिल के विचारों और व्यवहार तक का न्याय करता है। (पद 12) आप इस वचन से छुप नहीं सकते हैं। यह उन पापों को भी प्रकट करता है जो आप सोचते थे कि रहे ही नहीं होंगे। यह हमारे व्यवहार और विचारों को चुनौती देता है। यह तुम्हें अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह बनाता है। यदि आप यीशु के द्वारा विश्राम में प्रवेश करना चाहते हैं तो आपको इस भेदने वाले तीखे वचन की सच्चाई का अवश्य सामना करना पड़ेगा।

हमारा यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि यह वचन दोधारी तलवार है।

इसके लिए अपना दिल खोलने वाले जल्द ही पहचान पाएँगे कि यह वचन पाप का बोध करवा इसे प्रकट ही नहीं करता, परंतु समर्पित करने वालों को ढ़ाढ़स और सांत्वना भी प्रदान करता है। वचन के द्वारा परमेश्वर की इच्छा केवल पापों को उजागर करना ही नहीं है, परंतु यह भी दिखाना है कि हम इस पर विजयी होकर कैसे जी सकते हैं। परमेश्वर का वचन हमें शिक्षा और निर्देश देता और निर्देशों का पालन करने वालों को बल देता है। यदि हम विश्राम में प्रवेश करना चाहते हैं तो हमें स्वयं को वचन के लिए खोलना जरूरी है कि वचन हमारे पापों को उजागर करे, हमें इसका हल दिखाए और हमें धार्मिकता में प्रशिक्षित करे।

एक और सच है जिसे हमें विश्राम में प्रवेश के लिए जानना जरूरी है। प्रभु यीशु मसीह हमारे महायाजक है। (पद 14) महायाजक साल में एक दिन लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करता है। इसी प्रकार, हमारे पापों की क्षमा के लिए क्रूस पर के उसके बलिदान के बाद, यीशु स्वर्ग की ओर लौट गए। मृतकों में से जी उठने एवं परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के द्वारा, उसने हमारे पापों की कीमत चुकाई और हमारे उद्धार को पक्का किया। यदि हम इब्रानियों में वर्णित विश्राम को जानना चाहते हैं तो हमें हमारे महान महायाजक यीशु के कार्य को दृढ़ता से थामे रहना है।

पुराने नियम के समय में, केवल महायाजक ही अतिपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता है। केवल वही लोगों के पापों के लिए उचित प्रायश्चित कर सकता है। इसी प्रकार, केवल यीशु, हमारा महायाजक ही हमारे पापों का प्रायश्चित करने के योग्य हैं। कोई और, ये प्रायश्चित नहीं कर सकता। यदि आप अपने पापों की क्षमा और इस विश्राम में प्रवेश करना चाहते हैं तो आपको उनके माध्यम से जाना होगा।

हमारा महान महायाजक होने के नाते, प्रभु यीशु मसीह समझते हैं कि हम धरती पर क्या सहते हैं और वे हमारी जरूरत जानते हैं। यीशु मसीह "हर तरीके से" हमारी तरह परखे गए। (पद 15) हममें और प्रभु यीशु में अंतर यह है कि यीशु ने उस हर परीक्षा का सामना किया और उन पर जय पाई। यह बात हमें कितना प्रोत्साहित करती है। यीशु हर परीक्षा से सुलटना जानते हैं। उसने प्रमाणित किया है कि वे उन्हे हरा सकते हैं। आप शायद अपनी परीक्षाओं पर जय न पा सकें, परंतु वो पा सकते हैं। वह हमें समझने वाला महायाजक है। हमें परमेश्वर से अलग करने वाले पाप के बंधन को वह तोड़ सकता है। हमारे मार्ग में आने वाली हर परीक्षा को वह सुलझा सकता है। यदि आप विश्राम में प्रवेश करना चाहते हैं तो आपको प्रभु

यीशु की ओर फिरना और परमेश्वर की सिद्ध शांति की ओर लाने वाले महायाजक के रूप में उसके कार्य पर विश्वास करना होगा।

इन तथ्यों के आधार पर, हमें परमेश्वर के सिहांसन के पास हियाव के साथ आने को कहा गया है। ध्यान दें कि इस सिंहासन को अनुग्रह का सिंहासन कहा गया है। यह अनुग्रह का सिंहासन है क्योंकि जब हम इस सिंहासन के पास आकर इसके सामने घुटने टेकते हैं तो हम हमारे महायाजक प्रभु यीशु मसीह के कार्य के द्वारा क्षमा और करूणा पाते हैं। उस सिंहासन के पास हम मदद, चंगाई और आराम पाते हैं। इस सिंहासन के पास हम विश्राम पाते हैं।

इस भाग में, इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि यदि हम विश्राम पाना चाहते हैं तो हमें परमेश्वर के वचन की ओर अपना दिल खोलना पड़ेगा, यह हमसे बात करे, पापों को प्रकट करे और हमें आराम एवं निश्चितता प्रदान करे। और फिर हमें हमारे सामने प्रकट पापों को हमारे महान महायाजक प्रभु यीशु मसीह के पास लेकर आना है क्योंकि केवल वही इसे सुलझा सकते हैं। केवल यीशु के द्वारा ही, हमारे पाप क्षमा हो सकते हैं। केवल उसमें ही, हम हमारी आत्मा का विश्राम पा सकते हैं। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को हियाव के साथ सिंहासन के पास आकर शांति पाने की चुनौती देता है। ऐसा करने वाले, करूणा, अनुग्रह और वायदारत् विश्राम पा सकते हैं। इसका इंकार करना कितना भयानक होगा।

सोच विचार के लिए:

- जब इब्रानियों का लेखक कहता है कि परमेश्वर का वचन जीवित और क्रियाशील है तो उसका क्या तात्पर्य है? इस वचन का आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- हमारे महायाजक की तरह यीशु मसीह कैसे कार्य करते हैं?
- यीशु मसीह के महायाजकपन एवं पुराने नियम के महायाजकों में क्या अंतर हैं?
- परमेश्वर के सिंहासन को "अनुग्रह का सिंहासन" क्यों कहा जाता है?
- विश्राम में प्रवेश करने में हमारे मदद करने के कार्य में परमेश्वर के वचन की भूमिका क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने हमें अपना वचन दिया। आपके जीवन

में आए वचन के प्रभाव के लिए उसका धन्यवाद करें। परमेश्वर से कहें कि वह वचन के द्वारा कही जाने वाली बातों को स्वीकार करने में आपकी मदद करे।

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह हमारी परीक्षाओं और कष्टों को जानता है।
- प्रभु का धन्यवाद कि वह अनुग्रह के सिंहासन पर विराजमान हैं जहाँ घुटने टेकने वाला क्षमा, पवित्रता और करूणा पा सकता है।

17

यीशु मसीह हमारा महायाजक

इब्रानियों 5:1-10 पढ़ें

पुराने नियम में महायाजक लोगों में से चुना जाता था। वह सेवा किए जाने वाले लोगों की ही तरह एक मनुष्य था। उसे लोगों के लिए परमेश्वर के सामने प्रतिनिधित्व करने और परमेश्वर के लोगों के उपहारों एवं बलिदानों को परमेश्वर के सामने चढ़ाने के लिए चुना जाता था।

हमें यहाँ एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देना है। यह महत्वपूर्ण था कि महायाजक एक व्यक्ति हो। उसे परमेश्वर के सामने अपने लोगों का प्रतिनिधि बनना है। और यदि वह स्त्री और पुरूषों का प्रतिनिधि बनना चाहता है तो उसे उनके समान होना अति महत्वपूर्ण है। ऐसा व्यक्ति जो लोगों की जरूरतों को जानता तक नहीं है, कैसे उनका प्रतिनिधि बन सकता है? और इसीलिए यह महत्वपूर्ण था कि यीशु मनुष्य बने। यदि वे हमारे बीच में हमारे समान नहीं बनते, तो वे हमारे प्रतिनिधि भी नहीं बन सकते थे। यीशु ने मानुषिक वेश धरा। हमारे द्वारा सामना की जाने वाली बातों का स्वयं सामना करने के लिए उसने अपने दैवीय वेश को उतार दिया। वे पूरी सिद्धता से हमारे साथ अपनी पहचान बना सकते और पिता के सामने हमारे प्रतिनिधि बन सकते हैं।

पद 2 पाठकों को अपनी बात बताते वक्त इस बिन्दु पर बल देता है कि चूँकि पुराने नियम का महायाजक हमारी कमजोरियों में हमारा सहभागी बन सका, वह कमजोर एवं भटक रहे लोगों के मसले बड़ी नम्रता के साथ सुलटा सका। और वह ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि उसने हमारे ही समान कमजोरियों और परीक्षाओं का सामना किया। अक्सर प्रभु परमेश्वर हमें परीक्षाओं को सहने की अनुमति देता है ताकि हम हमारी ही तरह परीक्षाओं में पड़े दूसरों के सामने सही सेवा कर पाने में सक्षम हो सकें।

पुराने नियम के याजक स्वयं पापी थे। वे सिद्ध नहीं थे। परमेश्वर के सामने

लोगों का प्रतिनिधि बनने का उनके पास महत्वपूर्ण कार्य था परंतु वे सेवा कर रहे लोगों की ही तरह पापी थे। इसी वजह से, पुराने नियम के याजकों को दूसरों के लिए बलिदान चढ़ाने के साथ साथ स्वयं के लिए भी चढ़ाना होता था। (पद 3)

कितना अद्‌भुत है कि परमेश्वर अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए पापियों का इस्तेमाल करता है। परमेश्वर के द्वारा वचन में हमारे लिए रखे गए स्तर से हम काफी नीचे गिर चुके हैं। तौभी, यह जानना कितने आनंद की बात है कि हमारी अपूर्णता के बावजूद, परमेश्वर हमारे साथ कार्य करता और अपने राज्य के लिए हमारा इस्तेमाल करता है। हमें यही धीरज विश्वास में हमारे भाईयों और बहिनों के सामने भी दिखाना है।

इस तथ्य का, कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पापियों का भी इस्तेमाल कर सकता है, अर्थ यह भी नहीं है कि कोई भी महायाजक की भूमिका निभा सकता है। वास्तव में, यह सम्मान केवल उनके लिए आरक्षित है जिन्हे परमेश्वर ने विशेष तौर पर बुलाया है। हममें से कौन परमेश्वर के लोगों को उसके सच में अगुवाई देने के लिए योग्य है? मुझे याद है, एक बार मेरी सेवकाई में, मैने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, केवल आपके लिए जीने और खुद के पापों से निपटने में ही इतना प्रयास लग जाता है, मुझे दिए गए लोगों की मैं कैसे सेवा कर सकूँगा?" मुझे याद है, पाप पर जय पाने एवं परमेश्वर के साथ चलने में एक बड़े समूह की अगुवाई करने की सोच मात्र मुझे कितना बोझिल कर गई थी। एक भाव में, हम सबको यह कमजोरी महसूस होनी चाहिए। इसलिए परमेश्वर के लोगों का "याजक" बनने के इस कार्य को हम हल्का नहीं ले सकते हैं। कार्य की बराबरी हममें से कोई नहीं कर सकता है।

यीशु मसीह ने भी महायाजक का कार्य स्वयं नहीं लिया था। परमेश्वर के पुत्र होने के बावजूद, उन्होने स्वयं इस कार्य को नहीं लिया। (पद 5) पद 5 और 6 में, हम देखते हैं कि पिता ने उन्हे महायाजक के तौर पर बुलाया। लेखक पुराने नियम के दो पदों के माध्यम से यह कार्य स्पष्ट करता है। पहला पद, भजन संहिता 2:7 कहता है, "तु मेरा पुत्र है; आज मैं तेरा पिता ठहरा हूँ।"

यह रोचक है कि जब यूहन्ना ने यीशु मसीह को बपतिस्मा दिया, तो स्वर्ग से एक आवाज आई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।" (मती 3:17) भजनकार, भविष्यद्वाणीय तरीके से आगे की देखते हुए कहता है, मसीहा अथवा अभिषिक्त पुत्र के रूप में आएगा। मनुष्य का वेश धरकर वे मनुष्य का पुत्र

बने, मानव जाति की हर जरूरत के साथ वे पहचान कर पाने के योग्य थे। यीशु ने दाऊद की इस भविष्यद्वाणी को पूरा किया और मनुष्य के रूप में जन्म लेकर एक पुत्र बना। इब्रानियों के लेखक के लिए, यह बात सत्यापित करती है कि उसी को परमेश्वर ने हमारे प्रतिनिधि के तौर पर चुना था।

पुराने निसम का दूसरा पर भजन संहिता 110:4 है जो कहता है, "और वह दूसरी जगह पर कहता है, तू मलकिसिक की रीति के अनुसार, हमेशा के लिए महायाजक है।" इस पद को समझने के लिए, हमें मलसिदिक के बारे में थोड़ा जानना लाभप्रद होगा। इस याजकीय राजा के बारे में हम उत्पति 14:18-20 में पढ़ते हैं। एक दिन, युद्ध के बाद वापिस लौटते वक्त, अब्रहाम उससे मिलता है और अपनी हर संपति का दशमांश उसे देता है। मलकिसिदिक शालेम (या यरूशलेम) का राजा था। इस्राएलियों के इस शहर में आने से पहले का समय था यह। हम मलकिसिदिक के बारे में कई बातें देखते हैं।

पहली बात, मलकिसिदिक नाम का अर्थ है "धार्मिकता" वह यरूशलेम के शहर पर आने वाली बातों का चिन्ह था। इस्राएलियों के यरूशलेम में आकर बसने से पहले ही, इस शहर में "धार्मिकता का राजा" नामक राजा मौजूद था। यह भविष्द्वाणीय था। एक दिन आएगा कि यीशु मसीह स्वयं इस भविष्यद्वाणी का पूर्तिकरण होंगे। वे वास्तविक धार्मिकता के राजा के रूप में आएँगे।

दूसरी, मलकिसिक शालेम में सर्वोच्च परमेश्वर के एक याजक के रूप में कार्य करता है। (उत्पति 14:18) याजक के तौर पर, वह हारून या इस्राएल के याजकों का वंशज नहीं था। उसने एक अलग क्रम से सेवा की - मलकिसिदिक का क्रम। ऐसा इसलिए क्योंकि मलकिसिदिक वो याजक था जिसे अब्रहाम ने दशमांश दिया था। रोचक बात यह है कि मलकिसिदिक एक अलग प्रकार के याजक के रूप में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। यह भी भविष्यद्वाणीय है। यीशु मसीह मूसा के नियमानुसार, हारून के क्रम में नहीं वरन् मलकिसिदिक के क्रमानुसार याजक बनेंगे। यीशु अपने लोगों को व्यवस्था से मुक्त कराने आएगा। वे मूसा के दिनों की तरह के याजक नहीं होंगे।

पद 6 में उपयुक्त भाग उस दिन की बात बताता है जब एक अलग याजकपन को स्थापित किया जाएगा। वह याजकपन पुराने नियम के याजकपन की तरह नहीं होगा। हारून के याजकपन तले कार्य करने वाले सभी पापी थे जिन्हे स्वयं अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाने की जरूरत थी। मलकिसिदिक का याजकपन अलग

होगा। हारून के विपरीत, यह याजक धार्मिकता का राजा होगा। वह पूरी धार्मिकता के साथ पापरहित याजक के रूप में कार्य करेगा। हारून के विपरीत, वह हमेशा हमेशा का याजक होगा।

यीशु मसीह केवल महायाजक ही नहीं थे, उन्होने पापरहित जीवन भी जिया और अपनी भूमिका को बखूबी निभाया। यीशु अपने पिता की संपूर्ण आज्ञाकारिता में रहे। वे पाप और मृत्यु पर जय पाते हुए, हमारे पाप के लिए क्रूस पर सिद्ध बलिदान बन गए। (पद 7) यह कुछ ऐसा है जो कोई भी याजक नहीं कर सकता है।

यीशु मसीह की विजय आसानी से नहीं आई। यीशु ने कष्टों के द्वारा आज्ञाकारिता को सीखा। (पद 8) नौजवान होने के नाते, उसे अपने स्वर्ग के पिता के नजरिए में बढ़ना था। उसे पिता के साथ अपनी चाल को सिद्ध कर हम सबके द्वारा सही जाने वाली परीक्षाओं का सामना करना था। उसने कष्टों और परख के द्वारा विजय में चलना सीखा।

यीशु को पिता ने महायाजक के रूप में बुलाया परंतु उसने स्वयं ने भी परीक्षाओं और कष्टों के माध्यम से अपने उस पद को साबित करके दिखाया। केवल वही महायाजक बनने के योग्य थे। पुराने नियम के याजकों की तरह नही, उसने एक सिद्ध जीवन जिया। उसका बलिदान सिद्ध बलिदान था।

सिद्ध महायाजक होने के नाते, उसके पास आने वाले सब लोगों के लिए उसके पास उद्धार उपलब्ध है। (पद 9) वह नए याजकीय क्रम के अनुसार एक याजक हैं। (व्यवस्था से परे, धार्मिकता के राजा मलकिसिदिक का क्रम) इस क्रम का केवल एक ही याजक है। केवल एक है जो धार्मिकता का राजा बन सकता है। सिद्ध एवं पापरहित महायाजक प्रभु यीश ही, इस क्रम के अनुसार धार्मिकता के राजा के रूप में प्रवेश कर सकता है। सिद्ध महायाजक एवं धार्मिकता के राजा के रूप में, अब वो पिता के सामने हमारे प्रतिनिधि हैं।

सोच विचार के लिए:

- महायाजक का हमारे समान मनुष्य होना क्यों जरूरी था?
- यीशु को मनुष्य क्यों बनना पड़ा? इसमें आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- इस पद में आप निम्न कथन के बारे में क्या सीखते हैं, कि "परमेश्वर अपने राज्य के विस्तार के लिए हमारे जैसे पापियों का भी इसतेमाल कर

सकता है?''

- मलकिसिदिक का क्रम क्या है? यह हारून के क्रम से अलग क्यों है?
- यीशु मसीह हारून के वंश से पुराने नियम के क्रम की बजाय, मलकिसिदिक के क्रमानुसार क्यों आए?
- आज्ञाकारिता कैसे सीखी जाती है? क्या आप आज्ञाकारिता को सीखना खत्म कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वे मनुष्य बनने को तैयार हो गए जिससे वे हमारे साथ अपनी पहचान बना पाए और हमारे सिद्ध महायाजक बन पाए।
- प्रभु से माँगे कि अधिक आज्ञाकारिता में बढ़ते रहने में वह आपकी मदद करे।
- प्रभु का धनयवाद करें कि आपको व्यवस्था से परे एक नए क्रम का याजकपन मिला। धन्यवाद करें कि हमारे नए महायाजक, यीशु मसीह हम तक परमेश्वर की उपस्थिति, क्षमा एवं हमारे पापों की माफी ला सकते हैं।

18

कठोर आहार

इब्रानियों 5:11-14 पढ़ें

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को यीशु मसीह महायाजक के बारे में बता रहा था। वह बताता है कि यीशु मसीह पुराने नियम के हारून के क्रम का याजक नहीं है। वह एक अलग क्रम के हैं। मलकिसिदिक के क्रमानुसार याजक के रूप में यीशु ने देह धारण किया और भविष्यद्वक्ताओं के वचनों के अनुसार हमारे पापों के लिए बलिदान हो गया। मूसा की व्यवस्था या इसकी जरूरतों के बगैर, वह हमें उद्धार उपलब्ध करवाता है।

यह सच यहूदियों की समझ से परे था। परमेश्वर हारून के याजकपन को उकदम समाप्त कैसे कर सकता है? परमेश्वर के पुत्र कैसे हो सकता है। परमेश्वर मनुष्य का रूप कैसे धर सकता है? परमेश्वर मर कैसे सकता है? यीशु की मृत्यु उद्धार कैसे दिला सकती है? मूसा की व्यवस्था के अलावा और कहीं से उद्धार कैसे आ सकता है? इब्रानियों का लेखक समझने की कोशिश करता है कि यहूदी मन के लिए इन सैद्धान्तिक सत्यों को समझना कितना कठिन रहा होगा। उसने कहा कि उन्हे बताने के लिए उसके पास बहुत कुछ था परंतु वे सीखने में धीमे थे।

स्वाभाविक तौर पर, यह 'सीखने में धीमापन' इसलिए नहीं था कि वे वास्तव में सीखने में असमर्थ थे। हमें पद 12 में कहा गया है कि उन्हे इस समय पढ़ाने लायक हो जाना चाहिए था। इससे हम समझ सकते हैं कि पाठक इन सत्यों को पूरी तरह से समझ पाने के योग्य थे। समस्या यह थी कि वे अपने पुराने तरीकों को अभी भी पकड़े हुए थे। बचपन से ही उन्हे मूसा की व्यवस्था के अनुसार सिखाया गया था। अभी तक जो उन्हे सिखाया गया था, उसे छोड़ना उनके लिए मुश्किल था।

पद 12 में, लेखक अपने पाठकों को बताता है कि परमेश्वर के साथ चलने में उन्हे अब तक तो दूसरों को मसीह के इन सत्यों और याजकपन के बारे में सिखानेवाले बन जाना चाहिए था। परंतु समस्या यह थी कि वे अभी तक मसीह और उसके कार्य की समझ में परिपक्व नहीं हुए थे। प्रभु की सेवकाई को समझने के

मामले में वे अभी भी बच्चों के समान थे। उन्हे अभी भी दूध पिलाने की आवश्यकता थी। (पद 12)

ध्यान दें कि लेखक किस प्रकार आरंभिक सत्यों और धार्मिकता की शिक्षाओं में अंतर करता है। पद 13 में, वह आरंभिक शिक्षाओं की तुलना एक बच्चे से करता है जो अभी भी दूध पी रहा है। वह अपने पाठकों को बताता है कि जैसे बच्चा दूध ले रहा है, वे अभी भी धार्मिकता की शिक्षाओं को ले पाने में सक्षम नहीं हैं। कठोर आहार की तरह, धार्मिकता की शिक्षा परिपक्वों के लिए थी। (पद 14)

यहाँ लेखक के द्वारा पाठकों को कही जाने वाली बात को समझना महत्वपूर्ण है। यह बातचीत एक नये क्रम के महायाजक के बारे में विचार विमर्श के साथ शुरू होती है। ये बातचीत हमारे पापों की क्षमा के लिए यीशु की क्रूस पर की बलिदानी मृत्यु की रोशनी में दिए गए लेखक के कथनों को शामिल करती है। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को बताता आ रहा है कि यीशु मूसा से बढ़कर हैं और बेहतर मार्ग लेकर आए हैं। ये सच यहूदी समझने में कठिनाई महसूस कर रहे थे।

यहूदी व्यवस्था के रिवाज में बढ़े थे। उनके लिए, मूसा की व्यवस्था के अलावा उद्धार संभव ही नहीं था। उनके मन में धार्मिकता का मतलब मूसा की व्यवस्था एवं पूर्वजों की ओर से चली आ रही प्रथा का अधिक से अधिक पालन करना था। इब्रानियों का लेखक धार्मिकता की एक नई शिक्षा दे रहा था। उसके द्वारा बताई जाने वाली धार्मिकता मूसा की व्यवस्था को मानने से हटकर मिलने वाली धार्मिकता थी। उसने एक नए महायाजक की बात कही जो मूसा से बेहतर मार्ग लेकर आया और व्यवस्था के बिना संपूर्ण उद्धार तैयार किया।

हर किसी चीज से बढ़कर, इब्रानियों का लेखक चाहता था कि उसके पाठक उनके लिए मसीह के कार्य को समझें। वह अपने पाठकों को बताना चाहता है कि प्रभु यीशु मसीह उन्हे उद्धार देने के योग्य है जो मूसा नहीं दे सका। उसका कार्य उनके उद्धार और परमेश्वर के साथ सही संबंध के लिए काफी है। उसके कार्य के द्वारा पापों की क्षमा और व्यवस्था के अधीन पड़े लोगों को आराम मिलता है।

हमने देखा कि परिपक्व व्यक्ति वो है जो धार्मिकता की शिक्षाओं को समझ सकता है। वह मसीह के कार्य से संबंधित शिक्षा है जो पिता के साथ हमारे सही संबंध और पापों की क्षमा का आधार है। पद 14 में ध्यान दें, कि परिपक्व व्यक्ति इन शिक्षाओं के द्वारा बुराई और भलाई में अंतर करने के लिए प्रशिक्षित हो जाता है। (पद 14)

पत्री को लिखे जाने के दिनों में विश्वासियों के बीच कई सारी झूठी शिक्षाएँ फैल रही थीं। मसीहियों को वापिस यहूदी मत में लाने की कोशिश करने वाले लोग भी मौजूद थे। उनका विश्वास था कि उद्धार पाने और परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने के लिए जरूरी था कि सब मसीही पहले खतना करवाएँ और मूसा के नियमों को मानें। परिपक्व व्यक्ति यह पहचान सकता था कि ये शिक्षाएँ मूसा की व्यवस्था के बगैर हमें प्राप्त होने वाली मसीह की धार्मिकता की शिक्षाओं से बिल्कुल मेल नहीं खातीं हैं।

इस सच के मामले में जो सच्चाई थी, वह प्रयोग के मामले में भी सच्चाई है। चूँकि वह मसीह के कार्य के द्वारा धार्मिकता की शिक्षा जानता है, एक परिपक्व व्यक्ति अपना पूरा भरोसा और अभिमान मसीह के किए गए कार्य पर डालता है। वह स्वयं के भले कार्यों के द्वारा उद्धार पाने की कोशिश नहीं करता है परंतु मसीह के द्वारा कलवरी क्रूस पर पूरे किये गये कार्य पर विश्वास करता है।

तौभी ध्यान दें, परिपक्व व्यक्ति भले और बुरे में अंतर कर पाने में स्वयं को प्रशिक्षित करता है। यद्यपि हमारी धार्मिकता हमारे कार्यों पर आधारित नहीं है, प्रभु और उसकी धार्मिकता को जानने वाले लोग, स्वयं को प्रभु के मार्ग में चलने का प्रशिक्षण देते हैं। वे ऐसा उसकी प्रसन्नता को पाने के लिए नहीं (प्रसन्नता को वह पहले ही पा चुका है) परंतु उसमें और उसके उद्देश्य में प्रसन्नता महसूस करते हैं। मसीह में आए हुए हर व्यक्ति की इच्छा उसके साथ संबंध में बढ़ना है। वे उसकी सेवा करना और उसकी देह का फलदायक अंग बनना चाहते हैं।

स्वयं को धार्मिकता में प्रशिक्षित करना आसान नहीं है। हमें धार्मिकता का उपहार (क्षमा एवं परमेश्वर के साथ सही संबंध) मिला है, परंतु उसके बाद परमेश्वर के साथ उस संबंध को बनाए रखने के लिए उचित जीवन जीने का कर्तव्य हमारा है। इसमें अक्सर कष्ट आ सकते हैं। इसमें हमारे पापमय शरीर के मोह को त्यागना शामिल है। इसमें परमेश्वर के साथ प्रार्थना और वचन में समय बिताना शामिल है। प्रशिक्षण में कठिन प्रयत्न शामिल है। इसमें रूकावटें और अनुशासन शामिल है। मसीह से हमें मिले उपहार को अब सावधानी से संभालना एवं ताजा करते रहना है। हमें स्वयं को प्रशिक्षित करने एवं परमेश्वर के द्वारा हमें दी गई चीजों का इस्तेमाल करने के लिए बुलाया गया है।

जिस प्रकार हम अपने शरीर को गठित रखने के लिए कसरत करते हैं, हमें धार्मिकता के नए जीवन में चलने का अभ्यास करना है। हमें सिद्ध होते जाना एवं

मसीह के कार्य पर भरोसे एवं विश्वास में मजबूत होना है। हमें आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता में चलने के लिए स्वयं को अनुशासित करना है। हमारे लिए इब्रानियों के लेखक की चुनौती हमें उद्धार से और आगे बढ़ना एवं मसीह की अधिक परिपक्वता का अनुभव करना है। धर्मी जीवन जीने के लिए कठोर आहार का सेवन करना हमें सीखना है।

सोच विचार के लिए:

- इब्रानियों की पत्री के लेखक धार्मिकता के बारे में सीखने में धीमे थे। आत्मा के द्वारा हमें सिखाई जाने वाली बातों को कौन रोकने की कोशिश कर सकता है?
- आप एक विश्वासी के तौर पर कितना बढ़े हैं? पिछले साल हुई बढ़ोतरी के कुछ उदाहरण दें।
- आप एक सिद्ध विश्वासी को कैसे परिभाषित करेंगे? क्या सही सिद्धान्त को पाने के बावजूद बिना वृद्धि के रहा जा सकता है?
- दूध समान वचन और धार्मिकता के कठोर आहार में अंतर क्या है?
- धार्मिकता में बढ़ने के महत्व के बारे में आप क्या सीखते हैं? धार्मिकता में बढ़ना किन किन चीजों की माँग करता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से माँगें कि उससे सीखने के लिए आपका दिल खोले। उससे सीखने और अपने जीवन में उसके उद्देश्य को पूरा करने में रूकावट डालने वाली हर चीज के हटाने की प्रार्थना करें।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह हमें उसमें आनंदित होने एवं उसके साथ चलने में विकास करने के लिए बुलाता है।
- प्रभु से माँगें कि वह आपके दिल में उसके संबंध में अधिक बढ़ने की इच्छा को पैदा करे। उससे पूछें कि धार्मिकता में प्रशिक्षण पाने के लिए क्या क्या करना है।

19

आरंभिक शिक्षाएँ

इब्रानियों 6:1-3 पढ़ें

पिछले अध्याय में, इब्रानियों के लेखक ने इस तथ्य को पेश किया कि इब्री मसीही अभी भी प्रभु में बच्चे थे। वे अपने विश्वास में बढ़े नहीं थे और अभी भी दूध रूपी वचन को पीने में लगे थे। वे धार्मिकता की शिक्षाओं को निपटने के लिए तैयार नहीं थे।

यहाँ, अध्याय 6 के पहले तीन पदों में, हमें दूध रूपी वचन (आरंभिक शिक्षाएँ) एवं कठोर आहार (धार्मिकता के बारे में बातें) के अंतर को स्पष्ट रूप से समझ पाते हैं। (इब्रा. 5:12-13)

पद 1 में ध्यान दें कि लेखक अपने पाठकों को मसीह के बारे में आरंभिक शिक्षाओं को छोड़ने एवं परिपक्व होने की चुनौती देता है। पहले पहल यह पद अजीब सा लग सकता होगा, परंतु आइए इसे ध्यान से देखें।

छोड़ने का तात्पर्य भूलना नहीं है। नौजवान युवक अथवा युवती घर को भले ही छोड़ दें, घर में मिली हुई शिक्षाओं और प्रशिक्षणों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। अपना प्रशिक्षण पूरा करते ही, मैंने विद्यालय तो छोड़ दिया परंतु वहाँ पाई गई शिक्षाओं ने मुझे सदैव प्रभावित किया है। इब्रानियों के लेखक के उद्देश्य को समझने की कोशिश में लगे हमें यह सिद्धांत हमेशा हमारे मन में रखना है। जब हमें मसीह के बारे में आरंभिक बातों को छोड़ने को कहा गया तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमें इन शिक्षाओं को त्यागना अथवा इंकार करना है। विचार यह है कि इस शिक्षा की मूलभूत बातों से ऊपर उठने से सिद्धता की ओर कदम उठता है।

कल्पना करें कि एक कारीगर एक घर बनाना चाहता है। वह गड्ढ़ा खोदता है, पक्की सीमेंट की नींव डालता है और उस कार्य को पूरा किए बिना वहाँ से चला जाता है। क्या यह मूर्खता नहीं होगी? वह क्यों पक्की नींव डालकर, उस पर आगे निर्माण नहीं करना चाहेगा? नींव मात्र एक शुरूआत है। मसीह के बारे में हमें मिली

शिक्षा केवल नींव है। इन शिक्षाओं को हमें कभी भूलना नहीं है। यह मसीह के कठोर सच पर टिकी हैं। वह कौन है और उसने क्या किया, इसी पर हमें अपना जीवन बनाना है। हमें यहाँ रूकना नहीं है। हमें नींव से आगे सिद्धता की ओर बढ़ना है। आप प्रभु के बारे में सारा ज्ञान पाने के बावजूद भी सिद्ध हुए बिना रह सकते हैं। आप पूरी बाइबल को अंदर बाहर पूरा जानने के बावजूद सिद्ध हूए बिना जी सकते हो। सिद्धता हमें मिलने वाले ज्ञान पर निर्भर नहीं होती है। ज्ञान तो वो नींव है जिस पर हम बनाना शुरू करते हैं और यह महत्वपूर्ण है परंतु इससे सिद्धता प्रमाणित नहीं होती है।

यहाँ लेखक किस आरंभिक शिक्षा की बात कर रहा है? शायद लेखक यहाँ कलीसिया के आधारभूत सिद्धांतों की बात कर रहा है। हमें पद 1 में कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

इब्रानियों का लेखक इन आरंभिक शिक्षाओं में मसीह के बारे में निर्देशों को शामिल करता है। दूसरे शब्दों में, यीशु कौन है और वे क्या करने आए? यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है परंतु आधारभूत है। हमें सच की इस नींव पर बनाते हुए सिद्धता की ओर जाना है। आप, यीशु कौन है और क्या करने आए, को जानने के बावजूद भी बिना सिद्धता पाए रह सकते हैं। कई सारे मसीही प्रभु यीशु के बारे में कई सारी सही चीजें जानते हैं परंतु आज भी अपने विश्वास में सिद्ध नहीं हो पाए हैं।

पद 1 "मरे हुए कामों से मन फिराने की नींव" दुबारा नहीं डालने के बात कर रहा है। मन फिराव का सिद्धांत भी बहुत महत्वपूर्ण है। हमस ब मृत्यु की ओर ले जाने वाले मार्ग में थे। हमारा पाप हमें पवित्र परमेश्वर से अलग कर रहा था। केवल हमारे पापों से पश्चाताप करने एवं प्रभु यीशु के कार्य पर विश्वास करने से ही हम क्षमा जान सकते एवं परमेश्वर की संतान बन सकते हैं। इस मन फिराव के बगैर उद्धार संभव नहीं है। यह भी कलीसिया की आधारभूत शिक्षा है परंतु आरंभिक शिक्षा है। आप मन फिराने के बावजूद भी अपने विश्वास में बच्चे बने रह सकते हैं।

पद 1 में एक दूसरी आरंभिक शिक्षा परमेश्वर में विश्वास की शिक्षा है। यह पश्चाताप से जुड़ी है। जब हमम न फिराते हैं तो हमें पाप से मुड़कर विश्वास में परमेश्वर की ओर फिरना जरूरी है। हम उसे अपनी आँखों से नहीं देख सकते हैं परंतु हमें विश्वास करना जरूरी है। अक्सर हमें केवल उसके वचन की जरूरत होती है। हमें उस पर विश्वास और उसकी बातों पर भरोसा करना है। इसके लिए हमें विश्वास चाहिए। परमेश्वर में विश्वास की यह शिक्षा भी बहुत महत्वपूर्ण है, परंतु

यह भी आरंभिक शिक्षा है। उद्धार के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना केवल एक शुरूआत है। हमें विश्वास की इस नींव पर बनाना है जिससे हम सिद्ध बन सकें।

पद 2 में दूसरी आरंभिक शिक्षा है बपतिस्मा। बपतिस्मा प्रभु यीशु की आज्ञा है। वह बपतिस्मा के द्वारा हमें अपना विश्वास दिखाने को बुलाता है। हम जानते हैं कि बपतिस्मा पाने के बाद भी एक विश्वासी सिद्धता को पाए बिना जीता रहे। बपतिस्मा स्वयं में अंतरिम नहीं है। बपतिस्मा का यह निर्देश भी आरंभिक है परंतु हमें इस नींव पर बनाना है जिससे हम परमेश्वर की इच्छानुसार बढ़ सकें।

हाथ रखना एक और आरंभिक शिक्षा है जो पद 2 में लिखी है। यहाँ हाथ रखने के बारे में क्या लिखा गया है? इसे समझने के लिए हमें 1 तिमु. 4:14 की ओर जाना पड़ेगा। पौलुस तिमुथियुस से कहता है:

उस वरदान को, जो तुझमें है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, इंकार न कर।

वचन में, हाथों का रखा जाना आत्मा के प्रकटीकरण के साथ होता दिखाया गया है। अक्सर विश्वासी पर प्राचीनों के द्वारा हाथ रखने पर आत्मिक वरदान मिलते थे। कभी कभार लोग हाथों के रखे जाने पर चंगाई पाते थे। जब हम हाथों को रखने की बात करते हैं तो उसका मतलब सशक्तिकरण अथवा बल देना है। सेवकाई के लिए बल एवं शक्ति का मिलना महत्वपूर्ण है। हमें कभी भी अपनी शक्ति के साथ सेवकाई नहीं करनी चाहिए। परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ में सेवकाई करने को बुला रहा है। परंतु हमें यह भी ध्यान रखना है कि हम हमें आवश्यक हर आत्मिक वरदान को हम पा सकते हैं और फिर भी मसीह में बिना सिद्ध हुए जीवन जी सकते हैं। वरदान प्राप्त स्त्री एवं पुरूष भी पाप और परीक्षा में गिर पड़ते हैं। वे परमेश्वर के लिए बड़ी सामर्थ के साथ इसतेमाल किए जाते हैं परंतु अभी तक सिद्धता के उस बिन्दु तक नहीं पहुँच पाएँ है जहाँ वे पाप पर जय पा सकें। वरदान एवं सशक्तिकरण सेवकाई के लिए महत्वपूर्ण हैं। तौभी, कभी न सोचें कि परमेश्वर ने हमें विशेष तौर का वरदान और योग्यता दी है इसलिए हम कभी नहीं गिर सकते। कभी भी सामर्थ को सिद्धता न समझें। हाथों का रखे जाना और आत्मा का सशक्तिकरण केवल शुरूआत है। यह भी आरंभिक शिक्षाओं की श्रेणी में आते हैं। हमें इस नींव रूपी शिक्षा पर निर्माण करना है।

सूची में अगली आरंभिक शिक्षा मृतकों के पुनरूत्थान एवं अनंत न्याय का सिद्धांत है। इस बात को जानना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि एक दिन आ रहा है जब

यीशु मसीह दुबारा आएँगे। वे मृतकों को जीवित करेंगे और उन्हे अपने अपने कार्यों का हिसाब देने के लिए बुलाएँगे। प्रभु यीशु पर भरोसा रखने वाले बचाए जाएँगे और उसके साथ हमेशा हमेशा के लिए रहेंगे। उसका इंकार करने वाले उससे हमेशा के लिए अलग कर दिए जाएँगे। इस सच की वास्तविकता परमेश्वर के साथ हमारी चाल की अगुवाई करे। हमें हर दिन इस बात को जानकर जीना है कि प्रभु न्याय के लिए आ रहे हैं। मृतकों के पुनरूत्थान और हिसाब देने का दिन आएगा। यह सच महत्वपूर्ण है यदि हम परमेश्वर की सेवा की सिद्धता में बढ़ना चाहते हैं।

इब्रानियों के लेखक के द्वारा कही जानी बात को समझना जरूरी है। हमारी आज की कलीसिया ने परमेश्वर के साथ हमारी आत्मिक चाल में इन सिद्धांतों के महत्व को कितना बल दिया है? हम पासवानों को सैद्वान्तिक आधार पर चुनते हैं। हम जानना चाहते हैं कि लोग क्या विश्वास करते हैं और उसके अनुसार उनसे निपटते करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम क्या विश्वास करते हैं परंतु इससे भी सिद्धता की प्रमाणिकता नहीं मिलती है।

लेखक किसी भी तरीके से कठोर सैद्धांतिक सत्यों को कम नहीं आँक रहा है। पढ़ने से पहले अक्षरमाला का सीखना जरूरी होता है। एक घर को सदैव दृढ़ नींव पर बनाया जाना चाहिए। सही सिद्धांतों का होना बहुत जरूरी है। आप कमजोर नींव पर इमारत नहीं बना सकते हैं। परंतु, सच को जानना मात्र हमें सिद्ध नहीं करता है। मैं ऐसे स्त्री पुरूषों से मिला हूँ जिनकी मसीह में सिद्धता को देखकर मैं लज्जित हुआ हूँ। उन्हे मुझे मिला प्रशिक्षण नहीं मिला। उनके पास दृढ़ सिद्धांतों की नींव नहीं थी। परंतु परमेश्वर के साथ चलने और उसे अनुभव करने में वे मुझसे कहीं आगे थे।

जैसा मैंने पहले कहा, पढ़ने से पहले अक्षरमाला को सीखना जरूरी होता है। इस पुस्तक को पढ़ते समय आप अब अक्षरमालाओं की चिंता नहीं कर रहे हैं। वे आपका ऐसा भाग बन चुकी हैं कि अब आपको इसे पढ़ने के लिए अ-ब-स-द पर निर्भर रहना नहीं पड़ेगा। हममें से कार चलाना जानने वाले लोग, कार सीखने के उन प्रारंभिक महिनों को याद कर देखें। ऐसा लगता था कि बहुत सारी चीजों पर ध्यान रखना पड़ेगा। हमें जानना होता था कि एक्सिलेटर पर कितना दबाव डालें, या स्टीयरिंग को कितना घुमाएँ, या कब गियर बदलें। परंतु धीरे धीरे हम इससे इतना परिचित हो गये कि अब हमें उनके बारे में सोचना भी नहीं पड़ता है। हमने गाड़ी चलाने के तरीकों के बारे में सोचना बंद कर दिया, बस गाड़ी चलाने लगे। इब्रानियों का लेखक भी यही बात बता रहा है। उन्हे आरंभिक शिक्षाओं को ऐसे छोड़ना है

जैसे पढ़ना सीखने वाला अ-ब-स-द को छोड़ देता है। ये शिक्षाएँ उनका ऐसा हिस्सा बन जाएँ कि उन्हे इसके बारे में सोचना भी न पड़े। वे हमारे हर निर्णय एवं विचार का हिस्सा बन चुकी हैं। उन्हे हमारी सांस की तरह हमारा भाग बनना है।

परमेश्वर ऐसे लोगों को ढूँढ़ रहा है जिन्हें सच की पक्की नींव डाली है। वह उन्हे खोज रहा है जो उस नींव पर निर्माण करते रहना चाहते हैं। अब चूँकि आपको सच पता है, परमेश्वर चाहता है कि आप इसके बारे में कुछ करें। परमेश्वर केवल सिद्धांतों में अच्छे लोगों को नहीं तलाश रहा। वह उन्हे खोज रहा है जो उस नींव पर बनाना चाहते हैं। जब हम केवल सैद्धांतिक बातों पर ध्यान लगाते हैं तो परमेश्वर के असली उद्देश्य से भटक जाते हैं। परमेश्वर हमें सच इसलिए नहीं देता है कि इसे किसी पीठिका पर रखकर इसकी आराधना शुरू कर दें, परंतु इसलिए देता है कि हम इसे हमारे संबंध में सिद्धता लाने के लिए नींव के पत्थर की तरह इस्तेमाल कर सकें। और इब्रानियों का लेखक कहता है, "यदि परमेश्वर चाहे तो हम ऐसा ही करेंगे।" (पद 3)

सोच विचार के लिए:

- एक अच्छी नींव कितनी महत्वपूर्ण है?
- क्या सच की एक नींव पा लेना हमारे सिद्ध हो जाने का प्रमाण है? इस विश्वास के फंदे में गिर पड़ना कितना आसान है कि सिद्धांतों को जानना सिद्धता लेकर आता है?
- आपकी आत्मिक चाल का केन्द्र क्या रहा है? क्या आप नींव पर की फंसे हैं या उस नींव पर निर्माण करते जा रहे हैं? कुछ उदाहरण दें कि आप हाल ही में कैसे बढ़े।

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से कहें कि उसके वचन में लिखे सच पर नींव डालने में आपकी मदद करे।
- प्रभु से उन प्राथमिकताओं को देखने में आपकी मदद करने को कहें जो आपने इब्रानियों की इस भाग में सीखा है।
- प्रभु से आपके जीवन का वो भाग दिखाने को कहें जहाँ आपको सिद्धता की जरूरत है। अपना दिल उसके लिए खोलें और उससे कहें कि वो आपको जीवन के उस भाग में सिद्धता की जगह पर पहुँचाए।

20

भटक जाना

इब्रानियों 6:4-8 पढ़ें

यह पद्यांश लंबे समय से विवाद का मुद्दा रहा है। इन महत्वपूर्ण पदों की व्याख्या करने में ज्ञाताओं के मत विभिन्न हैं। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को उन लोगों के बारे में बता रहा है जो गिर चुके हैं और उन्हें कभी भी वापिस मन फिराव की ओर नहीं लाया जा सकता है। मेरा मानना है कि ये पद उन पर लागु होते हैं जिनके पास मसीही सिद्धांतों और प्रयोगों का पूरा ज्ञान एवं अनुभव है परंतु कभी भी मसीह के सच्चे विश्वास में नहीं आए। हमारी कलीसियाएँ ऐसे लोगों से भरी हुई हैं। बाहर से वे सच्चे विश्वासियों की ही तरह दिखते हैं परंतु उनके दिल कभी भी नहीं बदले। ध्यान दें कि इब्रानियों का लेखक इनके बारे में क्या लिखता है।

वे कभी प्रकाशमान थे

हम पद 4 में देखते हैं कि ये व्यक्ति कभी प्रकाशमान थे। प्रकाशमान होना उद्धार या नया जन्म पाना मात्र नहीं है। प्रकाशमान होना ज्ञान के स्तर तक बढ़ना है। इन लोगों ने सुसमाचार का सच सुना और उसे समझे। वे दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिए भी सक्षम थे परंतु उन्होने कभी भी स्वयं इसकी क्षमा करने और नया जीवन देने की सामर्थ को नहीं पहचाना।

स्वर्गीय वरदानों को चखा

इन व्यक्तियों से संबंधित दूसरी बात हम पाते हैं कि इन्होने स्वर्ग के वरदानों को भी चखा था। ध्यान दें कि इन व्यक्तियों ने स्वर्ग के वरदानों को मात्र चखा था। यूनानी भाषा में प्रयुक्त शब्द का अर्थ कोशिश करना, अथवा किसी चीज को जाँचकर देखना। प्रकाशनमान होने के बाद, इन्होने यीशु की कही गई बातों की कोशिश करने की सोची। शायद कुछ समय के लिए इन्होने प्रभु की उपस्थिति, उसकी खुशी, उसकी शांति को महसूस किया होगा। कुछ लोगों ने अपने जीवन में

बदलाव भी देखा होगा। मती 13 के बीज बोने वाले के बीज की तरह, जब परीक्षाएँ और विरोध आए तो वे बने नहीं रह पाए। इन लोगों के पास प्रभु का कुछ अनुभव प्राप्त है। प्रभु ने उन्हे विशेष रूप से छुआ है। परमेश्वर अविश्वासी को भी उसके दिल में शांति और खुशी है। जो उसके बच्चे नहीं हैं, उन्हे भी वह भावनात्मक एवं शारीरिक चंगाई दे सकते हैं। वह स्वपनों एवं दर्शनों के द्वारा उनसे बात कर सकता है। अपने राज्य के किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह उनका इस्तेमाल भी कर सकता है। विशेष तौर पर परमेश्वर का स्पर्श पाने वाले सभी वास्तव में परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते हैं। ये सब लोग उत्सुक स्वाद चखने वाले लोग हैं परंतु वास्तव में वे प्रभु यीशु को समर्पित या नया जन्म पाए हुए नहीं होते हैं।

पवित्र आत्मा के भागी

ध्यान दें, ये लोग पवित्र आत्मा के भागी हैं। हमें समझना है कि प्रभु केवल उन्ही का इस्तेमाल करने के लिए सीमित नहीं होते जो उनके हैं। परमेश्वर ने पुराने नियम में इस्राएलियों को अपनी सामर्थ दिखाने के लिए फिरौन का उपयोग किया। योना को बचाने के लिए एक मच्छ का इस्तेमाल किया। यह संभव है कि परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल होने के बावजूद हम पाप में नाश हो जाएँ। हम यहाँ देखते हैं कि ये लोग पवित्र आत्मा के सेवकाई में भागी थे। उन्हे पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के राज्य की किसी उपलब्धि के लिए इस्तेमाल किया गया है। शमुएल 19 में, हम देखते हैं कि किस प्रकार शाऊल और उसके साथियों ने परमेश्वर के अभिषिक्त दाऊद को मारने का षड्यंत्र बनाया। जब शाऊल के लोग वहाँ पहुँचे जहाँ दाऊद था, तो पवित्र आत्मा ने उन्हे बल दिया और वे भविष्यद्वाणी करने लगे। (1 शमुएल 19:20) ये कुछ लोग दुष्टता करने को तैयार थे जिनके जीवन में भी पवित्र आत्मा का कार्य देख सकते हैं। यीशु मसीह जब धरती पर थे तो कई लोगों को पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा चंगाई दी। ऐसे कई लोग पवित्र आत्मा के द्वारा छुए गए परंतु उन सब लोगों ने अपना दिल या जीवन प्रभु को समर्पित नहीं किया। वे आशीष पाकर चले गए। यह भी संभव है कि हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा की सेवकाई की गवाही तो दे सकते हैं परंतु यीशु को कभी व्यक्तिगत तौर पर जानें ही ना। पुराने नियम का इतिहास बड़ी सामर्थ से उन बातों को बताता है जो परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा इस्राऐलियों के मध्य किया तौभी उन्होने उसे ठुकरा दिया।

वचन की भलाई और आने वाले युग की शक्तियों को चखा

इब्रानियों का लेखक जिन लोगों के बारे में यहाँ कह रहा है, उन्होने वचन की भलाई और आने वाले युग की शक्तियों को भी चखा है। उन्होने परमेश्वर के वचन

की शिक्षाओं को सराहा है और उनमें प्रसन्न हुए हैं। और उससे भी बढ़कर, उन्होंने आने वाले युग की शक्तियों को भी चखा है। उन्होंने शत्रुओं के ऊपर परमेश्वर की सामर्थ को देखा है। उन्होंने देखा है कि यह सच वास्तव में लोगों को पाप और दुष्टता से छुड़ा सकता है। उन्होंने बुराई पर परमेश्वर के राज्य की सामर्थ के प्रकटीकरण को देखा है। और तो और, वे स्वयं भी इसी वचन की सामर्थ से बदले थे। इस सबके बावजूद, जो कुछ उन्होंने देखा या सुना, सबसे मुँह मोड़ चले।

हमें ऐसा आभास होता है कि ये लोग जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, वे समझते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और प्रभु एवं उसके उद्धार का इंकार करते हैं। वे सुसमाचार सुनते और मन से इसे समझते हैं परंतु इसकी बुलाहट का इंकार करते हैं। उन्होंने अपने चारों ओर के लोगों में सुसमाचार की सामर्थ को देखा है और खुद के जीवन में भी इसके स्वाद को चखा है परंतु इसका विरोध करते हैं। इन लोगों को सुसमाचार स्वीकार करने एवं इसे समझने का पूरा अवसर मिला परंतु वे इससे दूर चलते चले गए।

चूँकि उन्होंने प्रभु एवं पश्चाताप की उसकी बुलाहट का विरोध किया, उसके साथ सही संबंध की हर आशा को उन्होंने खो दिया। इब्रानियों का लेखक कहता है कि वे गिर पड़े। उपयुक्त शब्द का अर्थ भटक जाना अथवा एक तरफ मुड़ जाना है। दूसरे शब्दों में, प्रभु के हर ज्ञान एवं अनुभव के बावजूद, उन्होंने मुड़ जाने का निर्णय लिया और अपने रस्ते चलते बने।

पद 6 में ध्यान दें कि इन लोगों ने मनुष्य के पुत्र को दुबारा क्रूस पर चढ़ाया और उसे सार्वजनिक तौर पर निंदित किया। जब यीशु मसीह इस धरती पर आए तो उन लोगों ने उसे त्याग दिया जिसके लिए वो आए थे। उन्होंने ही उसे ठुकरा दिया। ठुकराने वालों में वो भी हैं जिन्हें प्रभु ने चंगाई दी। दूसरों को प्रभु ने अपने वचन से सामर्थ के साथ छुआ और वे जानते थे कि उनके वचनों में परमेश्वर की सामर्थ थी। परंतु अपने ज्ञान अथवा जानकारी के विपरीत, उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाना स्वीकार किया। उन्होंने उसे सबके सामने क्रूस पर ऊँचा उठाया। यीशु की सार्वजनिक रूप से निंदा की गई। ये लोग प्रभु एवं उद्धार के प्रस्ताव को ठुकराने के द्वारा वे ऐसा ही करते हैं। वे उन लोगों के समान है जिन्होंने अपने जीवन में उसके कार्यों को चखा परंतु वे ही उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए चिल्लाए।

अज्ञानता में एवं उसके ज्ञान को जानने एवं अनुभव करने के बाजूद जानबूझकर प्रभु को स्वीकार नहीं करने में अंतर है। प्रभु को जानने से पहले पौलुस ने कलीसिया

को बहुत चोट पहुँचाई परंतु उसे क्षमा कर दिया गया क्योंकि उसने वह सब अज्ञानता एवं अविश्वास में किया था। हम 1 तिमु. 1:13 में पढ़ते हैं:

यद्यपि कभी मैं ईशनिन्दक, सताने वाला और हिंसक व्यक्ति था, परंतु मुझ पर करूणा की गई क्योंकि मैने वह सब अज्ञानता और अविश्वास में किया था।

ये केवल उन लोगों का विषय नहीं है जो इस पद्यांश में दिख रहे हैं। उन लोगों ने सच को पहचाना है। कुछ लोगों को तो परमेश्वर के वचन और पवित्रात्मा का अलौकिक अनुभव भी मिला। परंतु इन्हे क्षमा नहीं किया जा सकता है। वे अज्ञानता और अविश्वास में ऐसा नहीं कर रहे हैं, इसमें उनका विरोध शामिल है। वे सच को जानते हैं परंतु इससे दूर चले गए।

हम सब पाप में गिरे और भटक चुके हैं। पतरस ने यीशु को जानने के बावजूद, यीशु को तीन बार इंकार किया। उसे भी क्षमा कर दिया गया। हमने भी यह जानने के बावजूद कि हम गलत कर रहे हैं, कितनी ही बार, हम पाप में गिरे हैं? प्रभु यीशु उसके पास आने वाले सबको क्षमा करना चाहते हैं। पतरस ने बड़ी जल्दी पहचान लिया कि उसने गलत किया है और अपने पाप के कारण रोने लगा। प्रभु ने उसे क्षमा कर दिया। यहाँ इब्रानियों का लेखक कमजोरी की वजह से पाप में गिरने वालों की बात नहीं कर रहा है।

अपने कहे गए कथन को और स्पष्ट करने के लिए, लेखक अपने पाठकों को दो प्रकार की जमीन के बारे में बताता है। एक, ऐसी जमीन जो पानी पीती है और अच्छी फसल उत्पन्न करती है। एक और जमीन है जो केवल ऊँट कटारे उत्पन्न करती है। दूसरे प्रकार की जमीन अनुपयोगी है। इस पर शापित होने और जलाए जाने का खतरा रहता है। बरसात दोनो प्रकार की जमीनों पर होती है परंतु एक अच्छी फसल और दूसरी बुरी देती है। पहले प्रकार की जमीन पर खेती होगी और परमेश्वर की आशीष मिलेगी जबकि दूसरे प्रकार की जमीन को जला दिया जाएगा।

सच्चे विश्वासी अच्छी फसल पैदा करने वाली जमीन के समान है। परमेश्वर के आत्मा का कार्य परमेश्वर के राज्य की भलाई के लिए उनमें फल पैदा करता है। परंतु अविश्वासी परमेश्वर के कार्य को ठुकराते एवं राज्य के लिए बिलकुल अनुपयोगी, केवल ऊँट कटारे ही उत्पन्न करते हैं। सच्चे विश्वास का प्रमाण फल में दिखता है। कई लोग परमेश्वर का अनुभव करते हैं परंतु उनके द्वारा उत्पन्न फल ही निर्धारित करते हैं कि वे उसके विश्वास में आए हैं या नही।

सोच विचार के लिए:

- क्या आप ऐसे अविश्वासी के मिले हैं जो सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं परंतु कभी भी अपने स्वयं के जीवन में उन्होने उस संदेश की सामर्थ को अनुभव नहीं किया है? समझने और स्वीकार करने में क्या अंतर है?
- ''चखने'' और पूर्णत: अनुभव करने में क्या अंतर है?
- क्या परमेश्वर अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए अविश्वासी का उपयोग कर सकते हैं? वर्णन करें।
- क्या परमेश्वर अविश्वासी को उसके पापों पर जय दिला सकते हैं? क्या इसका मतलब है कि वे परमेश्वर की संतान है?
- पाप में गिरने एवं परमेश्वर को ठुकराने के पाप में क्या अंतर है?
- हमारे दिलों और जीवन में पवित्र आत्मा की भूमिका क्या है? पवित्र आत्मा एवं उसके कार्य के लिए समर्पित करना महत्वपूर्ण क्यों है?
- यह अध्याय हमें सच्चे विश्वास के क्या प्रमाण देता है?

प्रार्थना के लिए:

- सुसमाचार के प्रति आपके दिल को मृदुल करने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- प्रभु से कहें कि वो आपको उद्धार की निश्चितता दे। प्रभु को आपको यह दिखाने को कहें कि आप उन लोगों के समान नहीं हैं जो सच को जानते तो हैं परंतु उसके बच्चे नहीं हैं।
- क्या आपका कोई मित्र या रिश्तेदार है तो सच को जानता तो है परंतु अपना मुख फेर चुका है। प्रार्थना में कुछ समय बिताएँ कि अधिक देरी होने से पहले ही परमेश्वर उनके दिलों को तोड़े।

21

दृढ़ एवं सुरक्षित आशा

इब्रानियों 6:9-20 पढ़ें

पिछले मनन में, इब्रानियों के लेखक ने उन लोगों के बारे में बताया जिन्होने परमेश्वर का अनुभव तो किया है परंतु कभी उसकी ओर नहीं मुड़े और हमेशा के लिए दूर हो गए। हमारे लिए चकित होना बहुत आसान होगा यदि हम भी इन गिरने वालों की श्रेणी में हों। क्या हम निश्चित हो सकते हैं कि हमारा विश्वास असली है और हम इब्रा. 6 में कहे गए व्यक्तियों के समान नहीं हैं। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को निश्चित करता है कि मसीह में उनकी बड़ी आशा है।

पद 9 में, लेखक अपने पाठकों को बताता है कि उसे पूरा भरोसा है कि वे उन लोगों की तरह नहीं हैं जिनके बारे में उस पद में लिखा गया है। उसे उनके बारे में अच्छी चीजों की पूरी आशा थी। उसे पूरा भरोसा था कि जिनको वह पत्री लिख रहा था, वे लोग सच्चे विश्वासी थे जो अपने उद्धार की पूरी आशीषों को पाएँगे। ऐसा कहकर वह दिखाता है कि हम भी अपने उद्धार की निश्चितता पा सकते हैं।

वह पद 10 में पाठकों को याद दिलाने के लिए परमेश्वर के न्याय के बारे में कहना जारी रखता है। परमेश्वर उनके प्रति न्यायी और सही रहेगा। उसने उनके कार्यों और उसके प्रति उनके दिलों को देखा है। ध्यान दें कि किस प्रकार उनका प्रेम उनके द्वारा दूसरों के लिए की गई मदद में दिखा। हमें यह भी ध्यान रखना है कि उन्होने अपने उन भले कामों से उद्धार नहीं पाया था। परंतु ये कार्य उनके द्वारा अनुभव किए गए सच्चे उद्धार का परिणाम और प्रमाण थे। परमेश्वर ने अपने राज्य के लिए उनके प्रयत्नों को देखा और उन्हे उपहार देगा। उनके उद्धार का प्रमाण प्रभु की सेवा और प्रेम में दृशित था।

उनके उद्धार में उनकी भरोसे को निश्चित कर, इब्रानियों अपने पाठकों को चुनौती देता है कि वे अपनी आशा को सुरक्षित करने के लिए प्रभु की सेवा में डटे रहें। वह जीवन शैली और मसीह में आशा के बीच एक संबंध बनाता है। परंतु सावधान रहें, हम कभी न सोचें कि हमने भले कामों से उद्धार नहीं पाया है। हमने

भले कामों से उद्धार नहीं पाया, परंतु भले काम परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का सकेंत हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि मैं प्रभु का हूँ तो मेरा जीवन बदल जाता है। मैं कभी भी पुराना व्यक्ति नहीं रहूँगा। जब मैं एक नम्र दिल का प्रमाण देखूँ तो मैं निश्चित हो सकता हूँ कि परमेश्वर के साथ मेरा संबंध गहरा है। प्रभु की सेवा और सम्मान करने में हमारे जीवन का बदलाव और हमारे दिल की इच्छा हमे मिले उद्धार का शक्तिशाली संकेत हो सकती है। कल्पना करें कि आप अपने जीवन को जाँचते हैं और उसमें प्रभु की सेवा या सम्मान करने की कोई इच्छा नहीं पाते हैं। आप कैसे निश्चित हो सकते हैं कि आपको मिला हुआ उद्धार असली है या नही।

पद 11 में सच्चे उद्धार का एक और प्रमाण है। लेखक अपने पाठकों को बताता है कि वे प्रभु की सेवा और संतों से प्रेम में निरंतर बने रहें। "हम चाहते हैं कि तुममें से हर कोई प्रभु के प्रति सेवा में अडिग बना रहे" वह उनसे कहता है। हमने पद 4-8 में हमने उन लोगों को देखा जो कुछ समय तक प्रभु के साथ चले और फिर गिर पड़े। काँटों के बीच उगे बीज की तरह, ये लोग जल्दी ही मुर्झा गए और फल उत्पन्न नहीं कर पाए। परंतु, जो प्रभु के हैं वे अंत तक बने रहेंगे। वे भटक या बीच रास्ते में गिर सकते हैं परंतु वे दुबारा उठ खड़े होंगे और चलना शुरू कर देंगे। परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को केवल हमारे सेवा कार्य ही नही, वरन् अंत तक उन कामों में डटे रहने से भी दर्शाते हैं। पाठक को पद 12 में परमेश्वर के साथ चलने में आलस नहीं दिखाने और विश्वास के द्वारा अपने अधिकार को पाने वालों का अनुकरण करने की चुनौती दी जाती है। सच्चा विश्वास अंत तक विश्वासयोग्य एवं सतत् सेवा के द्वारा प्रकट होता है।

हमारे उद्धार की वास्तविकता के इन आंतरिक प्रमाणों के अलावा, एक और शक्तिशाली निश्चितता उपलब्ध है। इब्रानियों का लेखक परमेश्वर एवं उसके वायदों को उद्धार की सर्वाधिक आशा बताता है। इस बिन्दु को प्रमाणित करने के लिए इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों के पास पुराने नियम का उदाहरण लेकर आता है। वह उन्हे अब्रहाम को एक बड़ा राष्ट्र बनाने के परमेश्वर के वायदे की याद दिलाता है। जब परमेश्वर ने अब्रहाम के साथ वाचा बाँधी, उसने स्वयं से वाचा बाँधी क्योंकि उनसे बड़ा और कोई नहीं था। वह उसे आशीष देने और कई वंशजों को देने का वायदा देता है। (पद 14 देखें) ऐसा अचानक नहीं हुआ। अब्रहाम को संदेह था। (उत्पति 17:17) उसकी पत्नी सारा इस वायदे पर हँसी। (उत्पति 18:12) उसने अपने पति, अब्रहाम को अपनी दासी हाजिरा दी कि उसके द्वारा वायदा पूरा हो। (उत्पति 16:2) परमेश्वर की अपनी योजना थी। परमेश्वर अपने वायदे में

विश्वासयोग्य था और वायदे के मुताबिक सारा को पुत्र दिया। अब्रहाम को संयमी रहना और परमेश्वर के समय का इंतजार करने की जयरत थी। (पद 15) जब वादा पूरा हुआ तो वह बुढ़ा हो चुका था परंतु परमेश्वर अपने वायदे का पक्का रहा।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि जब परमेश्वर ने अब्रहाम से वाचा बाँधी तो उसने स्वयं से वाचा बाँधी थी। स्वयं के नाम से वाचा बाँधकर परमेश्वर ने इसके पुरे होने से संबंधित हर संदेह को दूर कर दिया। (पद 16) परमेश्वर अपना वचन नहीं तोड़ सकता है। मानुषिक तौर पर, अब्रहाम और सारा समझ नहीं पा रहे थे परमेश्वर इस वायदे को पूरा कैसे करेगा। परमेश्वर पर विश्वास और धीरज के साथ उसकी बाट जोहने से ही, वे इसके पूरे होने को देख सकते थे। अब्रहाम को अपना वायदा देकर, परमेश्वर चाहता था कि पूरा संसार उसे जाने। स्वयं की शपथ लेकर, परमेश्वर पूरे संसार में खुद की प्रसिद्धि को दाँव पर लगा रहा था। (पद 17)

इब्रानियों का लेखक पद 18 में बताता है कि परमेश्वर उस पर हमारी आशा को प्रोत्साहित और निश्चित करने के लिए दो अपरिवर्तनीय चीजों के बारे में बताता है। पृष्ठभूमि संकेत देगी कि ये दो 'अपरिवर्तनीय चीजें' उसका सवभाव और उसका वचन है। परमेश्वर ने अब्रहाम से वाचा बाँधी कि वह उसे पुत्र देने में विश्वासयोग्य रहेंगे। अब्रहाम ने परमेश्वर पर विश्वास किया क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर कौन है, कि वह झूठ नहीं बोल सकता, कि कुछ भी उसे वायदा पूरा करने से रोक नहीं सकता है। हमारे पास उसका स्वभाव और उसका वचन, दो प्रमाण हैं कि वह अपने वायदे को पूरा करता है।

इब्रानियों का लेखक आत्माओं के लिए हमारी आशा की तुलना लंगर से करता है। (पद 19) जब एक जहाज को लंगर पर कस दिया जाता है तो वह हिलता नहीं है। इसके चारों ओर कितना भी तुफान और लहरें उठें, वह अपनी जगह पर ही रहता है। यही प्रभु यीशु में हमें मिला है। हमें एक दृढ़ और सुरक्षित आशा मिली है। पद 19 में ध्यान दें, यह आशा पर्दे के अंदर, भीतरी कक्ष पर पहुँचती है। यह मंदिर का उल्लेख है। अति पवित्र स्थान पर्दे के अंदर की जगह था जहाँ वाचा का संदूक रखा था। परमेश्वर की उपस्थिति वाचा के संदूक पर थी। जब इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को बताया कि आशा के लंगर ने भीतरी कक्ष में प्रवेश किया है, तो वह बता रहा था कि यह स्वयं परमेश्वर में कसी थी। इससे बड़ा निश्चय और कुछ नहीं हो सकता। लंगर हट नहीं सकता है क्योंकि इसे परमेश्वर ने लगाया है।

इब्रानियों का लेखक उन्हे आशा देता है जो इस बात से चिंतित है कि वे गिर पड़ेंगे। वह उनसे कहता है कि उसने उनमें सच्चे उद्धार के प्रमाण को देखा है। उनके दिल का बदलाव और विश्वास में बने रहने की इच्छा इस बात का संकेत थे कि वे प्रभु के हैं। इससे भी महत्वपूर्ण, उनका विश्वास परमेश्वर के वायदों में दृढ़ कसा हुआ था। अपनी आशा को लंगर में कसने की इससे अच्छी जगह उन्हे कहीं नहीं मिल सकती थी।

सोच विचार के लिए:

- हम कैसे जानें कि हमारा उद्धार सच्चा है? आपको मिले उद्धार का प्रमाण क्या है?
- उद्धार पाने के लिए कार्य करने और उद्धार के परिणामस्वरूप कार्य करने में क्या अंतर है?
- परमेश्वर के साथ हमारी चाल में विश्वास और सतत्ता की क्या भूमिका है?
- हमारी आशा कहाँ कसी है? इससे हमें क्या धैर्य मिलता है?

प्रार्थना के लिए:

- इस निश्चितता के लिए प्रभु का धन्यवाद करें कि आप उसके हैं।
- उसके स्वभाव और वचन में मिली निश्चितता के लिए प्रभु का धन्यवाद करें। धन्यवाद करें कि कुछ भी उसके वायदों को डिगा नहीं सकता है।
- कुछ क्षण उसकी स्तुति करें कि उसने आपको दृढ़ रखा है जिससे कोई आपको उससे दूर नहीं कर सकता है।
- प्रभु से माँगें कि जब भी आप अपने मार्ग में बाधा को पाएँ, वह आपको बड़ा विश्वास और धीरज दे।

22

मलकीसिदिक का याजकपन

इब्रानियों 7:1-28 पढ़ें

इब्रानियों की पत्री में पहले हमने देखा कि प्रभु यीशु मलकीसिदिक की रीति के अनुसार याजक थे। हमने उत्पति 14:18-20 में मलकीसिदिक से मुलाकात की। मलकीसिदिक अब्रहाम से मिला और वापिस लौटते वक्त उसे आशीष दी। अब्रहाम ने अपने युद्ध की लूट में से उसे दशमांश दिया। उसे पद 1 में शालेम का राजा और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक कहा गया है। आइए थोड़ा समय इस व्यक्ति मलकीसिदिक को जानने में लगाते हैं।

मलकीसिदिक शालेम का राजा था। शालेम यरूशलेम का एक शहर था। उस समय यरूशलेम यहूदियों का नहीं था। तौभी वह देश परमेश्वर के लोगों के लिए तैयार हो रहा था। यहूदियों के द्वारा, शहर को अपने कब्जे में लेने से पहले, परमेश्वर का राजा था, मलकीसिदिक, धार्मिकता का राजा। उसने एक याजक एवं शालेम के राजा के रूप में भूमिका निभाई।

मलकीसिदिक सर्वोच्च परमेश्वर का याजक भी था। यद्यपि वह एक इस्राएली नहीं था, वह इस्राएल के यहोवा को जानता, सम्मान करता और सेवा करता था। तौभी उसका याजकपन पुराने नियम की व्यवस्था में वर्णित लेवी की रीति के अनुसार नहीं था। इस बात पर हम बाद में लौटेंगे।

पद 2 में ध्यान दें कि 'शालेम' शब्द का अर्थ है 'शांति।' मलकीसिदिक को शांति का राजा कहा गया है।

पद 3 में, हमें बताया गया है कि मलकीसिदिक के माता पिता नहीं थे। इसमें थोड़ा वर्णन जरूरी है। उत्पति में मलकीसिदिक का विवरण देते वक्त उसके माता पिता का जिक्र नहीं किया गया। इस अर्थ में यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकतर लोगों का वर्णन उनके माता पिता के नाम के साथ दिया गया है। हमें यह नहीं मानना है कि मलकीसिदिक के माता पिता थे ही नही। बस, उनका नाम भविष्यद्वाणीय कारणों की वजह से लिखा नहीं गया।

मलकीसिदिक आने वाले प्रभु यीशु का प्रतीक था। उसका जीवन भविष्यवाणीय था। उसे ''धार्मिकता का राजा'' कहा गया जो यरूशलेम में आएगा। उसे शांति का राजा और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक कहा गया। वह राजा और याजक दोनो था। वह याजक के रूप में हमें परमेश्वर के पास ले जाने आया। वह आत्मिक राज्य को स्थापित करने के लिए राजा के रूप में आया। जिस प्रकार मलकीसिदिक के माता पिता का नाम वचन में नहीं लिखा गया है, उसी प्रकार यीशु मसीह बिना माता पिता के अनंतता में थे। इब्रानियों का लेखक प्रभु यीशु मसीह की तुलना पुराने नियम के मलकीसिदिक से करता है। वह मलकीसिदिक को प्रभु यीशु और उसके पार्थिव जीवन एवं सेवकाई के भविष्यद्वाणीय प्रतीक के रूप में देखता है।

जब अब्रहाम मलकीसिदिक से पुराने नियम में मिलता है, तो उसने अपने युद्ध में की लूट में से हर चीज का दशमांश उसे दिया। (पद 4) अब्रहाम का यह कार्य भविष्यद्वाणीय था। पुराने नियम में याजक ही लोगों से दशमांश लिया करता था। मलकीसिदिक को दशमांश देकर, अब्रहाम उसे याजक सिद्ध कर रहा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मलकीसिदिक लेवी वंश का नहीं है। पुराने नियम में केवल लेवियों को ही याजक की भूमिका निभाने का अधिकार था। परंतु अब्रहाम ने मलकीसिदिक को याजक के रूप में देखा, यद्यपि वह लेवी वंशज नहीं था।

पद 6 में एक और विवरण है जिसे बताना जरूरी है। याद रखें, यहूदी मन में अब्रहाम एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। वह विश्वास का पिता और वास्तव में राष्ट्र का पिता था। पद 6 में ध्यान दें, कि मलकीसिदिक ने अब्रहाम को आशीष दी। मलकीसिदिक एक महान व्यक्ति अब्रहाम को कैसे आशीष दे सकता है? इब्रानियों का लेखक पद 7 में अपने पाठकों को याद दिलाता है कि पुराने नियम में हमेशा बड़ा व्यक्ति छोटे को आशीष देता आया है। पिता अपने बच्चों को आशीष देता है। याजक लोगों को आशीष देता है। इब्रानियों का लेखक यह कहने की कोशिश कर रहा है कि मलकीसिदिक ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो अब्रहाम से बड़ा है। उसके पास राष्ट्र के पिता, अब्रहाम को आशीष देने का अधिकार था। यहाँ हम दुबारा प्रभु यीशु की तश्वीर देखते हैं जो आने वाले हैं। यूहन्ना 8:53 में यह देखना बड़ा ही रोचक है कि यीशु मसीह से यही प्रश्न पूछा भी गया था।

हमारा पिता अब्रहाम तो मर गया, क्या तू उससे भी बड़ा है? दूसरे याजक भी मर गए, तू अपने आप को क्या ठहराता है?

यहाँ इब्रानियों का लेखक इस प्रश्न का बड़ी सटीकता से जबाव देता है। यीशु मसीह, जिसका मलकीसिदिक प्रतीक है, अब्रहाम से भी बड़ा है।

पद 8 में लेखक पुराने नियम के लेवीय याजकपन की तुलना मलकीसिदिक से करना जारी रखता है। लेवीय याजकपन में, पापी मनुष्य ही दशमांश लेते थे जिनके स्वयं के जीवन लघु और मृत्यु तक सीमित थे। यीशु के मामले में, जो मलकीसिदिक की रीति के याजक हैं, वे हमेशा हमेशा के लिए जीवित रहेंगे। उनका अंत नहीं है। वे अनंत याजक है जिनकी सेवकाई का अंत नह होगा। उसने क्रूस पर मृत्यु को जीत लिया है।

ध्यान दें कि जब अब्रहाम मलकीसिदिक से मिला तो उस समय तक लेवी का जन्म नहीं हुआ था। (पद 10) मलकीसिदिक का याजकपन लेवी के याजकपन से पुराना है। वास्तव में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को बताता है कि ऐसा भी कहा जा सकता है कि लेवी ने, जो अपने पूर्वज की कटि में था, अब्रहाम के द्वारा मलकीसिदिक को दशमांश देता है। वास्तव में जिसे दशमांश लेना था, वही दशमांश दे रहा है। लेखक अनुमान लगाता है, इसका मतलब है कि यहाँ वर्णित मलकीसिदिक और उसका क्रम, दोनो लेवी और उसके याजकीय वंश से बड़े थे। मलकीसिदिक की रीति में याजक के रूप में यीशु और उसकी सेवकाई लेवीय याजकपन से महान थी।

यदि लेवीय याजकपन सिद्धता ला सकता तो दूसरे याजकपन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। (पद 11) पुराने नियम का याजकपन लोगों को क्षमा एवं उद्धार की ओर लाने में सक्षम नहीं था जिनकी उन्हे अति आवश्यकता थी। लेवीय याजकपन लोगों को परमेश्वर द्वारा इच्छित स्तर तक नहीं ला पाया। पुराने नियम की स्पष्ट शिक्षा यह है कि पाप करने वाली आत्मा मरेगी। (यहेज. 18:20) लेवीय याजकपन कुछ क्षण के लिए परमेश्वर के क्रोध को ठंडा कर सकता था परंतु यह लोगों के पापी दिलों को नहीं बदल सकता था। संपूर्ण पुराने नियम के दौरान, पाप जारी रहा। परमेश्वर के लोग हर बार उसके स्तर से गिरते रहे। पुराने नियम में पापों की क्षमा पाने के लिए कितने ही बैल, बकरे, भेड़ और पक्षियों को बलिदान चढ़ा दिया गया? क्या इन बलिदानों ने चढ़ाने वाले के दिल को बदला? क्या ये बलिदान और नियम संसार के पापों को दूर कर सके? पुराने नियम को पढ़ने वाला हर कोई देख सकता है कि लेवी के याजकीय कर्मों के बावजूद लोगों के दिलों में कोई बदलाव नहीं आया था। पाप ने अभी भी लोगों को परमेश्वर से अलग कर रखा था। संसार को एक नए याजक की जरूरत थी जो उनका परमेश्वर के साथ मेल करा सके और पापों की क्षमा दिला सके।

मात्र याजकों को बदलने और उन्ही पुराने नियमों और तरीकों को रखने का

कोई लाभ न होगा। याजकपन के बदलाव के साथ साथ नियमों में भी बदलाव आया। मलकीसिदिक के याजकपन के तहत, जीने का एक नया तरीका मौजूद है। जो मलकीसिदिक, धार्मिकता के राजा के याजकपन में हैं, वे लेवीय याजकपन और उसके किसी नियम के अंदर नहीं हैं। प्रभु यीशु लेवी गोत्र से नहीं आए। पुराने नियम के नियमानुसार, उसे लेवीय याजक बनने का कोई अधिकार नहीं था। (13, 14 पद देखें) यह उसका उद्देश्य नहीं था। यीशु नया मार्ग देने आया।

यह हम सब पर सही तौर पर लागु होता है जो अब यीशु मसीह के याजकपन में जी रहे हैं। आप लेवीय याजकपन और यीशु के याजकपन, दोनों में एक साथ नहीं रह सकते हैं। यीशु मसीह के याजकपन में रहने वालों के लिए जरूरी है कि वे व्यवस्था के पुराने नियमों से स्वयं को अलग कर लें। व्यवस्था हमें कभी नहीं बचा सकती। पुराने नियम का सैंकड़ों सालों का इतिहास प्रमाणित कर चुका है कि व्यवस्था कभी भी परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने में मददगार साबित नहीं हो सकती। केवल यीशु का सिद्ध बलिदान ही उसे पूरा कर सकता है।

पद 16 में मलकीसिदिक के याजकपन और लेवीय याजकपन में अंतर पर ध्यान दें। पुराने नियम के याजकों को वंश के आधार पर चुना जाता था। अर्थात, उन्हे नियुक्त परिवार में जन्म लेना जरूरी था। मसीह का याजकपन वंश पर नही, परंतु अविनाशी जीपन की ताकत पर आधारित है। (पद 16) यीशु ने यह मृत्यु से जिंदा होकर साबित कर दिया। उसने हमारे पापों को स्वयं पर लिया, हमारे बदले मारा गया और मृत्यु एवं पाप पर जय पाते हुए जिंदा हो गए। उसका याजकपन पारिवारिक रेखा पर नहीं परंतु पाप और मृत्यु के ऊपर दिखाई गई अपनी सामर्थ पर आधारित था।

फिर हम देखते हैं कि पुराना नियम, स्वयं में सिद्ध होने के बावजूद, एक मनुष्य के दिल को बदलने में नाकामयाब था। (पद 18) इसका उद्देश्य कभी भी मनुष्य की समस्याओं को सुलझाना नहीं था। इसका उद्देश्य हमें एक उद्धारकर्ता दिखाना था। प्रभु यीशु मसीह में, हमारे पास भली आशा है। (पद 17) उसके द्वारा दी जाने वाली आशा के कारण, अब हम परमेश्वर के पास आ सकते हैं। (पद 19) मूसा की व्यवस्था कभी ऐसा नहीं कर पाई। पुराने नियम के दौरान, परमेश्वर के समीप जाना मृत्यु को आमंत्रित करना था। अब, प्रभु यीशु के याजकपन के द्वारा हम, हियाव के साथ उसके समीप जा सकते हैं क्योंकि उसने हमारे पापों को सुलटा दिया है।

लेवीय याजकपन एवं मलकीसिदिक के याजकपन में एक और अंतर है। पद

20 में, हम पढ़ते हैं कि मलकीसिदिक की रीति के अनुसार, प्रभु यीशु एक शपथ के आधार पर याजक बने। लेवी के याजकों के संग ऐसा कुछ नहीं था। प्रभु परमेश्वर ने स्वयं मलकीसिदिक के याजकपन के बारे में ये शपथ ली थी। पद 21 में, हम पढ़ते हैं, "प्रभु ने शपथ खाई है और नहीं पछताएगा: तू सर्वदा का याजक है।" यह उद्धरण भजन संहिता 110:4 से लिया गया है।

प्रभु ने शपथ खाई है, और नहीं पछताएगा: "तु मलकीसिदिक की रीति के अनुसार, सर्वदा का याजक है।"

पद्यांश में विशेष तौर पर ध्यान दें कि यह उद्धरण भजन संहिता से लिया गया है, भजनकार 'मलकीसिदिक की रीति' को उद्धरित करता है। हम देख सकते हैं कि पुराने नियम में ही परमेश्वर ने शपथ खाकर वायदा कर दिया था कि वे सर्वदा के याजकपन की स्थापना करेंगे।

चूँकि मलकीसिदिक का याजकपन सर्वदा का था, यह हमें बेहतर आशा देता है। लेवीय याजकपन तात्कालिक था। यीशु का याजकपन सर्वदा का है। वह याजक के रूप में पूरी अनंतता तक राज और सेवा करेगा। लेवी और उसके वंशज मर गए और हर दूसरे याजक की तरह उन्हे भी दफना दिया गया। केवल यीशु ही अनंत हैं। वे हमेशा हमारे संग रहेंगे। उसने पाप और मृत्यु पर जय पाई है। उसमें, हमें शक्तिशाली आशा मिलती है। मृत्यु ने लेवी के याजकपन को जारी रहने से रोक दिया। (पद 23) परंतु यीशु सदाकालीन हैं। (पद 24) वे हमेशा हमारे और परमेश्वर के बीच की दूरी को दूर करते रहेंगे।

मलकीसिदिक याजक के तौर पर, प्रभु यीशु हमें बचाने और हमारी जरूरत को पूरा करने के लिए पूर्णत: सक्षम है। वे ऐसा कर सकते हैं क्योंकि पुराने नियम के सभी याजकों के विपरीत, यीशु पवित्र, शुद्ध और पापियों से दूर हैं। पुराने नियम के याजक पापी थे जो स्वयं को भी पाप से नहीं छुड़ा सकते थे। यीशु ने पाप पर पूरी जय पाई। यद्यपि हमारी तरह ही वह परखा गया, उसने पाप नहीं किया। उसने पाप और पाप की शक्ति को हराया।

पद 27 में ध्यान दें कि पुराने नियम के याजकों को हमेशा बलिदान चढ़ाना पड़ता था, दूसरों के लिए ही नही, स्वयं के लिए भी। परंतु प्रभु यीशु ने केवल एक ही बार बलिदान चढ़ाया। वह एक बलिदान पुराने नियम में चढ़ाए गए सब बलिदानों से महान था। इस एक बलिदान ने परमेश्वर की माँग को पूरा कर दिया। ध्यान दें कि यीशु ने एक बार में हमेशा के लिए बलिदान चढ़ाया। वह एक बलिदान हमारे

अतीत एवं भविष्य के सभी पापों के लिए काफी था। इसने केवल एक व्यक्ति को ही नहीं, परंतु उसके पास आने वाले हर एक को ढ़ाँपा। कितना शक्तिशाली बलिदान था ये। इसे पाप और दुष्टता को हरा दिया। यह संपूर्ण पाप क्षमा ले आया। पिता के नजरों में, सब कुछ उसके पुत्र के द्वारा क्रूस पर पूरे किए गए कार्य के द्वारा ढ़ाँप दिया गया। इसमें कुछ भी जोड़ने का साहस कर हम इस बलिदान की निंदा नहीं कर सकते हैं। हमें केवल इतना करना है कि हम इस एक बलिदान पर भरोसा करें जो सभी पापों और उसके पास आने वाले सब लोगों के लिए चढ़ाया गया। यह पिता की नजर में काफी है।

प्रभु यीशु के पास अब आने वाले हम, एक नए याजकीय क्रम के अनुसार याजक हैं। हम अब पुराने याजकपन या इसके तरीकों के अधीन नहीं हैं। अब हमें अपनी आखें और आशा उस पर लगानी हैं।

सोच विचार के लिए:

- मलकीसिदिक प्रभु यीशु का प्रतीक कैसे हैं?
- किन कारणों से, मलकीसिदिक अब्रहाम से बड़ा है?
- मलकीसिदिक का याजकपन पुराने नियम के लेवीय याजकपन से महान कैसे है?
- यदि लेवीय याजकपन हमें उद्धार नहीं दे सकता था तो परमेश्वर ने इसे क्यों निर्धारित किया?
- इस पद्यांश में हम प्रभु यीशु के बलिदान की सामर्थ के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने एक सिद्ध उद्धार का प्रबंध किया। प्रभु का धन्यवाद करें कि इसमें अब कुछ भी जोड़ने की जरूरत नहीं है।
- उसका धन्यवाद करें कि उसने हमें ऐसे तंत्र से आजाद किया जो हमें बचा नहीं सकता था।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो अभी भी अच्छे जीवन के द्वारा उद्धार को पाने की कोशिश कर रहा है? प्रभु से आपको इस मार्ग की व्यर्थता दिखाने की प्रार्थना करें। प्रभु से उन्हे अपना मार्ग दिखाने की प्रार्थना करें।

23

सर्वोच्च वाचा

इब्रानियों 8:1-13 पढ़ें

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को मलकीसिदिक के याजकपन के बारे में बता रहा है। उसने उन्हें पिछले अध्याय में याद दिलाया कि इस याजकपन ने लेवीय याजकपन का स्थान लिया है। वह उन्हें इब्रानियों 7:12 में बताता है कि "इस नए याजकपन के साथ नियमों में भी बदलाव आया।"

इसका अर्थ है कि वे अब लेवीय याजकपन के अधीन नहीं थे। मूसा का नियम सदैव का नहीं था। इसका उद्देश्य लोगों के सामने यीशु मसीह और उसके द्वारा लाए जाने वाले नए याजकपन को दिखाना था।

हम अध्याय 8 में पाते हैं कि यह नया याजकपन लेवी और उसके वंशजों के याजकपन से अलग है। पद 1 में, लेखक याद दिलाता है कि हमारे महायाजक यीशु स्वर्ग में अपनी महिमा में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हैं। दाहिना हाथ सम्मान का स्थल था। स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ बैठना किसी को मिल सकनेवाला सर्वश्रेष्ठ सम्मान था। केवल यीशु ही यह सम्मान पा सकते हैं। केवल वही योग्य है। पुराने नियम का कोई भी याजक इस सम्मान की जगह नहीं ले सकता है। महायाजक बनने की यीशु की योग्यताएँ पुराने नियम के हर याजक से कहीं महान हैं।

हमारे महायाजक प्रभु यीशु की सेवकाई और लेवीय याजकपन में एक और अंतर है। इस्राएली याजक मानव निर्मित मिलाप वाले तंबु में सेवा किया करते थे। परंतु यीशु मसीह ने, परमेश्वर के द्वारा नियुक्त तंबु में सेवकाई की। उसने जिस तंबु में सेवकाई दी, वह स्वर्गीय है। यह अब पिता की दाहिनी ओर के स्थान को दिखाता है जहाँ आज वह महायाजक और बिचवई के रूप में स्थित है। इससे भी बढ़कर, हम 1 कुरि. 6:19 से हम समझते हैं कि हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं:

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है जो तुममें है, जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है? तुम अपने नहीं हो।"

आज प्रभु यीशु मानवीय दिलों में याजक और राजा के रूप में रहता और सेवकाई करता है।

हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं। हमारे अंदर ही प्रभु यीशु का कार्य होता है। पुराने नियम के समय में, परमेश्वर की उपस्थिति तंबु के अति पवित्र स्थान में आया करती थी। आज, वही उपस्थिति हर उस व्यक्ति के दिल में रहती है जो मसीह के द्वारा दी गई क्षमा को स्वीकार करते हैं।

पुराने नियम के याजकों को धरती पर बलिदान चढ़ाने के लिए परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। यीशु स्वर्ग में सेवा करते हैं। यीशु लेवियों के काम को उनसे हटा अपने हाथ में लेने के लिए नहीं आए। (पद 4) ये याजक विशेष उद्देश्य के साथ परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए जाते थे। उनकी सेवा उसकी छाया और प्रतीक थे जो स्वर्ग में स्थित है। उनकी भूमिका भविष्य में आने वाली उस भूमिका की ओर विश्वास का कदम थी जो यीशु मसीह निभाने आने वाले थे। वे महायाजक बनने आने वाले थे। लेवियों की सेवा का स्थल अर्थात मंदिर स्वर्ग में स्थित उस बड़े मंदिर का प्रतीक था जहाँ मसीह सेवा करेंगे।

इब्रानियों के लेखक के अनुसार, इसी कारण से मूसा ने निर्माणकर्ताओं को परमेश्वर के द्वारा दिखाए गए नमूने के अनुसार धरती के मंदिर को बनाने की चेतावनी दी कि उसके हर निर्देश को माना जाए। (पद 5) धरती के मंदिर की हर वस्तु स्वर्ग में प्रभु के लोगों के लिए तैयार की गई वस्तु का प्रतीक था। धरती का मंदिर जहाँ लेवी सेवा करते थे, आने वाली भली बातों की भविष्यद्वाणीय यादगार था। (पद 6)

मसीह की सेवा ही सर्वोच्च नहीं थी, परंतु वह खुद सर्वोच्च वाचा के मध्यस्थ भी थे। (पद 6) इस नई वाचा को पुरानी वाचा के बेहतर वायदों के आधार पर बनाया गया था। पुरानी वाचा उन बातों का प्रतीक थी जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए भविष्य में बड़े तौर पर करना चाहता था। परमेश्वर ने पूरानी वाचा के तहत अपने लोगों के लिए एक देश का वायदा किया। नई वाचा में उसने स्वर्ग में उनके लिए जगह का वायदा किया। पुराने नियम में उसने उनके लिए शांति और चारों ओर के दुश्मनों से सुरक्षा का वायदा किया। नई वाचा में, उसने परमेश्वर के साथ शांति एवं पाप तथा शैतान के ऊपर जय का वायदा दिया। नई वाचा के वायदे अद्‌भुत हैं। नई वाचा में, हमें उद्धार, क्षमा और सिर्फ अब के लिए नही, परंतु सदैव की विजय का वायदा मिला है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता उसी दिन की बाट जोह रहे थे जब प्रभु अपने लोगों को नयी वाचा देंगे। परमेश्वर के द्वारा उनके लिए बनाई गई पुरानी वाचा लोगों के लिए उद्धार नहीं ला सकी। यह परमेश्वर के लोगों के दिलों को नहीं बदल पाई। इतना सारा लहू बहाने के बावजूद, लोग वैसे के वैसे बने रहे। पुरानी वाचा ने अपने सारे नियमों और नियमावलियों के द्वारा वह सब कुछ पूरा किया जो परमेश्वर उसके द्वारा चाहता था, परंतु इसे कभी भी उद्धार के लिए नहीं दिया गया था। परमेश्वर पहले से ही जानता था कि यह मनुष्यों को बदल नहीं सकती है। इसीलिए उसे इसे दिया था। वह दिखाना चाहता था कि मानवीय प्रयास काफी नहीं हैं। वह बताना चाहता था कि जो स्तर उसने हमारे लिए रखे हैं, उसके करीब हमारा कोई भी प्रयास नहीं पहुँच सकता है। उसने व्यवस्था और पुरानी वाचा के माध्यम से हमें हमारी जरूरत दिखाई। और, ये सब यीशु मसीह एवं उसके द्वारा हमारे लिए बनाई जा रही नई वाचा की ओर इशारा था।

शायद पुराने नियम में परमेश्वर के द्वारा लोगों के साथ बाँधी जा रही इस नई वाचा का सबसे अच्छा वर्णन, इस पद में उपयुक्त यिर्मयाह के संदर्भ में मौजूद है। (यिर्म. 31:31-34 देखें) आइए एक क्षण लेकर नई वाचा एवं अब्रहाम के समय में लोगों के साथ बनाई गई वाचा से इसकी तुलना के बारे में यिर्मयाह क्या कह रहा है।

पद 8 में, इब्रानियों का लेखक, यिर्मयाह का उल्लेख कर, यह स्पष्ट करता है कि नई वाचा को देने की प्रभु की योजना शुरूआत से ही थी। नई वाचा परमेश्वर का दूसरा विचार नहीं थी। प्रभु यीशु के इस दुनिया में आने से पहले ही, लोगों के साथ एक नई और सिद्ध वाचा बाँधने की योजना परमेश्वर के साथ पहले से ही थी। पुराने नियम में लोगों के साथ बाँधी गई पुरानी वाचा उसके पुत्र के द्वारा बनाई गई इस नई वाचा की तैयारी थी। यह नई योजना जंगल में इस्राएलियों के साथ बनाई गई पुरानी योजना के समान नहीं थी। (पद 9) कई तरीकों से यह नई वाचा पुरानी से अलग थी। पद 10 में, लेखक अपने पाठकों को बताता है कि इस नई वाचा में परमेश्वर अपने नियमों को लोगों के मनों और दिलों पर लिखेगा। परमेश्वर के लोग इन नियमों को केवल पढ़ने से ही नहीं जानेंगे, परंतु उनके अंदर इसे सुनने और आज्ञा मानने की प्रेरणा मिलेगी। परमेश्वर लोगों के दिलों में अपना पवित्र आत्मा भेजेगा। यह पवित्र आत्मा इसके बारे में और पिता के मार्ग में चलने के बारे में उन्हे सिखाएगा। पवित्र आत्मा उनके स्वभाव और व्यवहार को बदलेगा। वह उनके दिलों में परमेश्वर की बातों के प्रति लगाव डालेगा। वह लोगों को परमेश्वर की माँग के

बारे में सिखाएगा और उस माँग को पूरा करने में मदद करेगा। इस नई वाचा के तहत, परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के जीवन में आकर वास करेगी।

हम पद 11 में भी पढ़ते हैं कि इस नई वाचा के तहत आने वाले सब लोग प्रभु को जानेंगे। परमेश्वर का आत्मा जिनमें वास करता है, केवल वही लोग इस नई वाचा के अधीन होंगे। यह पुराने नियम की वाचा से अलग था। पुरानी वाचा के तहत इस्राएल राष्ट्र में जन्मने वाले लोग थे। अब्रहाम की संतानों के लिए यह वाचा बनाई गई थी। जब हम अब्रहाम की इन संतानों को देखते हैं, सारे लोग वास्तव में परमेश्वर से प्रेम या उसकी सेवा करने के इच्छुक नहीं थे। कुछ लोगों ने तो सीधा विरोध भी किया। कई पाप में नाश हो गए। परंतु नई वाचा ऐसी नहीं है। इस वाचा का भाग बने हुए, छोटे से लेकर बड़े लोगों तक, सभी प्रभु को जानते हैं। नौजवान से लेकर बुजुर्ग, गरीब से लेकर सर्वाधिक प्रभावशाली, सबमें एक बात समान थी। सब प्रभु को जानते और उससे प्रेम करते हैं।

पद 12 बताता है कि नई वाचा के भागीदारों को पाप क्षमा मिली है। प्रभु परमेश्वर उनके पापों को याद नहीं रखेंगे। केवल एक ही तरीके से पापों की क्षमा मिलती है। केवल यीशु की पापों की क्षमा दे सकते हैं। उन्होंने क्रूस पर हमारा स्थान लिया। उन्होंने दण्ड की कीमत चुकाई। उसके पास आने और उनके बदले में किए गए उसके बलिदान को स्वीकार करने वाले हर व्यक्ति को क्षमा मिलती और इस नई वाचा के तहत परमेश्वर के साथ मेल होता है। इस नई वाचा में संपूर्ण क्षमा है। पुराने नियम के भागीदारों को ऐसा अवसर कभी नहीं मिला। उन्हे हमेशा अपने पापों को याद करते रहना पड़ता था। हर बलिदान इन पापों को उनके सामने ले आता था। निरंतर लहू बहाया जाता था। नई वाचा में, अब लहू की जरूरत नहीं है। कलवरी पर बहा यीशु का लहू हर समय के काफी है।

अंत में, इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि इस वाचा को नई वाचा कहने के द्वारा, वे कह रहे थे कि पुरानी वाचा पुरानी और मृत है। यदि आप पुरानी वाचा के तहत सेवा करना चाहते हैं, तो आप प्रभु यीशु के उस उद्देश्य से चूक गए जिसे करने वो इस दुनिया में आए। वे हमें उस व्यवस्था से छुड़ाने आए जो हमें छुड़ा नहीं सकती थी। उनके आने से हमें बिना व्यवस्था के हमारे पापों से संपूर्ण क्षमा मिली। यीशु मसीह की नई वाचा पुरानी वाचा से बहुत महान है। इस नई वाचा में संपूर्ण क्षमा है। प्रभु यीशु उसके पास आने वाले हर व्यक्ति के साथ यह वाचा सहमति बनाना चाहता है। वह इस सहमति पर मुहर लगाने के लिए अपना पवित्र आत्मा देगा। पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचनों को

हमारे दिलों पर लिखेगा और उसकी आज्ञा मानने में हमें निपुण बनाएगा। वह आपको परमेश्वर के साथ एक गहन एवं व्यक्तिगत रिश्ते की ओर अगुवाई देगा। आपके सारे पाप ढ़ाँप दिए जाएँगे; आपके ऊपर उनका दोष नहीं लगाया जाएगा। एक ऐसा प्रस्ताव जिसे हम मना नहीं कर सकते। पुराने नियम की भविष्यद्वक्ता इसी दिन को देखने की बाट जोहने में लगे रहे।

पुराने नियम की वाचा मृत है। उसने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया। उसका लक्ष्य यीशु की ओर इशारा था। याजक, मिलापवाला तंबु और सभी नियम तथा नियमावलियाँ सिद्ध महायाजक के कार्य और स्वभाव की बाट जोह रहे थे। यीशु मसीह ने पुराने नियम की वाचा की जरूरतों को पूरा किया और बिना व्यवस्था के एक उच्च वाचा दी।

सोच विचार के लिए:

- विवाह को दो व्यक्तियों के बीच वाचा मानें। परमेश्वर के द्वारा लोगों के साथ बाँधी गई वाचा वैवाहिक वाचा के समान कैसे है?
- पुराने नियम की वाचा, इसके नियम एवं नियमावलियों का उद्देश्य क्या है?
- याजक, मिलापवाला तंबु और पुरानी वाचा के नियम भविष्यद्वाणीय तौर पर यीशु मसीह की इस धरती पर की जाने वाली सेवकाई को कैसे दिखाते हैं?
- यिर्मयाह हमें नई वाचा के बारे में क्या सिखाता है? यह पुराने नियम की वाचा से अलग क्यों है?
- एक व्यक्ति प्रभु यीशु के साथ इस नई वाचा के संबंध में कैसे प्रवेश कर सकता है?
- परमेश्वर के साथ इस नई वाचा में प्रवेश में प्रवेश करने वालों को परमेश्वर ने क्या क्या वायदे दिए हैं?

प्रार्थना के लिए:

- उन सब महान वायदों के लिए प्रभु का धन्यवाद करें जो उसके साथ नए संबंध में प्रवेश करने वालों को मिलते हैं।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह आज आपके साथ नई वाचा में संबंध में प्रवेश करना चाहते हैं।
- प्रभु यीशु मसीह के लिए अपना दिल खोलें। यदि आपने उसके साथ नए संबंध में प्रवेश किया है, तो उससे अपने पापों की क्षमा माँगे और अपनी

संतान के रूप में स्वीकार करने को कहें।

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने हमारे अंदर बसने के लिए अपना पवित्र आत्मा दिया है जो उसके साथ नए संबंध में जीने की मदद करता है।

24

अधिक सिद्ध मिलापवाला तंबु

इब्रानियों 9:1-12

पुराने नियम का यह तंबु वचन में दिए गए प्रभु के निर्देशानुसार बनाया गया था। उस योजना से भटकना असंभव था। मिलाप वाले तंबु के पवित्र स्थान में, परमेश्वर ने कहा कि याजक वहाँ एक दीपदान, और एक मेज रखे जिस पर पवित्र भेंट की रोटियों को रखा जाएगा। (पद 2) यीशु मसीह जगत की ज्योति थे। (यूहन्ना 8:12) दीनदान और रोटियाँ प्रभु यीशु के कार्य को दिखाती हैं।

पवित्र स्थान के बाद अति पवित्र स्थान था। दो स्थान एक पर्दे से अलग किए गए थे। पर्दे के सामने सुगंधद्रव्यों की वेदी थी। अति पवित्र स्थान के अंदर वाचा का संदूक था।

वाचा का संदूक, सोने से ढ़ंपा एक बक्शा था जिसमें मन्ना का बर्तन, हारून की फूल लगी छड़ी और दस आज्ञाएँ लिखी गईं पत्थर की पट्टियाएँ थीं। प्रत्येक वस्तु का परमेश्वर के लोगों के लिए विशेष अर्थ था। मन्ना यादगार था कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हे मिस्र से छुड़ाया और जंगल में उनकी संभाल की। हारून की छड़ी याद दिलाती है कि कैसे परमेश्वर याजकपन को चुना जो परमेश्वर के सामने उनका प्रतिनिधि बने। दस आज्ञाओं की पट्टियों पर वे नियम लिखे थे कि किस प्रकार परमेश्वर के लोग जिएँ।

संदूक पर सोने का ढ़क्कन था जिस पर सोने के दो करूब लगे थे। ढ़क्कन प्रायश्चित का ढ़कना कहलाता है। यह स्वर्गदूतों के पंखों के बीच में मौजूद था जहाँ परमेश्वर लोगों के सामने अपनी उपस्थिति प्रकट करता था।

जब इन सब चीजों को उनकी जगह पर रख दिया गया, याजक बलिदान चढ़ाने के लिए पवित्र स्थान (पहला कमरा) में प्रवेश करता और लोगों के लिए परमेश्वर के सामने अपनी सेवकाई को करता है। केवल महायाजक ही, अंदर के कमरे (अति पवित्र स्थान) में प्रवेश कर सकता था। वह भी साल में केवल एक बार। (पद 7)

अति पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले, उसे स्वयं के लिए एवं लोगों के लिए बलिदान चढ़ाना होता था।

पद 8 में, हम देखते हैं कि इन सब बलिदानों ने केवल यही दिखाया कि अति पवित्र स्थान का मार्ग अभी तक खुला नहीं है। जैसा हमने देखा, अति पवित्र स्थान वो था जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती है। पाप की वजह से, केवल एक ही व्यक्ति, साल में एक बार, स्वयं के पापों का बलिदान चढ़ाकर ही, प्रवेश कर सकता था। यह पुराना मिलापवाला तंबु वहाँ सेवा करने वालों को हमेशा उनके पाप और परमेश्वर से अलगाव की याद दिलाता रहता था। हर दिन उसकी वेदियों पर बहाया गया लहू, हर दिन पाप क्षमा पाने की उनकी जरूरत को दिखाता था। लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति से अलग करने वाला पर्दा परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक बड़ी बाधा को दिखाता था। परमेश्वर की ओर का मार्ग अभी तक खुला नहीं था।

मिलापवाले तंबु में इन सब बलिदानों के बावजूद, परमेश्वर और मनुष्य को अलग करने वाला पर्दा सदैव बंद रहा। बलिदानों की कोई भी संख्या परमेश्वर और मनुष्य के बीच के पर्दे को हटा नहीं सकी। (पद 9 देखें) यह महत्वपूर्ण है कि जब यीशु मरे, तो अति पवित्र स्थान में परमेश्वर और मनुष्य को अलग करने वाला पर्दा ऊपर से नीचे, दो भागों में फट गया। (मती 27:51) दूसरे शब्दों में, जो कार्य जानवरों का निरंतर बलिदान नहीं कर सका, यीशु मसीह ने मात्र एक बलिदान ने पूरा कर दिया। उसके बलिदान ने मानव जाति के सामने पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग खोल दिया।

पुराने नियम के तहत, मिलापवाले तंबु के सारे नियम, भोजन, पेय, शुद्धिकरण, सब कुछ प्रभु यीशु के क्रूस पर हमारे लिए किए जाने वाले बलिदान की ओर इशारा थे। हम पद 10 में स्पष्ट तौर पर देखते हैं कि ये सारे नियम नई वाचा के आने तक तात्कालीन थे।

यीशु हमारे महायाजक बनकर आए। वे लेवीय याजकपन से नहीं थे। उस याजकपन परमेश्वर के द्वारा रखे गए उद्देश्य को पूरा कर लिया था, और फिर परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह में एक नई वाचा को स्थापित किया। यीशु मसीह ने, हमारे बदले में, पिता से मिलने के लिए अति पवित्र स्थान में प्रवेश किया। यह अति पवित्र स्थान पुराने नियम की तरह, धरती पर मनुष्य का बनाया हुआ स्थान नहीं था। (पद 11) यीशु सीधे स्वर्ग में अपने पिता के पास पहुँचे। यीशु पिता की उपस्थिति

में बकरे या बछड़े का लहू बहाकर नहीं गए थे। उसने स्वयं को हमारे पापों के सिद्ध बलिदान के रूप में चढ़ा दिया। (पद 12)

लेवी और प्रभु यीशु के बलिदान में अंतर यह था कि मसीह के बलिदान को अब कभी भी दोहराने की आवश्यकता नहीं है। उसके सिद्ध बलिदान ने पवित्र परमेश्वर की हर माँग को पूरा कर दिया। उस एक बलिदान के द्वारा, यीशु मसीह ने, उसके पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए "अनंत छुटकारे" का प्रावधान तैयार कर लिया। अर्थात, उसके बलिदान हमारे पापों को सदा सर्वदा के लिए ढ़ाँप दिया। अब कभी भी, अतीत, वर्तमान या भविष्य का कोई भी पाप, परमेश्वर के लोगों को उनके स्वर्ग के पिता से अलग नहीं कर पाएगा।

यीशु ने एक अधिक सिद्ध मिलापवाले तंबु में प्रवेश किया। उसने सिद्ध बलिदान चढ़ाया। उसने सिद्ध उद्धार तैयार किया। स्वयं के शरीर को बलिदान करने के बाद, मसीह ने स्वयं स्वर्ग में प्रवेश किया और हमें परमेश्वर से अलग करने वाले पर्दे को बीच में से हटा दिया। उसके कार्य ने हर बाधा को हटा दिया। अब हम उसके कार्य के द्वारा हमारे स्वर्ग के पिता के समीप जा सकते हैं।

सोच विचार के लिए:

- मिलापवाले तंबु की आरधना में पुराने नियम के याजकों के लिए परमेश्वर के द्वारा दिए गए हर निर्देश का पालन करना क्यों जरूरी था?
- परमेश्वर ने स्वयं को मिलापवाले तंबु में कैसे प्रकट किया?
- क्या लेवीयों का बलिदान लोगों को परमेश्वर से अलग करने वाले पर्दे को हटा सका? इस मामले में, यह क्यों महत्वपूर्ण है कि यीशु के मरने के बाद, वह पर्दा ऊपर से नीचे की ओर दो भागों में फट गया?
- हमारे लिए पिता की उपस्थिति में प्रवेश करने से पहले, यीशु ने कौनसा बलिदान चढ़ाया? यह बलिदान पुराने नियम के याजकों के बलिदानों से बेहतर क्यों था?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि अब हम, प्रभु यीशु के बलिदान की वजह से, हियाव के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं।
- आपके लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रभु यीशु का धन्यवाद करें। उसका धन्यवाद करें कि उसके बलिदान ने पापों के हर बलिदानों को रोक दिया।

- प्रभु की उपस्थिति में हियाव के साथ प्रवेश करने के लिए प्रभु की मदद माँगें। उससे कहें कि वह आपके सामने स्वयं को और अधिक प्रकट करे।

25

लहू और वाचा

इब्रानियों 9:13-28 पढ़ें

हमने इस अध्याय के पहले भाग में देखा कि हमारे महायाजक के रूप में, प्रभु यीशु ने हमारे लिए स्वर्ग में प्रवेश किया। पुराने नियम के याजकों की ही तरह, प्रभु यीशु ने बलिदान के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया। वह बलिदान बकरों और बछड़ों का नहीं था। यह बलिदान स्वयं के शरीर का था। उसका बलिदान सिद्ध था और प्रभु परमेश्वर के सभी उचित मानदण्डों को संतुष्ट करते हुए, हमारे पापों के दण्ड की सिद्ध कीमत चुकाई। अब दुबारा पाप के लिए बलिदान की जरूरत नहीं है। मसीह की इस कीमत ने सब समय के लिए दण्ड को चुका दिया।

पद 13 में इब्रानियों की पत्री का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि पुरानी वाचा में, जब बकरों और बछड़ों का लहू, कलोर की राख को किसी व्यक्ति पर छिड़का जाता था तो वह उसे अनुष्ठानिक अशुद्धि से साफ करता और परमेश्वर के सामने उन्हे बाह्य तौर पर शुद्ध करता था। ध्यान दें कि यह लहू और राख मनुष्य के दिल को नहीं बदलता था। एक रैवाजिक तौर पर बाहर से तो साफ करता था परंतु अंदर से कुछ भी नहीं बदलता था।

परंतु प्रभु यीशु का बलिदान बिल्कुल अलग था। पद 14 में ध्यान दें कि यह बलिदान केवल बाहरी तौर पर ही नही, परंतु विवेक को भी साफ करता है। मसीह का बलिदान इसे स्वीकार करने वाले हर व्यक्ति को उसके सारे दोष से मुक्त करता है। उसके लहू से धुलकर, वे परमेश्वर के सामने शुद्ध, कलंकरहित और निर्दोष खड़े रह सकते हैं। प्रभु यीशु का बलिदान परमेश्वर और मनुष्य के बीच की खाई को भरता है। हमारे पाप से शुद्ध होकर, हम अब साफ विवेक के साथ उसकी सेवाक कर सकते हैं।

शुरूआत से ही, प्रभु परमेश्वर जानते थे कि अपने सारे नियमों और नियमावलियों के साथ पुरानी वाचा कभी भी मनुष्यों के दिल को बदलकर, मनुष्य और उसके सृष्टिकर्ता के बीच की खाई को भर नहीं सकती थी। उसका यह उद्देश्य था ही नही।

पुरानी वाचा का उद्देश्य हमें हमारी जरूरत दिखाना और एकमात्र उत्तर यीशु मसीह की ओर इशारा करना था। यीशु मसीह नई वाचा के मध्यस्थ के रूप में आए। पद 15 में ध्यान दें, कि इस वाचा का उद्देश्य परमेश्वर के बुलाए हुओं को पाप क्षमा के द्वारा उनके वारिसाई हक को दिलवाना है।

पुराने नियम के समय में, वाचा की सहमति को पक्का करने के लिए, लहू के द्वारा इस पर मुहर लगाई जाती थी। एक जानवर का लहू बहाना और छिड़कना जरूरी होता था जिससे कि वाचा या सहमति औपचारिक हो जाए। लहु के बहने तक, कानूनी तौर पर कोई वाचा नहीं बंधती थी। किसी की मृत्यु आवश्यक थी, अन्यथा वाचा सही नहीं होती। (पद 17 देखें) वास्तव में, शामिल दोनों पार्टियाँ यह कह रही हैं कि यदि वे सहमति में अपने भाग के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे, तो वे मानते हैं कि उन्हे उस बलिदान चढ़ाए गए जानवर की तरह ही मरना था। इससे अधिक गंभीर कुछ और हो ही नहीं सकता था। वाचा को तोड़ने का परिणाम मृत्यु था।

इसी वजह से, पुरानी वाचा के तहत, इतना अधिक लहू बहाया गया। पुरानी वाचा परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक कानूनी सहमति थी, जो कई सारे जानवरों के बहे लहू के द्वारा सही ठहरा था। हम इसका एक स्पष्ट उदाहरण निर्गमन 24:4-8 जिसका उल्लेख पद 19-20 में किया गया है:

जब मूसा ने व्यवस्था के हर नियमों को सबके सामने पढ़कर सुना दिया, तो उसने जल, लाल ऊन और जूफा के साथ बछड़ों का लहू लिया और सब लोगों तथा लेख पर उसे छिड़क दिया। उसने कहा, यह वाचा का लहू है, जिसे आप सबको मानना है।''

यह स्पष्ट है कि पुराने नियम के समय में, सहमति और वाचा बाँधने की प्रक्रिया में लहू की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। यही लहू वाचा को पक्का और औपचारिक बनाता था।

पुराने नियम की व्यवस्था में लहू के बारे में कुद और भी महत्वपूर्ण है। प्रभु परमेश्वर चाहते थे कि सब कुछ लहू में धोया जाए। (पद 22 देखें) इसी कारण मूसा ने लोगों, तंबु और इसकी सब वस्तुओं पर लहू छिड़का था। लहू का बहाना पाप की गंभीरता एवं वाचा को तोड़ने के गंभीर परिणामों को दर्शाने के लिए था। चूँकि वाचा को लहू बहाकर बाँधा जाता था, इसके तोड़ने पर समाधान भी लहू के बहाने से ही होता था। इसीलिए इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता

है कि लहू बहाए बिना पाप क्षमा संभव नहीं है। लहू केवल वाचा को वैध ही नहीं ठहराता, परंतु यह वाचा को तोड़ने पर क्षमा माँगने में इस्तेमाल होता है। जब भी पाप किया जाता और वाचा तोड़ी जाती, एक जानवर को मारना और उसका लहू बहाना अनिवार्य हो जाता था। पुराने नियम के दौरान लोगों के पापों की क्षमा के लिए करोड़ों बलिदानों को चढ़ाया गया था।

यीशु के द्वारा स्थापित नई वाचा भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। इस वाचा को क भी वैध और प्रमाणित ठहराने के लिए लहू का बहना जरूरी था। यीशु के बलिदान ने परमेश्वर और उसके लोगों के बीच हुई नई सहमति पर मुहर लगाई।

इस्राएल के साथ बंधी पुरानी वाचा और यीशु की अपने लोगों के साथ बाँधी गई नई वाचा में एक महत्वपूर्ण अंतर था। पद 25 में, हम पाते हैं कि यीशु मसीह को पुराने नियम के याजकों की तरह पिता की उपस्थिति में बार बार नहीं जाना पड़ता था। ये याजक स्वयं के लिए एवं लोगों के पापों के लिए लहू का बलिदान चढ़ाने हर साल अतिपवित्र स्थान में जाया करते थे। परंतु यीशु मसीह का एकबारगी बलिदान सब समयों के लिए काफी था। यीशु का बलिदान मेरे और उसके पास आने वाले हर व्यक्ति के पापों को हटाने के लिए काफी है। वह एक भुगतान सब कुछ पूरा करती है और इसे दोहराने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। जब यीशु ने स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में प्रवेश किया तो यह सदा सर्वदा के लिए था।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि हर स्त्री और पुरूष मृत्यु और उसके बाद न्याय के लिए नियुक्त है। मसीह के एक बलिदान के द्वारा, अनेकों के पाप हटा लिए गए। हमारे जीवन और हमारी मृत्यु में केवल एक आशा है। पद 28 पर ध्यान दें, लेखक कहता है कि मसीह का लहू "अनेकों" के पापों को हटाता है। यह हमें दिखाता है कि हर एक का पाप नहीं हटाया जाएगा। कईयों के हटेंगे, परंतु ऐसे भी कई होंगे जिनका पाप क्षमा नहीं हुआ। स्वयं के बदले में दिए गए मसीह के बलिदान को स्वीकार करने वाले ही इस क्षमा को पा सकते हैं। जब तब हम इस लहू को हमारे पापों के भुगतान के रूप में न पहचानें, हम क्षमा नहीं पा सकते।

दिन आ रहा है, यीशु लौटेंगे। (पद 28) पहली बार वे हमारे पापों के लिए स्वयं का बलिदान चढ़ाने आए। परंतु जब वो दोबारा आएँगे, तो उन्हे उद्धार देगें जो उसकी इंतजार कर रहे हैं।

यद्यपि हमने मसीह की क्रूस मृत्यु के कार्य के द्वारा उद्धार पाया है, हमने हमारे

पूर्ण उद्धार को अभी तक नहीं चखा है। इसका हम तभी अनुभव करेंगे जब यीशु मसीह हमें स्वर्ग ले जाने के लिए वापिस लौटेंगे। तब हम हमारा शारीरिक सवभाव त्याग देंगे और सदा सर्वदा, प्रभु यीशु की उपस्थिति में रहेंगे। प्रभु यीशु उन्हे लेने आएँगे जो उनके हैं और अपनी उपस्थिति में ले जाएँगे जहाँ वे अद्‌भुत उद्धार का हमेशा आनंद उठाएँगे।

हमने पुराने और नए नियम की वाचा में लहू की भूमिका को देखा। अपना लहू बहाकर, यीशु ने इस नई वाचा को औपचारिक बनाया। मृत्यु के द्वारा, उन सबके लिए क्षमा का प्रबंध किया जो उसे स्वीकार करेंगे। उसकी मृत्यु ने सब पापों को ढ़ाँप लिया। उसके लहू के द्वारा ही, हम परमेश्वर के साथ इस नए संबंध में प्रवेश कर सकते हैं। उसकी वाचा पुराने नियम की वाचा से बेहतर है। उसका बलिदान एकबारगी था जो सब समयों के पापों के लिए काफी था। यह केवल बाहरी तौर पर ही नही, वरन् आंतरिक विवेक को भी साफ करता है।

सोच विचार के लिए:

- पुराने नियम के बलिदान और यीशु मसीह के बलिदान में क्या अंतर है?
- क्षमा के लिए लहू बहाना क्यों जरूरी था? आज हम यह क्षमा कैसे पा सकते हैं? आज इसमें लहू अपनी क्या भूमिका निभाता है?
- यह कथन कि यीशु मसीह का लहू नई वाचा को वैध ठहराता है, हमें इस बारे में क्या बताता है कि परमेश्वर आज अपने लोगों के लिए इस बलिदान को बहुत ही गंभीर तौर पर लेता है?
- प्रभु यीशु के बलिदान ने ऐसा क्या पाया जो पुराने नियम का बलिदान नहीं कर सका?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने पूरे मन से अपने जीवन को बलिदान चढ़ा दिया जिससे हम परमेश्वर के साथ एक नई वाचा के रिश्ते में प्रवेश कर सकें।
- उसका धन्यवाद करें कि उसका लहू हमारे पापों की क्षमा और माफी देता है।
- प्रभु से उन समयों के लिए माफ करने को कहें जब आपने इस संबंध को गंभीरता से नहीं लिया था। उससे माँगें कि आपके साथ बने इस नए संबंध की गंभीरता को जानने में वो आपकी मदद करे।

26

अब कोई बलिदान नही

इब्रानियों 10:1-18 पढ़ें

हमनें पिछले मनन में देखा कि किस प्रकार वाचा का संबंध बनाने में लहू महत्वपूर्ण था। इब्रानियों को लेखक पुराने नियम की वाचा, इसके नियमों की तुलना यीशु के द्वारा लाई गई नई वाचा के साथ तुलना कर रहा है। पिछले सत्र में, वह पुरानी वाचा के तहत हर दिन बहने वाले लहू की तुलना सदा के लिए एकबारगी बहाए गए लहू से करता है। इस सत्र में, इसी विषय पर जारी रहता है।

पद 1 में, पाठकों को याद दिलाया जाता है कि पुराने नियम के नियम आने वाली बेहतर चीजों की छाया मात्र थे। आपके करीब आते एक व्यक्ति की छाया पर आपने ध्यान दिया होगा। जब वो आता है तो छाया उसके आगे चलती है। छाया और उस व्यक्ति में बहुत अंतर है जिसकी वो छाया है। वास्तविकता छाया से कहीं बेहतर है। छाया अपने सर्वोत्तम स्तर पर, सच्ची वस्तु का प्रतिरूप मात्र है, कुछ भी हो, है तो यह प्रतिरूप ही। पुराने नियम की व्यवस्था कितनी भी अच्छी क्यों न हो, मनुष्य के उद्धार के लिए यह अंतरिम उत्तर नहीं था।

नियम, इसके सारे बलिदान कभी भी एक व्यक्ति को सिद्ध नहीं बना सकते थे। (पद 1) हम 'सिद्ध' नामक शब्द के अर्थ को मात्र 'पाप से स्वतंत्रता' न समझें। विचार इससे कहीं परे है, विवेक की कचोट के परे। दुसरे शब्दों में, पुराने नियम के बलिदान एक व्यक्ति के पूरे विवेक को साफ कर, उनका परमेश्वर के साथ रिश्ता नहीं जोड़ सके। सालों साल प्रतिदिन के हिसाब पर इतने बलिदानों को चढ़ाने के बावजूद, वे कभी भी लोगों के दिलों बदल, उनका परमेश्वर के साथ सही मेल नहीं करा सके। विविध बलिदानों के बावजूद, परमेश्वर के लोग पाप में पड़े रहे। (पद 2 देखें) पाप हमेशा परमेश्वर और उसके लोगों के बीच रूकावट बना रहा।

यदि पुराने नियम के बलिदान परमेश्वर के लोगों के पापों का हल कर देते तो उन्हे बार बार दोहराने की जरूरत न पड़ती। बैलों और बकरों का बलिदान क्षा करने

और दिलों को बदलने के लिए काफी नहीं था। इन जानवरों की मृत्यु पाप की समस्या का हल नहीं कर पाई। इसने कुछ समय के लिए उसे ढ़ाँपा परंतु पाप अभी भी लोगों के दिलों में बना हुआ था।

यदि ये बलिदान पाप की समस्या को हल नहीं पाए तो इनका उद्देश्य क्या था? पद 3 में, इब्रानियों को लेखक अपने पाठकों को बताता है कि ये बलिदान परमेश्वर के लोगों को केवल उनके पापों और कमियों को दिखाने का कार्य करते थे। जब जब एक बैल, बकरा, मेमना या पक्षी बलिदान होता, लोगों को यह दिखाता कि पाप अभी भी उनकी समस्या बना हुआ है। यह उन्हे बताता कि अंतिम समाधान अभी तक नहीं आया है।

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि पुराने नियम के संत अपने बलिदानों के द्वारा बचाए जाते थे। परंतु यह सही नहीं है। पद 4 इसके बारे में स्पष्ट रूप से बताता है। इब्रानियों के लेखक ने पाठकों को बताया कि बैलों और बकरों के लहू के लिए पापों से छुटकारा देना बिल्कुल असंभव था। बैल या बकरे के बलिदान के द्वारा एक व्यक्ति ने भी पापों की क्षमा नहीं पाई। यदि ऐसा होता तो प्रभु यीशु को कभी आना ही नहीं पड़ता।

चूँकि ये बलिदान लोगों को पापों से छुटकारा नहीं दे पाए, यीशु मसीह आए। भजनकार भजन 40:6-8 में इसके बारे में कहता है। वह 5 से 7 पद में इसका उल्लेख करता है।

इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिये एक देह तैयार की। होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैं ने कहा, देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूँ।

ध्यान दें कि ये पद क्या कहते हैं। भजनकार जो स्वयं पुराने वाचा में था, एक महत्वपूर्ण कथन बताता है। वह पाठकों को बताता है कि प्रभु यीशु बलियाँ और भेंट नहीं चाहते थे। इस कथन को उस समय के लोगों ने कैसे स्वीकार किया होगा? जबकि पुराने नियम के दौरान बलिदान परमेश्वर की ही माँग थी, यह माँग सदा के लिए नहीं थी।

यहाँ दोबारा ध्यान दें कि मेलबलि और पापबलि ने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया। यह सच है कि उन बलियों ने उन्हे बाहर से साफ कर परमेश्वर के क्रोध

को कुछ समय के लिए हटाया, परंतु हमें इस बात भी ध्यान देना है कि ये कोई भी बलि वास्तव में परमेश्वर को अथवा उसके न्याय को प्रसन्न नहीं कर पाई। कुछ समय के लिए उन्होंने पापों को ढ़ाँप दिया परंतु पाप की समस्या का समाधान नहीं कर पाए।

भजन संहिता में से इस उल्लेख पर भी ध्यान दें कि यद्यपि परमेश्वर मेलबलि और पापबलि से प्रसन्न नहीं था, उसने एक विकल्प का भी प्रबंध किया। भजन संहिता में भजनकार अपने पाठकों को स्पष्ट रूप से बता रहा है कि परमेश्वर ने उनके लिए देह का प्रबंध किया। उसने यह कौनसी देह तैयार की? यह और कोई नही, स्वयं प्रभु मसीह की देह थी जिसने पाप का सिद्ध बलिदान प्रस्तुत किया। परमेश्वर के आत्मा ने भजनकार को प्रकट किया कि प्रभु यीशु आकर अपनी देह को बलिदान के रूप में भेंट करेंगे। समय की शुरूआत से ही परमेश्वर की यही योजना रही है। यह दिखाती है कि मूसा के नियम प्रभु यीशु के आने तक के लिए की गई तात्कालीन व्यवस्था थी।

जैसा भजनकार पद 7 में लिखता है, प्रभु यीशु इस धरती पर पिता की इच्छा को पूरा करने आए। वह इच्छा हमारे उद्धार के लिए सिद्ध बलिदान बनना थी। यीशु मसीह हमारे पापों के लिए सिद्ध मेमना बनने आए।

पद 9 में, यह स्पष्ट है कि प्रभु यीशु के बलिदान ने सब कुछ बदल दिया। अपनी क्रूस मृत्यु के द्वारा, यीशु ने दूसरी वाचा को मुहर लगाने के लिए पहली को दूर हटा दिया। यीशु मसीह ने अपना जीवन देकर एक ऐसा बलिदान चढ़ाया जिसे आज तक किसी ने नहीं चढ़ाया। तथा अब एक और बलिदान की आवश्यकता नहीं है। मसीह के बलिदान ने सब बलिदानों की जरूरत को समाप्त कर दिया। अपने सिद्ध बलिदान से, जानवरों को बली करने जैसे नियमों की पुरानी वाचा के नियमों को दूर हटा दिया गया जिनकी अब फिर जरूरत ही नहीं पड़ेगी। मसीह का बलिदान सब पापों के लिए काफी था। (पद 10)

पद 10 में ध्यान दें कि हम यीशु मसीह के हमारे बदले में किए गए बलिदान के द्वारा पवित्र हुए हैं। हम भला जीवन जीने से पवित्र नहीं बनते हैं। हम मसीह के बलिदान के द्वारा पवित्र होते हैं। मसीह का वह बलिदान पुराने और नए, दोनों समय के लोगों को क्षमा दिलाता है। यह बलिदान मसीह के पास आने वाले सब लोगों का परमेश्वर के साथ मेल कराता है। वे सिद्ध नहीं हैं परंतु अपने पापों की क्षमा पाए एवं साफ किए गए हैं। इससे वे पवित्र लोग बनते हैं।

पुरानी वाचा के तहत, याजक यही बलिदान अपने पापों के दोष को ढ़ाँपने की कोशिश में हर दिन चढ़ाया करते थे। (पद 11) हजारों लाखों जानवरों को बलि कर दिया गया परंतु पाप का दोष दूर नहीं किया जा सका। स्त्री एवं पुरूष अभी भी परमेश्वर के सामने दोषी और उससे दूर थे। परंतु यीशु ने हमेशा के लिए बलिदान चढ़ाया। बलिदान चढ़ाने के बाद, वे पिता के पास दाहिने हाथ जा बैठे। (पद 12) यह आदर का स्थान था। बलिदान के बाद पिता के दाहिने हाथ बैठने का तथ्य साबित करता है कि यह पिता ने स्वीकार लिया था। पिता ने उस बलिदान को स्वीकारा और उसी प्रसन्नता में, अपने पुत्र को दाहिनी ओर बैठने के लिए बुलाया।

पद 13 हमें बताता है कि मृतकों में से जी उठने एवं पिता के पास जाने की वजह से, प्रभु अपने पिता के दाहिने ओर इंतजार कर रहा था कि उसके शत्रुओं को पाँवों की चौकी करे। चौकी वह स्थान जहाँ हम अपना पाँव रखते हैं और यह विजय को दिखाता है। अब यीशु इंतजार में हैं कि वह संसार भर के लोगों के जीवन में अपने कार्य के इच्छित प्रभावों को देख सके। मिट्टी में बीज के बोने के समान, उसका बलिदान फलवंत होकर एक बड़ी फसल तैयार करेगा। हमने उसके कार्य के प्रभाव को हमारे जीवन में देखा कि कैसे शैतान की ताकत तोड़ी गई और हम परमेश्वर की संतान बने। मसीह के बलिदान का प्रभाव आज भी संसार को बदलने में लगा है। सब राष्ट्रों से लोग उसके पास आ रहे हैं। यहाँ प्रयुक्त तश्वीर है कि प्रभु यीशु अपने पिता की दाहिने ओर अपने कार्य के पूर्तिकरण की इंतजार में है जिसे पिता पूरा करना चाहते थे।

प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा, पाप पर जय पाई गई। हर दिन, हम यीशु के समान होते जा रहे हैं। यीशु का बलिदान लगातार शत्रु के बल को तोड़ रहा है। यीशु ने कलवरी क्रूस पर जो शुरू किया, वह पूरे संसार में फैल रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी, इस कार्य को सुन रही एवं अपना जीवन उसकी ओर फेर रही है। परमेश्वर का राज्य बढ़ रहा एवं शैतान निसहाय है। पिता के दाहिने ओर से, प्रभु देख रहे हैं कि किस प्रकार उनका कार्य पूरे संसार को बदल रहा है। उसके दुश्मनों को हराया जाता और पाँवों की चौकी बनाया जाता है।

यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने आगामी दिनों को देखकर कहा जब परमेश्वर अपने लोगों के साथ नई वाचा बाँधेंगे। यिर्म. 31:33-34, इब्रानियों का लेखक पद 16-17 में लिखता है:

पवित्र आत्मा भी इसके बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है, "प्रभु

कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उन से बांधूंगा, वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर लिखूँगा और मैं उनके विवेक में डालूंगा।'' और फिर जोड़ता है, ''उनके पाप और नियमविरोधी कार्य, मैं कभी स्मरण न रखूँगा।''

ध्यान दें कि यिर्मयाह ने परमेश्वर के द्वारा लोगों के साथ बाँधी गई वाचा के बारे में अपने लोगों को क्या बताता है। पहला, इस नई वाचा के तहत, प्रभु अपने वचनों को लोगों के दिलों और मनों में लिखेगा। यह पवित्र आत्मा के विश्वासी के अंदर आकर रहने से ही संपन्न होगा। वह आकर, लोगों को उसके मार्ग सिखाएगा। वह लोगों को अंदर से बदलेगा। वह उनमें प्रभु को समझने एवं उसकी बाट जोहने वाला नया स्वभाव डालेगा। यह नया स्वभाव पुराने से बिल्कुल अलग होगा। यह परमेश्वर से प्रसन्न होगा और उसे एवं उसके वचन को मानेगा।

यिर्मयाह के अनुसार, इस नई वाचा का एक और गुण है कि इसके तहत आने वाले सब लोगों के पापों की क्षमा मिलेगी। परमेश्वर की इस नई वाचा के संबंध प्रवेश करने वाले मसीह के बलिदान के द्वारा आए हैं। उनके सभी पाप उस बलिदान के द्वारा ढ़ाँपे गए।

इसका मतलब है कि आपको अपने उद्धार को पूरा करने के लिए अब कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। इसे अर्जित करने के लिए कोई कार्य नहीं करना। आपको अपने ''कार्यों को साफ करने'' की जरूरत नहीं है। आप जैसे हैं, उसके क्रूस के पास अपने सारे पाप और दोष के साथ आएँ जहाँ बलिदान हुआ था और उसे अपना घोषित करें। प्रभु यीशु मसीह के बलिदान में संपूर्ण और पूरी क्षमा है। जब हम उसके पास आते और विश्वास के साथ, स्वीकार करते हैं तो परमेश्वर हमारे दिलों में उसे लिखकर उस वाचा के समर्पण पर मुहर लगाता है। प्रभु यीशु मसीह के लहू के द्वारा इस वाचा में प्रवेश करने वाले दिल, इच्छा और स्वभाव में परिवर्तन पा सकते हैं। वे बदलते हैं और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हमेशा हमेशा रहने तक पवित्र आत्मा के द्वारा सुरक्षित रखे जाते हैं। ये कुछ ऐसा था जो पुराना नियम कभी नहीं कर सकता था।

सोच विचार के लिए:

- लेखक जब कहता है कि ''पुराना नियम आने वाली चीजों की छाया था'' तो इसका मतलब क्या है?
- पुराने नियम के संतों को पापों से छुटकारा कैसे मिला? क्या बैलों और

बकरों के बलिदान काफी थे?

- प्रभु के बलिदान ने ऐसा क्या पूरा किया जो पुराने नियम के बलिदान नहीं कर पाए?
- हमें कैसे पता कि प्रभु के बलिदान ने पिता को प्रसन्न किया?
- आज के संसार पर प्रभु के बलिदान का क्या प्रभाव है? यह बलिदान आपको व्यक्तिगत तौर पर क्या प्रदान करता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद दें कि आप ऐसे समय में रह रहे हैं जिसे पुराने नियम के संत केवल विश्वास के द्वारा देख ही पाते थे। मसीह में अनुभव किए जाने वाले नए जीवन और पवित्र आत्मा के हमारे अंदर रहने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- प्रभु का धन्यवाद दें कि उसके बलिदान ने सभी बलिदानों को समाप्त कर डाला। उसका धन्यवाद कि हमें अपने उद्धार के लिए अब कुछ भी करने की जरूरत नहीं है।
- एक क्षण लेकर अंगिकार करें कि आप दोषी है और आपको पाप के बलिदान की जरूरत है। आपके बदले में हुए मसीह के बलिदान को स्वीकार करने के लिए अपना दिल खोलें।
- मसीह के बलिदान का आज आप पर क्या प्रभाव है? थोड़ा समय लेकर प्रभु का धन्यवाद करें कि किस प्रकार उसके बलिदान ने आपके जीवन को बदल दिया है।

27

आओ

इब्रानियों 10:19-25 पढ़ें

इब्रानियों का लेखक पद 19 को यह कहकर शुरू करता है कि मसीह के बलिदान के कारण परमेश्वर और मनुष्य के बीच विभाजन समाप्त हो गया। मसीह के बलिदान के द्वारा हम अति पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते हैं जहाँ परमेश्वर वास करते हैं। महायाजक साल में केवल एक बार अपने और लोगों के पापों के लिए बलिदान लेकर इस अति पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था। अति पवित्र स्थान को तंबु के दूसरे स्थलों को एक बड़े पर्दे से अलग किया हुआ था। अंदर जाने का साहस करने वाले हर अनाधिकृत व्यक्ति की सजा मौत थी। परमेश्वर की ओर रास्ता रूका हुआ था। पापी मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं जा सकता था। जब यीशु मसीह मरे, तो तंबु का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया। (मती 27:51) यह स्पष्ट संकेत था कि मसीह के बलिदान के द्वारा परमेश्वर की ओर रास्ता खुल चुका था। इस शक्तिशाली सच के द्वारा, इब्रानियों का लेखक पाठकों को चार उपदेश देता है। हर एक उपदेश 'आईए' पद से शुरू होता है। हम उनका विवरण देखेंगे।

आओ, समीप चलें

चूँकि मसीह ने परमेश्वर के पास जाने का मार्ग खोल दिया है, हमें उसके समीप जाना है। इस मार्ग के खोल दिये जाने और उसकी उपस्थिति में आमंत्रण पाने के बावजूद भी, यदि हम परमेश्वर के पास नहीं जा सकते हैं तो यह हमारे लिए कितने शर्म की बात होगी।

चूँकि मसीह ने पूरी कीमत चुका दी, हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। हम क्यों समीप जाएँ? हम यह संगति और सुरक्षा के लिए करते हैं। इब्रानियों का लेखक हमें पिता की उपस्थिति की सुरक्षा में संगति करने की चुनौती देता है। यह पुराने नियम के तहत संभव नहीं था। तौभी पद 22 में ध्यान दें कि हमें सच्चे मन से उसके समीप जाना है। सच्चा दिल धोखे और पाप से वंचित होता है। हमें बताया गया है कि हम परमेश्वर के समीप शुद्ध जल के द्वारा हमारे शरीर और दोष को धोकर

जाएँ। यदि हम परमेश्वर के समीप जाएँ तो सबसे पहले हमें परमेश्वर से अलग करने वाले पाप से निपटना जरूरी है। और इसीलिए यीशु मसीह आए। वह हमें पापों से साफ करने आए। पृष्ठभूमि संकेत देता है कि यह हो चुका है। हम निश्चित कर सकते हैं कि हमारे बदले में किया गया मसीह का बलिदान हमें पापों से शुद्ध करता है। हमारे दिलों पर मसीह का लहू छिड़का गया और क्षमा के द्वारा उनके दोषी विवेक को हटाया गया है। हम समीप जा सकते हैं क्योंकि मसीह ने हमें क्षमा और साफ किया है।

पद 22 में, इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को बताया कि हमें पूरे विश्वास के साथ समीप जाना है। परमेश्वर के पास आने के लिए विश्वास बहुत ही जरूरी है। इस तथ्य की वास्तविकता यह है कि आप कभी भी परमेश्वर को अपने सामने विशेष तरीके से प्रकट होते हुए नहीं देखोगे। आप उसकी आवाज को पुराने नियम में मूसा की तरह अपने कान में नहीं सुन सकोगे। आपके पास पवित्रशास्त्र में उसके वचन भरे हैं। आपके पास पवित्र आत्मा का बोध है। आपको मात्र विश्वास करना है जो परमेश्वर कहता है और उसके वायदे में अपना जीवन समर्पित करना है। आपको परमेश्वर के पास इस विश्वास के साथ आना है कि मसीह का बलिदान आपको परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के लिए सक्षम है। धैर्य के साथ आओ, स्वयं की खूबी पर नहीं वरन् मसीह के कार्य पर पूर्ण विश्वास के द्वारा। जब हम परमेश्वर के समीप जाते हैं, हमें ऐसा करना है कि हम मसीह के बलिदान के द्वारा धुले हैं और विश्वास करना है कि वह वचन और वायदे में विश्वासयोग्य रहेंगे।

आओ, विश्वास को पकड़े रहें

प्रभु के पास आने के बाद, अब हमें मिली आशा को "अडिगता" के साथ पकड़े रहना है। (पद 23) 'अडिगता' से पकड़ने का मतलब किसी वस्तु को पूरा सुरक्षित संभाल कर रखना है। लेखक पाठकों को वह आशा पकड़े रखने को कहता है। वह आशा क्या थी? यह प्रभु यीशु मसीह के कार्य के द्वारा तैयार किया गया उद्धार और अनंत जीवन है। यह हमारे पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ सही संबंध की आशा है। यद्यपि उद्धार का उपहार मुत है, परंतु हमें यह याद रखना है कि यह हमेशा आसान नहीं होगा। यीशु मसीह ने स्वयं अपने जीवन से सिखाया कि परमेश्वर के साथ जीना कितना कठिन है। अनगिनत संतों को मसीह में अपने विश्वास और आशा के लिए सताया गया। विश्वास और दिल की सच्चाई के साथ परमेश्वर के पास आने वालों को मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहने को बुलाया गया है।

हमें ऐसा इसलिए करना है क्योंकि परमेश्वर के सभी वायदे सच हैं। हमें वायदे देने वाला उन्हे पूरा भी करेगा। वह झूठ नहीं बोल सकते। हमारी एकमात्र आशा प्रभु यीशु में है। हमारा और कोई स्थान नहीं है। जो उसके हैं, वे इस बात को समझ सकते और उसके साथ बने रहते हैं। वे प्रभु के द्वारा उन्हे दिए गए मार्ग से नहीं भटकते और हर कीमत पर उसके वायदों को 'अडिगता' के साथ पकड़े रहते हैं।

आओ, एक दूसरे को उकसाएँ

इन दिनों में प्रभु मुझे दिखा रहे थे कि मैं मसीही जीवन अकेले नहीं जी सकता हूँ। अंत तक बने रहने में मुझे प्रभु की ताकत ही नहीं चाहिए, परंतु मुझे मसीह में भाई और बहनों की भी जरूरत है। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हे वरदान दिए हैं कि वे जरूरत में मेरी मदद कर सकें।

पद 24 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उन्हे एक दूसरे की जरूरत है। वह उन्हे सामने आने वाली हर मुश्किल के बावजूद, एक दूसरे के विश्वास को प्रोत्साहित करने की चुनौती देता है। विशेष तौर पर, वह उन्हे एक दूसरे को प्रेम और भले कामों में उकसाने की चुनौती देता है। मुझे विश्वास में मेरे भाई बहनों की ओर देखना है। मुझे उनके और उन्हे मेरे सहयोग की आवश्यकता है। परमेश्वर ने हमें समाज में रहने के लिए बुलाया है। प्रभु का दिन जैसे जैसे नजदीक आ रहा है, परमेश्वर के लोगों को उतनी ही अधिक एक दूसरे की जरूरत महसूस होगी।

आओ हम दूसरे से मिलना न छोड़ें

यह सिद्धांत पहले से काफी नजदीक है। प्रभु के द्वारा हमारे लिए किए गए कार्य एवं विश्वास के सामने आने वाली कठिनाईयों की रोशनी में, हमें दूसरे विश्वासियों के साथ संगति करना हमारी आदत बनानी होगी। (पद 25) यह संगति कई रूपों में हो सकती है। यह मात्र कलीसिया में उपस्थिति पर आधारित नहीं है। संगति का सबसे बड़ा क्षण मैंने अकेले में प्रभु के बारे में किसी को बताने में महसूस किया है। यहाँ पर दूसरे दैवीय विश्वासियों के साथ संगति और पारस्परिक प्रोत्साहन के लिए एक दूसरे से लगातार मिलने पर जोर दिया गया है। हमें एक दूसरे के प्रति जबावदेह बनना है। हमें एक दूसरे की प्रार्थना एवं प्रोत्साहन की जरूरत है।

इस बात पर ध्यान दें कि जैसे जैसे प्रभु का दिन समीप आ रहा है, हमें एक दूसरे से मिलने की गति को बढ़ाना है। दिन आ रहा है जब दुश्मन को और आजादी दी जाएगी। उसे हमारे देश में दुष्टता को बढ़ावा देने के लिए स्वतंत्र किया जाता है।

बाइबल कहती है, जैसे जैसे अंत नजदीक आ रहा है, यह नूह के दिनों के समान बन रहा है जब हर कोई अपनी अपनी मर्जी से जी रहा था। (मती 24:37-39) परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के प्रति सोचना कम हो जाएगा। (2 तिमु. 3:1-5) समाज विश्वासियों को त्याग देगा। (मती 24:9) जैसे जैसे सब कठिन होता जाएगा, विश्वासियों को एक दूसरे के सहयोग और उत्साह के लिए आपस में मिलना अधिक जरूरी होता जाएगा।

प्रभु ने हमारे लिए जो किया है, उसकी रोशनी में हमें उसके पास पूरे निश्चय के साथ जाना है। हमें उसके वायदों को पकड़े रहना है और आगे आने वाली समस्याओं में एक दूसरे को प्रोत्साहन और सहयोग देना है। रास्ता आसान न होगा। हमें पिता की गहन संगति, उसके वायदों की याद और भाई बहनों की संगति एवं प्रोत्साहन की जरूरत पड़ेगी। और इसी कारण परमेश्वर के सच्चे सेवक अंत तक बने रहेंगे।

सोच विचार के लिए:

- हम परमेश्वर के पास कैसे आ सकते हैं? मसीह ने परमेश्वर तक हमारी पहुँच बनाने के लिए क्या किया?
- आशा को पकड़े रहने का अर्थ क्या है? उस आशा पर से हमारी पकड़ हटाने की कौन कौनसी परीक्षाएँ हमारे सामने आ सकती हैं?
- मसीह की देह के महत्व के बारे में हम क्या सीखते हैं? परमेश्वर के साथ आपकी चाल में दूसरे भाई बहनों की भूमिका का क्या महत्व है?
- जाँचों और समस्याओं में बने रहने के बारे में यह पद्यांश हमें क्या बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह अपने वायदों के प्रति विश्वासयोग्य है। उसका धन्यवाद कि हम उसके वायदे के प्रति निश्चित हैं।
- प्रभु से कहें कि वह आपको मिली आशा को अंत तक पकड़े रहने का बल और साहस दे।
- प्रभु से पूछें कि आप मसीह में अपने भाईयों और बहनों को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हो।
- क्या आपने कभी अपने भाई या बहन की सेवा को पाया है? एक क्षण लेकर प्रभु का धन्यवाद करें कि कैसे प्रभु ने उसको आपके जीवन में उपयोग किया।

28

पीछे हटना

इब्रानियों 10:26-39 पढ़ें

पिछले सत्र में, इब्रानियों के लेखक ने पाठकों को चुनौती दी कि वे प्रभु में मिली आशा को पकड़े रहें। वह उनसे इस बात की रोशनी में डटे रहने को कहता है कि प्रभु स्वयं उनके लिए पापबलि बन गया। उनके बदले में, प्रभु का बलिदान माँग करता है कि वे अपने पापों से फिरे और उसके लिए जिएँ।

पद 28 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को चेतावनी देता है कि वे प्रभु के द्वारा उनके लिए किए गए कार्य को जानने के बावजूद जनबूझकर पाप करते न रहें। जानबूझकर किए गए पापों के बारे में हमें समझना जरूरी है। जब हम जानबूझकर किए गए पापों की बात करते हैं तो ये वो पाप हैं जो अन्जाने या अज्ञानता में नहीं होते। अर्थात, हम सब कमजोरी के क्षणों में पाप कर जाते हैं। अक्सर हम इसलिए पाप करते हैं क्योंकि हम वचन में इतने परिपक्व नहीं होते हैं कि हम हमारी गलती को पहचान सकें। हम जानबूझकर किए गए पापों में ऐसे पापों की बात नहीं कर रहे हैं।

हम पद 26 में देखते हैं कि जानबूझकर किया गया पाप सच को जानने के बावजूद किया जाने वाला पाप है। दूसरे शब्दों में, जानबूझकर पाप करने वाला व्यक्ति जानता है कि वह गलत कर रहा है और करना जारी रखता है। जानबूझकर किया गया पाप शरीर की कमजोरी से नहीं होता है। व्यक्ति के पास पाप का विरोध करने की क्षमता है परंतु वह करना नहीं चाहता है। ये लोग परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने का प्रयास नहीं करते हैं। परमेश्वर का आत्मा इन्हे पापबोध कराता है, परंतु वे विरोध और अपनी मनमानी करना जारी रखते हैं।

हमें बताया गया है कि पाप में जारी रहने वाले क्षमा की सारी आशा से स्वयं को वंचित कर देते हैं क्योंकि वे अपने पापों को प्रभु यीशु के लहू में समर्पित करना नहीं चाहते हैं। वास्तव में वे कह रहे हैं, "मैं मेरा पाप रखना चाहूँगा। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यीशु मुझे आजाद करने के लिए मरे। मैं उसके बलिदान

को ठुकराता और पाप को अपने पास रखता हूँ।'' जीवन के ऐसे क्षण में आना कितना खतरनाक है।

यदि हम प्रभु और हमारे लिए किए गए उसके बलिदान से मुख मोड़ लें तो हमारे पास क्या आशा रह जाएगी? हमें देखा कि पाप बलिदान की माँग करता है। पाप को हटा सकने वाला एक मात्र बलिदान प्रभु यीशु मसीह का बलिदान है। यदि हम उसे और उसकी क्षमा को ठुकरायें, तो हमें परमेश्वर के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि क्षमा हर एक के लिए उपलब्ध है जो इसे स्वीकार करना चाहता है, इसे ठुकराने वालों का न्याय और धधकती आग इंतजार कर रहे हैं। (पद 27)

परमेश्वर ने हमें पुराने नियम के तहत दिखाया कि पाप का दण्ड मृत्यु है। अधिकतर मामलों में, यह किसी जानवर की मृत्यु थी। तौभी, दूसरे मामलों में, दो या तीन गवाहों के सामने, परमेश्वर चाहता था कि जानबूझकर उसका नियम तोड़ने वाले को मृत्यु दण्ड दिया जाए। (पद 28)

यदि जानबूझकर पाप करने वालों के साथ पुराने नियम में ऐसे व्यवहार किया जाता था, तो नये नियम में यह और कितना गंभीर होगा जहाँ बिचवई स्वयं यीशु कर रहे हैं? कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर ने पुराने नियम में कठोरता के साथ न्याय को लागु किया, परंतु नए नियम में वह थोड़ा नरम है। परंतु इब्रानियों का लेखक जो अपने पाठकों को कह रहा है, वह इस विचार के विपरीत लगता है। उसने पद 29 में उन्हे बताया कि प्रभु यीशु के कार्य को ठुकराने और जानबूझकर पाप करने वाले, पुराने नियम के लोगों से अधिक दण्ड के योग्य हैं। इसकी वजह यह है कि उन्होने परमेश्वर के पुत्र को पैरों तले रौंद दिया। यीशु मसीह को रौंदने का मतलब उसकी ओर से मुख मोड़ लेना है। यह ऐसा है कि हमने क्षमा का उपहार पा तो लिया परंतु इसे जमीन पर फेंक दिया और इस प्रकार रौंदने के लिए बढ़ते चले गए कि उस उपहार का उपहास कर डाला। उसके लिए कितना उपहास जिसने हमारी क्षमा के लिए अपना जीवन दे दिया। यदि पुराने नियम में, पवित्र वस्तु को छुने वाला मृत्युदण्ड पाता था, तो मसीह, परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु के साथ ऐसा व्यवहार करने वाला भी मृत्युदण्ड के लायक है।

उद्धार और क्षमा के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करने वालों को परमेश्वर दण्ड देने से नहीं हिचकिचाएँगे। इस बिंदु को साबित करने के लिए, लेखक पद 30 में व्यवस्थाविवरण 32:35 का उल्लेख करता है:

अत: हम उसे जानते हैं जिसने कहा, ''बदला लेना मेरा काम है; मैं पलटा

लूँगा'', और फिर, ''प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।''

पुराने नियम में परमेश्वर का वायदा था कि वह पाप का बदला लेगा। वह बुराई का बदला न्याय से देगा। हमारे पास झूठ नहीं बोलने वाले परमेश्वर का वायदा है; कि वह पाप और बुराई का न्याय करेंगे। इससे और अधिक निश्चय कुछ नहीं हो सकता। जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना बहुत ही भयानक होता है। (पद 31) उसका क्रोध और बदला वास्तविक हैं। हम पुराने नियम में उसके क्रोध की केवल झलक देखते हैं। उसके क्रोध की पूरी ताकत तो अभी देखनी बाकी है।

लेखक पाठकों को वे दिन याद करने को कहता है जब वे प्रभु के पास आए ही थे। (पद 32) वे इब्री विश्वासियों के लिए कठिन दिन थे। उन्हे कठिन सताव में डटकर खड़े रहना था। (पद 33 देखें) उनमें से कुछ लोगों का सार्वजनिक उपहास हुआ। उनके द्वारा सहा गया सताव वास्तविक था। कई बार वे सताव पाने वालों के समीप बगैर निंदा के खड़े होकर उनके एवं उस वजह के साथ अपनी पहचान बनाते जिनके वे प्रतिनिधि थे। (पद 33) उन प्रारंभिक दिनों में, मसीह में आने के बाद, उनके विश्वास के लिए उन्हे कैद में भी डाल दिया जाता था। जब उनकी संपत्तियाँ हड़प ली गई, तो उन्होने सहर्ष अपनी उस हानि को स्वीकारा क्योंकि वे मसीह के लिए सताव सह रहे थे और जानते थे कि उसने उनके लिए कुछ महान रख छोड़ा था। (पद 34)

इब्री मसीहियों को भी उसी साहस के साथ डटे रहने और कभी भी उसे नहीं छोड़ने को कहा गया, जो उनमें प्रभु को स्वीकार करते ही उत्पन्न हुआ था। (पद 35) परमेश्वर उन्हे उनकी विश्वासयोग्यता का इनाम देगा। उन्हे परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते रहने में अडिग रहना था। जाँचें और सताव आएँगे। उनसे घृणा करेंगे, खिल्ली उड़ाएँगे, कैद में डाले जाएँगे। कईयों को अपना जीवन न्यौछावर करना पड़ेगा। परमेश्वर अंधा न था कि ये सब देख न सके। दिन आ रहा था जब वे अपना इनाम पाएँगे। इस दौरान, उन्हे प्रभु यीशु को आदर देने में सावधान रहना और हमेशा उनके लिए छिड़के गए वाचा के उस लहू को सदैव याद रखना था।

प्रभु के आगमन का दिन आ रहा था। उसने अपनों के लिए वापिस आने का वायदा किया। उस दिन हर जाँच और सताव का अंत होगा। वे हमेशा उसके साथ रहेंगे। प्रभु यीशु के साथ ये संगति उनके द्वारा सहे गए हर सताव का मूल्य चुका देगी। प्रभु की उपस्थिति में सदैव रहने की खुशी की तुलना में सहा गया दर्द और सताव कोई मायने नहीं रखेगा।

पद 38 में लेखक अपने पाठकों को हबक्कुक 2:3-4 में भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहे गए वचनों के बारे में बताता है:

परंतु मेरा धर्मी विश्वास के साथ जीएगा। और यदि वो पीछे हटे, तो मैं उससे प्रसन्न न हूँगा।''

इस पद के अनुसार, धर्मी व्यक्ति विश्वास से जिएगा। धर्मी की आँखें परमेश्वर और उसके वायदों पर बनी रहती है। विश्वास के द्वारा जीने वाला पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा रखता है, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए। जब उनके मार्ग में सताव और कष्ट आते हैं तो वे अपनी आँखें परमेश्वर की ओर लगाते और उसके वायदों को जकड़ लेते हैं। वे जानते हैं कि परमेश्वर उन्हे पार ले जाएगा। उनका खजाना इस संसार में नहीं है। वे कठिनाईयों में पीछे नहीं हटते हैं। वे अपनी आँखें प्रभु यीशु और उसके वायदों में गाड़कर अडिग रहते हैं।

हम अध्याय 10 को एक प्रोत्साहन के वचन के साथ समाप्त करते हैं। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उसे उनके विश्वास के सच्चे होने में पूरा निश्चय है। वह बताता है कि उनका स्वभाव समस्याओं में कभी भी पीछे हटने वालों जैसा नहीं था। परंतु वे अपने विश्वास में अटल रहेंगे और बचाए गए। जिन्होने वास्तव में उद्धार पाया है वे अडिग बने रहेंगे। हमारे उद्धार की सच्चाई की जाँच यह है कि हम अंत तक विश्वासयोग्य हैं। कई सारे यीशु को प्रभु कहते हैं परंतु कठिन दौर आते ही गिर पड़ते हैं। परंतु, सच्चे विश्वासी का विश्वास समय और जाँच से ही परखा जाता है। यद्यपि विश्वास के पुरूष अधिक सताव सहें, परंतु प्रभु के प्रति उनका प्रेम और पवित्र आत्मा के द्वारा उनके दिलों में डाला गया विश्वास उन्हे पीछे हटने से बचाए रखता है।

सोच विचार के लिए:

- जानबूझकर किया गया पाप क्या है? आप कैसे बता सकते हैं कि एक व्यक्ति जानबूझकर अथवा अपनी इच्छा से किये गये पाप का दोषी है या नही?
- इब्रानियों का लेखक यीशु के द्वारा लाए गए क्षमा के प्रस्ताव को ठुकराने वालों के बारे में क्या कहता है?
- इस पद्यांश में हम परमेश्वर के न्याय के बारे में क्या सीखते हैं?
- सच्चे विश्वास को प्रकट करने में अडिगता की क्या भूमिका है?
- जब हमारे सामने जाँचें आती हैं तो हमें विश्वास संभाले कैसे रहता है?

- प्रार्थना के लिए:
- प्रभु से कहें कि वो आपको पाप से सुरक्षित रखे।
- उसके द्वारा दिए गए क्षमा के उपहार के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह पाप और दुष्टता का न्याय करेगा। उसका धन्यवाद करें कि वह पवित्र परमेश्वर है।
- प्रभु से उस हर सताव को सहने की सामर्थ माँगें जो आपके सामने आता है। उससे मदद माँगें कि मार्ग में आने वाले हर सताव में भी उसका सम्मान कर सकें।

29

विश्वास

इब्रानियों 11:1-16 पढ़ें

हमने पिछले मनन में देखा कि अडिगता ही सच्चे विश्वास की जाँच है। सच्चा विश्वास जाँच और मुश्किलों में डटे रहने की ताकत देता है। इब्रानियों के लेखक को पूरा विश्वास है कि उसके पाठकों में सच्चा विश्वास है। अडिगता में सच्चे विश्वास की अनवार्यता इस बात का संकेत है कि मसीही जीवन सदैव आसान नहीं होगा। प्रभु यीशु के प्रति समर्पण के कारण कुछ सताए जाएँगे, तो कुछ मार दिए जाएँ। हमारे आगे गए लोगों ने मसीह के लिए अपना जीवन जोखिम में डाल दिया था।

जब हम अध्याय 11 शुरू करते हैं, लेखक विश्वास की परिभाषा बताने का समय निकालता है। वह हमें बताता है कि विश्वास आशा की गई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी बातों का प्रमाण है। इसे हमें थोड़ा समय लेकर समझना जरूरी है।

विश्वास आशा की गई वस्तुओं का निश्चय है। जब भी हम आशा शब्द का उपयोग करते हैं, हम एक प्रकार संदेह प्रकट करते हैं। "मैं ये या वो करने की आशा करता हूँ" का मतलब है कि यदि सब कुछ ठीक रहा या जिंदा रहा तो मैं कर लूँगा। लेखक के द्वारा वर्णित आशा मात्र कुछ करने या देखने की इच्छा से कहीं बढ़कर है। यहाँ वर्णित आशा वो निश्चितता है कि हम अपना जीवन जोखिम में भी डालने को तैयार हो सकते हैं। यह परमेश्वर के वायदों पर निश्चय भरा भरोसा है।

हमारे सामने आने वाली बातों का निश्चय करना आसान है। मैं जानता हूँ कि मैं इस समय बैठकर टाईप कर रहा हूँ। मैं इसके बारे में निश्चित हूँ क्योंकि मैं इसका अनुभव कर रहा हूँ। मैं मेरे चारों ओर लोगों को देख सकता हूँ। मुझे पता है कि वे भी उसी कॉफी की दुकान में हैं, जहाँ मैं हूँ। इसमें विश्वास की जरूरत नहीं होती है। मैं अपनी आँखें से देखता और कानों से सुनता हूँ। हर कोई आस पास दिखने

और सुनी जाने वाली बातों के बारे में निश्चित हो सकता है। परंतु, विश्वास उन बातों का निश्चय है जिन्हें हम देख नहीं सकते हैं। लिखते वक्त मैं यहाँ परमेश्वर को नहीं देख सकता हूँ परंतु विश्वास के द्वारा मैं स्वीकार करता हूँ कि वह यहाँ है। और मैं ऐसा इसलिए जानता हूँ क्योंकि उसने मुझे कहा है कि वह मुझे कभी नहीं छोड़ूँगा। (इब्रानियों 13:5) यह वायदा मेरे पास है और यद्यपि मैं उसे अपनी आँखों से नहीं देख सकता, मैं जानता हूँ कि वह मेरे पास है।

हमें विश्वास का एक और पहलू देखना है। कुछ लोग हैं जो परमेश्वर के बारे में कुछ जानते हैं। वे जानते हैं कि वह सर्वोच्च और सर्वशक्तिशाली है। वे समझते और विश्वास करते हैं कि परमेश्वर सब कुछ कर सकता है। परमेश्वर के बारे में ज्ञान महत्वपूर्ण है परंतु यह सच्चा विश्वास नहीं हो सकता है। यह विश्वास करना संभव है कि परमेश्वर कुछ कर सकता है, परंतु यह विश्वास करना मायने रखता है कि वह आपकी हालात में भी कुछ कर सकता है। यदि आप विश्वास नहीं कर सकते कि परमेश्वर आपकी हालातों में भी चमत्कार कर सकता है, तो आप नहीं सकते कि आपके पास विश्वास है। मैं विश्वास कर सकता हूँ कि परमेश्वर मेरी जरूरत पूरी करेगा परंतु संदेह है कि वह मेरी अब की परिस्थिति में कुछ कर पायेगा। आप तभी सब कुछ जोखिम में डालोगे जब आपके पास पूरा भरोसा होगा कि परमेश्वर आपको संभालेंगे और सारी बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करेंगी। विश्वास एक निश्चय है, मात्र एक सैद्धांतिक समझ नहीं है। विश्वास हमारे मन से बढ़कर व्यवहार को प्रभावित करता है।

सच्चा विश्वास रखने वाले बातों के बारे में इतने निश्चित होते हैं कि वे उसके लिए अपनी जान तक जोखिम में डालने के लिए तैयार हो जाते हैं। यद्यपि उनकी आँखें और कान कुछ और ही देखती हों, अपने चारों ओर मौजूद प्रमाणों की बजाय, वे परमेश्वर की बातों पर विश्वास करते हैं। पद 2 के अनुसार, इसी विश्वास के लिए संतों को सराहा गया था।

विश्वास ही के द्वारा हम स्वीकार करते हैं कि संसार की रचना परमेश्वर ने की है। (पद 3) संसार को बनाने के दौरान कोई मनुष्य उपस्थित नहीं था। परमेश्वर ने वचन बोले और संसार शुन्य में से बना दिया गया। हमें यह कैसे पता? हम इसे विज्ञान के द्वारा साबित नहीं कर सकते हैं जो किसी भी बात को साबित करने का एकमात्र तरीका है। यह हम विश्वास के द्वारा की जान सकते हैं। वचन में परमेश्वर ने हमें बताया है कि उसने संसार की रचना की। हम इसे विश्वास के साथ स्वीकार करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर और उसके स्वभाव को जानते हैं। हमने कभी

परमेश्वर को नहीं देखा। संसार की सृष्टि के दौरान हमने नहीं देखा परंतु हम जानते हैं कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते। वो जो कहते हैं हम उस पर विश्वास करते हैं।

विश्वास ही से, हाबिल ने कैन से अधिक भावता बलिदान चढ़ाया। (पद 4) हमें यह बात समझनी है कि पुराने नियम के अनुसार, दोनों के बलिदान सही थे। पुराने नियम के तहत, मेम्ना या किसी के बगीचे से लाया गया पहला फल, दोनों स्वीकार्य थे। इस पद को समझने के लिए बलिदान के तरीके को नही, वरन् बलिदान के साथ चले विश्वास को देखना जरूरी है। पद 4 में ध्यान दें कि हाबिल को धर्मी कहा गया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने चढ़ाई गई वस्तु के आधार पर स्वीकार नहीं किया परंतु उसे चढ़ाने वाला वह स्वयं धर्मी व्यक्ति था जिसने परमेश्वर पर विश्वास कर बलिदान चढ़ाया। परंतु कैन का व्यवहार सही नहीं था। वह परमेश्वर के पास विश्वास के साथ नही, वरन् अपने भाई के प्रति कड़वाहट से भरे दिल के साथ आया। परमेश्वर ने हाबिल के बलिदान को उसके साथ आए विश्वास के कारण ग्रहण किया। यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी आराधना स्वीकार करे तो हमें उसके पास विश्वास के साथ आना जरूरी है। हम उसके साथ मिलने की प्रतीक्षा के साथ आएँ। उसके कहे पर विश्वास कर हमें उसकी सेवा करनी है। यदि हम अपने दिल में गहरे प्रश्नों के साथ आएँ तो हम उसे प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। विश्वास के साथ मिली आराधना ही परमेश्वर के द्वारा ग्रहणयोग्य होती है।

हनोक भी, अपने समय में विश्वास दिखाता है। (पद 5) उसकी समान उम्र के लोग जब परमेश्वर से दूर हो रहे थे, हनोक ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसके साथ जीवन जीता रहा। इस बात ने परमेश्वर को इतना प्रसन्न किया कि उसने उसे मृत्यु से बचाए रखा। उसने उसे अपने पास उठा लिया।

पद 6 स्पष्ट करता है कि विश्वास के बिना हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर के करीब आते वक्त हमें दिल से यह विश्वास करना है कि वे मौजूद हैं और वे आपकी प्रार्थनाओं को सुनकर उत्तर देते हैं। आपको यह इतनी दृढ़ता से विश्वास करना है कि आप उसके प्रकट होने तक, उसे जाने नहीं देंगे। ऐसे से प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं मिलता जिसके मौजूद होने तक यदि नहीं माना जाए। यदि आप विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनता और उत्तर देता है तो इस प्रार्थना का लाभ ही क्या होगा? यदि प्रार्थना करने वाला विश्वास नहीं करता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है, और वह प्रार्थनाओं को सुनता है तो वह

अपना समय बर्बाद करता है। यदि हम संदेह करें कि परमेश्वर अपने वचन के प्रति सच्चा नहीं है तो उसका अनादर करते हैं।

पद 7 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि किस प्रकार नूह को बाढ़ की चेतावनी दी गई। बाढ़ आने के कोई संकेत नहीं थे। नूह के पास केवल परमेश्वर का वचन ही था। उसने नाव को उस समय बनाया जब उसे तैराने के लिए उसके आस पास कोई जल नहीं था। उसने परमेश्वर के वचन को सुनकर और उस पर पूरा भरोसा कर ऐसा किया। उसने उस भरोसे में वे सारे महिने डाल दिए जो उसे जहाज को बनाने में लगे, यद्यपि उसके पड़ोसियों ने उसका मजाक उड़ाया।

विश्वास हमें आज्ञाकारिता की पुकार देता है। यह हमें अपनी प्रसिद्धि दाँव पर लगाने को कहता है। इसमें प्रयत्न और कोशिश कर आवश्यकता होती है यद्यपि हमें झट से परिणाम नजर न आए या सब बेतुका लगे। इसी प्रकार का विश्वास परिणाम नहीं दिखने के बावजूद भी, सेवकाई में आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करता है। इसी वजह से पौलुस सुसमाचार सुनाने के कारण पत्थरवाह किए जाने के बावजूद शहर शहर घूमता रहा। यदि आपके दिल में यह दृढ़ निश्चय नहीं होता कि परमेश्वर ने इस सेवकाई के लिए आपको बुलाया है, तो कितनी ही बार आपने सेवकाई को छोड़ देने का निर्णय ले लिया होता। नूह को परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए सराहा गया है। परमेश्वर उससे प्रसन्न था। वह उनका पिता है जो परमेश्वर पर आज भी विश्वास करते हैं। (पद 7)

इसी प्रकार, अब्राहम ने अपना घर छोड़कर विश्वास प्रकट किया और उसे केवल उस जगह की ओर जाने की जानकारी थी जिसकी उसे बुलाहट मिली थी। (पद 8) उसे आगे आने वाले खतरों का पता नहीं था। उसे नहीं पता था कि यात्रा के दौरान वह अपने परिवार का कैसे प्रबंध करेगा। उसे तो यह भी नहीं पता था कि वह कहाँ जा रहा है। मानवीय तौर पर कहें तो किसी अंजान लक्ष्य की ओर बिना किसी जानकारी के निकल जाना बिल्कुल बेतुका लगता था। क्या पता उस देश में क्या उसका इंतजार कर रहा था? अब्रहाम को नहीं पता था कि देशवासी दोस्ती दिखायँगे या दुश्मनी परंतु इससे उसे कोई फर्क भी नहीं पड़ा। उसके विश्वास ने भविष्य के बारे में परमेश्वर पर भरोसा करने को प्रेरित किया। उसने विश्वास किया कि यदि परमेश्वर ने उसे बुलाया है तो वही उसके प्रबंध करेगा और उसके आगे चलेगा। अब्रहाम के विश्वास ने उसे अंजान बातों में कदम रखने का बल दिया। उसने परमेश्वर के उद्देश्यों को झट से पूरा होते हुए नहीं देखा। वह तंबुओं में रहता

हुआ मरूस्थल में से होकर गुजरा। वह देश में अपरिचित था जो उसका अपना बनने जा रहा था। उसके बेटों, इसहाक और याकुबने भी यही घुमक्कड़ जीवन जीया। (पद 9) वे नहीं देख पाए कि परमेश्वर इस देश को उनके बच्चों के हाथ में सौंपेगा। विश्वास ऐसे समयों में हमारी अगुवाई करेगा। जब हम अब्रहाम की तरह विश्वास में चलते हैं तो जरूरी नहीं कि हमारे पास सारे सवालों के जवाब हों। अब्रहाम को विश्वास था कि परमेश्वर अपने समय पर सही कार्य करेगा। उसके विश्वास ने केवल इस धरती पर नींव डाले गए एक शहर की आशा नहीं की, परंतु उस घर की भी आशा थी जिसे परमेश्वर स्वयं बनाएगा। (पद 10)

अब्रहाम के विश्वास का एक और पहलु उसे वंशजों से जुड़ा था। परमेश्वर ने वायदा दिया कि वह उसके वंश को एक बड़ा राष्ट्र बनाएगा परंतु उसका कोई पुत्र नहीं था और वह एवं उसकी पत्नी काफी बूढ़े हो चुके थे। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को बताता है कि अब्रहाम ने पुत्र देने के परमेश्वर के वायदे पर विश्वास किया। (पद 11) मानुषिक तौर पर, इस उम्र में पुत्र का जन्म मुमकिन नहीं था। परंतु अब्रहाम ने वायदा करने वाले परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा किया। परमेश्वर अपने वायदे के प्रति विश्वासयोग्य नहीं नहीं रहा, बल्कि उसने अब्रहाम को आसमान के तारों की तरह अनगिनत संतानें दीं। (पद 12)

विश्वास असंभव लगने वाली बातों में विश्वास करता है। यह मृत्यु में भी विश्वास करता है। जब उत्तर जीवन में नहीं आता है तो उसकी नजर जीवन के बाद भी बनी रहती है। कब्र मेरे पार्थिव जीवन का अंत है, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का नही। मैं चला भी जाऊँ, तौभी वह विश्वासयोग्य रहता है।

विश्वास के ये स्त्री एवं पुरूष इस धरती के लोग नहीं थे। वे यहाँ रहे परंतु उनका दिल स्वर्ग में था। वे इस धरती पर अजनबी थे। (पद 13) वे अन्य लोगों की तरह सोचते या देखते नहीं थे। उन्होने स्वयं को धरती पर दिखने वाली चीजों में सीमित नहीं किया। उन्होने विश्वास की आँखों से देखा। वे इस धरती और यहाँ की संपति के बारे में कम चिंतित थे। ये वस्तुएँ उन्हे आकर्षित नहीं कर पाईं। परमेश्वर उन्हे अपनी संतान कहने में कभी भी शर्मिन्दा नहीं थे। उन्होने परमेश्वर को विश्वास के साथ सम्मानित किया। परमेश्वर उनसे प्रसन्न थे। उसने उनके लिए एक शहर बनाया। (पद 16) वहाँ वे उसके साथ हमेशा हमेशा के लिए रहेंगे।

सोच विचार के लिए:

- लेखक इस अध्याय में विश्वास की क्या परिभाषा देता है?

- यह विश्वास कि परमेश्वर कर सकता है, इस विश्वास से किस प्रकार अलग है कि परमेश्वर करेगा?
- क्या आप परमेश्वर के वायदों के लिए अपना जीवन जोखिम में डालने को भी तैयार हो?
- आराधना में विश्वास की क्या भूमिका है? क्या हम बिना विश्वास के आराधना कर सकते हैं?
- विश्वास और कार्य में क्या संबंध है? विश्वास हमारी जीवनशैली को कैसे प्रभावित करता है?
- विश्वास क्या जोखिम लेगा?
- यह अध्याय हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कितने विश्वास की आवश्यकता के बारे में बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- आप अपने विश्वास की तुलना इस अध्याय में मौजूद लोगों से किस प्रकार करोगे? परमेश्वर से कहें कि वो आपका विश्वास बढ़ाए।
- क्या आप अपने जीवन में किसी समस्या से जूझ रहे हैं? परमेश्वर से कहें कि वह इस विषय में उस पर भरोसा रखने में आपकी मदद करे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह अपने वायदों में हमेशा विश्वासयोग्य है। उसका धन्यवाद कि कई बार उसके मार्गों की समझ नहीं होने पर भी, हम उस पर पूरा भरोसा रख सकते हैं।

30

अधिक विश्वास

इब्रानियों 11:17-40 पढ़ें

हम परमेश्वर के साथ चलने में हमारे विश्वास की भूमिका के बारे में देख रहे थे। हमने विश्वास परमेश्वर की वायदारत् बातों को प्राप्त करने का निश्चय है। यह निश्चय इतना वास्तविक है कि हम इसके लिए अपना जीवन तक जोखिम में डालने को तैयार हैं। लेखक सच्चे विश्वास के कुछ और व्यवहारिक उदाहरणों को पेश करते हुए अपना विषय जारी रखता है।

पद 17 में, लेखक हमें अब्रहाम के विश्वास की सीमा दिखाता है। वायदे के पुत्र को पाने के बाद भी, परमेश्वर के वचनानुसार अपने पुत्र का बलिदान करने पर्वत पर ले गया। अपने लिए परमेश्वर के वचन का उसे इतना निश्चय था कि उसने इसके लिए अपने सर्वश्रेष्ठ खजाने तक को जोखिम में डाल दिया। वह परमेश्वर के उस वायदे को अच्छी तरह से जानता था कि वह राष्ट्रों का पिता कहलाएगा। उसे समझ नहीं आया कि परमेश्वर उसे क्या करने को कह रहा है और यदि वह बच्चे को मार देता है तो कैसे उसे संतान देगा। तौभी, उसने विश्वास किया कि परमेश्वर अपने वायदे को पूरा करने के लिए मरे हुए को भी जिंदा कर सकता है।

अब्रहाम के विश्वास ने परमेश्वर के वचन पर गहरे निश्चय को प्रकट किया। परमेश्वर के द्वारा कहे गए वचन के प्रति उसमें बिल्कुल भी संदेह नहीं था। अपने मानवीय सोच से परे परमेश्वर के कार्य पर उसने पूरा भरोसा किया। क्या आप परमेश्वर की ऐसी अगुवाई को महसूस कर सकते हैं कि आप अब्रहाम की तरह, अपने जीवन के सबसे कीमती खजाने को भी वेदी पर रखने को तैयार हैं। कुछ लोगों के लिए यह घर और चहेतों को छोड़ना होगा जिससे वे विदेशी जमीन पर उसकी सेवा कर सकें। कुछ अन्यों के लिए, अपने भटकते बच्चों को परमेश्वर के हाथों में सौंपना और यह विश्वास करना होगा कि वह उनके विरोध के बावजूद, उनकी संभाल करेगा। विश्वास परमेश्वर में भरोसे के बदले कुछ भी बलि करने को

तैयार रहता है।

वही समान विश्वास अब्रहाम से इसहाक में आया। उसने अपने दोनों पुत्रों, याकुब और एसाव को यह कहकर आशीष दी कि परमेश्वर उनकी संतानों को बढ़ाएगा और अपने पिता अब्रहाम को दिए गए वायदे के अनुसार वारिस देगा। इसहाक ने अपने जीवन में इसको पूरा होते हुए नहीं देखा, परंतु उसने विश्वास किया कि परमेश्वर अपना वायदा अवश्य पूरा करेगा। (पद 20 देखें)

इसहाक के पुत्र, याकुब ने भी अपने बच्चों में इसी विश्वास को डाला। अपने बुढ़ापे में पुत्रों को आशीष देते हुए उसने परमेश्वर के वायदों को दोहराया जो उसके दादा अब्रहाम को दिए गए थे। (पद 21)

पद 22 में, हम एक नई पीढ़ी को देखते हैं जिन्होने भी परमेश्वर के इस वायदे को पकड़ रखा है। जब यूसुफ मिस्र में था, तो उसने अपने भाईयों से कहा कि वे उसकी हड्डियों को मिस्र से ले जाकर, उन्हे अब्रहाम को वायदा किए गए देश में दफना दें। पीढ़ियाँ बीतती चली गईं, परंतु सबने स्वयं के एक घर के लिए परमेश्वर के वायदे पर भरोसा रखा। आप अपने जीवन में परमेश्वर के वायदों को पूरा करने के लिए अपना कितना समय उसे देते हो? अक्सर हम जल्दी हार खा जाते हैं। परंतु हम यहाँ देखते हैं कि सच्चा विश्वास कभी हार नहीं मानता। इसे पीढ़ी दर पीढ़ी दिया जा सकता है। परमेश्वर अपने समय में काम करता है। सच्चा विश्वास इंतजार करता है।

हम मूसा के जीवन में भी विश्वास के प्रकटीकरण को देखते हैं। पहले इसे उसके माता पिता के जीवन के द्वारा दर्शाया गया है जिन्होने उसे तीन महीने तक फिरौन के सैनिकों से छिपाए रखा क्योंकि उन्हे विश्वास था कि यह एक साधारण बालक नहीं है। उन्होने इसे फिरौन से बचाए रखा जो हर नर शिशु को मार डालने में लगा था। उन्होने इस बच्चे को बचाने में अपना जीवन जोखिम में डाल दिया क्योंकि उन्हे भरोसा था कि उसके लिए परमेश्वर की विशेष योजना थी।

यही विश्वास मूसा को भी दिया गया। बड़ा होने पर उसने फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने पर मना किया। उसने अपने लोगों के बीच रहने के लिए, मिस्र के सारे धन को तुच्छ समझा। पापमय मिस्र के सुख सुविधाओं में रहने की बजाय उसने अपने लोगों की निंदाओं में रहना स्वीकार किया। मिस्र के द्वारा दिए जा सकने वाले हर धन और आराम की जगह, उसने इस संसार की नजर में निंदित होना स्वीकारा और परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को महत्व दिया। (पद 26 देखें)

चालीस साल मूसा जंगल में भेड़ों की देखभाल में रहा। उसने विश्वास नहीं खोया। उसने परमेश्वर की ओर अपनी नजर रखी, इस विश्वास के साथ कि एक परमेश्वर अपने वायदे को अवश्य पूरा करेगा। (पद 27) विश्वास धीरजवन्त है। मूसा बना रहा क्योंकि उसने अदृश्य परमेश्वर को देखा था। (पद 27) या फिर यूँ कहें, उसे नहीं पता था कि परमेश्वर अपने वायदों को कैसे पूरा करेगा, तौभी उसका भरोसा और नजर परमेश्वर पर ही बनी रही। परमेश्वर आग में प्रकट होकर, मिस्र से अपने भाई बहनों को छुड़ाने की आज्ञा देकर उसके धीरज को सम्मान देता है।

विश्वास ही के द्वारा मूसा मिस्र जाकर फिरौन का सामना करता है। उसे बिल्कुल भी नहीं पता था कि परमेश्वर लोगों को छुड़ाने में किस प्रकार उसका उपयोग करेगा परंतु उसने आज्ञा मानने की ठानी। मिस्र से लोगों को छुटकारा मिल जाने के बाद भी, जंगल में से गुजरते हुए भी उनकी अगुवाई और प्रबंध में उसे परमेश्वर पर भरोसा जारी रखना पड़ा। बीस लाख से ज्यादा लोगों और जानवरों के पीने, नहाने और भोजन के लिए कितनी मात्रा में जल की आवश्यकता पड़ती थी? इन सारे लोगों और जानवरों के लिए कितनी भोजनवस्तु की जरूरत पड़ती थी? हर दिन उनके भोजन को पकाने के लिए कितनी लकड़ियों की जरूरत पड़ती होगी। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को खिलाने और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया प्रबंध सचमुच विशाल था। इसमें विश्वास की क्या भूमिका रही? कई बार मैं यह सोचकर चकित हुआ हूँ कि परमेश्वर मेरे एक महिने के बिल को चुकाने का क्या प्रबंध करेगा। यहाँ हम मूसा के विश्वास को देख सकते हैं जिसने सब लोगों के प्रबंध के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया। जब परमेश्वर बुलाता है, तो वह उन्हे निपुण और उनके लिए प्रबंध करता है।

मूसा के जीवन में केवल यही एक विश्वास का प्रकटीकरण नहीं था। जब मिस्र में से मृत्युदूत गुजर रहा था, मूसा ने लोगों को मेम्ने का लहू अपने दरवाजों पर लगने को कहा जिससे उन्हे मृत्युदूत से कोई हानि न हो। अपने लोगों के जीवन के लिए उसने परमेश्वर पर विश्वास किया। परमेश्वर ने उन्हे बताया कि वे दरवाजों पर लगे परमेश्वर के लहू तले सुरक्षित रहेंगे। मूसा ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसके लोग बचा लिए गए।

जब वे लाल समुद्र के पास आए और मिस्री उनके नजदीक आते जा रहे थे, मूसा ने परमेश्वर का वचन सुना और लोगों को बताया कि परमेश्वर उन्हे छुड़ाएगा। उसने हवा में अपनी लाठी उठाई और अपने सामने जल को विभाजित होते हुए देखा जिससे परमेश्वर के लोग सूखी भूमि पर से पार होते चले गए। जब मिस्री उनका

पीछा करते हुए आए, जल उन पर दुबारा बहने लगा और वे सब डूब मरे। इन सब बातों में जरूरी था कि मूसा परमेश्वर पर भरोसा करे और उसकी आवाज सुने। मूसा के द्वारा किये जाने वाले कार्य मानवीय तौर पर असंभव थे। जब मूसा ने विश्वास किया और विश्वास के द्वारा आज्ञा मानी, परमेश्वर ने असंभव कार्य किए।

पद 30 में, हम यहोशु और इस्राएलियों की कहानी देखते हैं जब वे यरीहो के शहर में आए। वह शहर शक्तिशाली शहरपनाह से बना हुआ था। परमेश्वर ने यहोशु से कहा कि उन्हे शहर के चारों ओर सात दिनों तक परिक्रमा करनी है। यहोशु को यह सब करने का कोई अर्थ नहीं जान पड़ा। शहर के चारों ओर केवल चक्कर लगाने से किस प्रकार जय मिल सकती थी? परमेश्वर के लिए जरूरी नहीं कि हम समझें या नही, वो केवल यह चाहता है कि हम उसकी आज्ञा मानें। हमें यहाँ एक और बात समझनी है। जिस प्रकार इस्राएलियों ने शहर की परिक्रमा की, मानुषिक तौर पर कहें, तो उन्होने अपना जीवन जोखिम में डाला। वे आसानी से दुश्मनों के तीरों का शिकार बन सकते थे। दीवार पर खड़े सैनिक आसानी से उन्हे मार सकते थे। उनके द्वारा रखा गया हर कदम विश्वास का कदम था। उन्हे विश्वास करना था कि जब वे परमेश्वर की आज्ञा में चलेंगे, तो परमेश्वर उन्हे सुरक्षित रखेगा। कई बार विश्वास हमें सीधा खतरे के सामने ला खड़ा करता है। कई बार हमें सीधा युद्ध में कूद जाने को कहा जाता है। जिस प्रकार यहोशु ने सात दिन तक लोगों की परिक्रमा में अगुवाई की, उन्हे याद दिलाया जा रहा था कि परमेश्वर सुरक्षा प्रदान करता है। वह युद्ध लड़ेगा। सात दिन पूरे होते ही, परमेश्वर ने यरीहो की दीवार को ढ़ाया और अपने लोगों को छुटकारा दिलाया। विश्वास परमेश्वर के तरीके से कार्य करता है। यह मानुषिक बुद्धि पर कार्य नहीं करता है।

केवल महान लोगों ने ही इस प्रकार के विश्वास को नहीं दिखाया। राहाब वेश्या ने भी परमेश्वर पर अपना विश्वास दिखाया। जब भेदिए देश की जानकारी लेने गए तो उसने पहचान लिया कि वे इस्राएल के हैं। वह अपने दिल में जानती थी कि परमेश्वर उन्हे विजय देगा। उसने अपने जीवन को जोखिम में डालकर भेदियों की मदद की। भेदियों की मदद और इस्राएल के परमेश्वर पर भरोसा करने के कारण उसे मारा नहीं गया। (पद 31)

परमेश्वर पर अपना विश्वास दिखाने वालों की सूची लम्बी है। पद 32 हमें गिदोन, बाराक, शिमशोन, याफेत, दाऊद, सुलैमान और भविष्यद्वक्ताओं जैसे लोगों के बारे में बताता है। इन्होने और अन्य लोगों ने विश्वास के द्वारा कई राष्ट्र अपने

कब्जे में किया। वे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के लोगों के लिए न्याय ले आए। उन्होने परमेश्वर के वायदों पर भरोसा किया और उन वायदों के उत्तर को देखा।

दानिएल और उसके मित्रों में मामले में, शेरों के मुँह बंद किए गए, आग के भट्टों को शांत कर दिया गया। ऐसे एवं अन्य व्यक्तिगण मृत्यु की तलवार से बच निकले, अपनी ताकत के द्वारा नही, परंतु परमेश्वर की अगुवाई और सुरक्षा के द्वारा। वे विशेष लोग नहीं थे। वे साधारण, आम लोग थे जिन्हे परमेश्वर ने उनकी कमजोरियों में भी उपयोग किया। वे परमेश्वर पर भरोसा और उसकी कही गई बातों पर विश्वास कर ताकतवर बनते गए।

केवल पुरूषों ने ही ऐसा विश्वास प्रकट नहीं किया। स्त्रियों ने अपने मृतकों को वापिस पाया। अन्यों को सताया गया और उन्होने अपने सताने वालों के सामने समर्पण करने से इंकार कर दिया। उन्होने प्रभु को इंकार करने के बजाय, सताव सहना स्वीकार किया। उन्होने विश्वास किया कि वह उन्हे संभालेगा और जिंदा करेगा। उन्हे उसके वायदों का पूरा निश्चय था।

विश्वास के द्वारा जीने का अर्थ यह नहीं है कि हमारे लिए सब कुछ भला ही होगा। विश्वास से जीने वाले कईयों ने विश्वास के कारण सताव भी सहा। उन्होने विरोध करने वालों के क्रोध को देखा। पवित्रशास्त्र विश्वास के स्त्री एवं पुरूषों के उदाहरणों से भरा है जिन्हे पीटा गया, जंजीरों से बाँधा गया और कैदखानों में डाला गया। कईयों को पत्थरवाह किया गया, चीर दिया गया या तलवार से घात किया गया। (पद 36-37)

विश्वास के ये स्त्री पुरूष धनी नहीं थे। कईयों के पास कुछ नहीं था। वे अकेले थे और विश्वास के कारण उन्होने निंदा और कष्ट सहा। उनके पास रहने के घर नहीं थे, उन्हे अपनी जान बचाने एवं लोगों के क्रोध से बचने के लिए जंगलों और पहाड़ों में भटकने एवं गुफाओं और खोहों में रहने को विवश कर दिया गया था। संसार ने उनसे बैर किया परंतु परमेश्वर ने उन्हे संसार के योग्य नहीं समझा। इनमें से कईयों ने अपने जीवन में परमेश्वर के वादों को पूरा होते हुए नहीं देखा। तौभी उन्होने आशा नहीं छोड़ी। उन्होने परमेश्वर पर अपना विश्वास और भरोसा रखा। जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो तो परमेश्वर पर भरोसा रखना एक बात है। परंतु जीवन में सब कुछ बुरा होने के बावजूद भी परमेश्वर पर भरोसा रखना अलग बात है। वायदों के दूर होने के बावजूद उन्होने भरोसा बनाए रखा। इतना भरोसा कि मरने को भी तैयार थे।

परमेश्वर ने भी उन लोगों से हार नहीं मानी। उनके लिए उसके पास बड़ी योजनाएँ थीं। प्रभु यीशु के द्वारा, उस पर भरोसा करने वाले प्रभु के उद्धार को जानेंगे। और उनके द्वारा प्रभु अपनी बड़ी और अद्‌भुत योजनाओं को पूरी करेगा।

इस अध्याय में प्रकट विश्वास वास्तव में हमारे लिए एक चुनौती है। हमसे पहले गए स्त्री एवं पुरूषों के पास विश्वास के बारे में हमें बताने को बहुत कुछ है। ये लोग उस परमेश्वर के लिए अपने जीवन तक को दाँव पर लगाने को तैयार थे जिसे उन्होने अपनी आँखों से नहीं देखा था और जिसके वायदे उनके जीवन में पूरे नहीं हुए थे। ये लोग सच्चे विश्वास के स्त्री एवं पुरूष थे। वे हमें अपने समान चलने की चुनौती एवं प्रेरणा देते हैं। परमेश्वर विश्वासयोग्य स्त्री एवं पुरूषों की एक नई पीढ़ी को खड़ा करे।

सोच विचार के लिए:

- विश्वास के द्वारा उठाए जाने वाले किन जोखिमों के बारे में हम यहाँ पढ़ते हैं?
- क्या आपको कभी लगा है कि परमेश्वर के द्वारा की जाने वाली बातें समझ में नहीं आने की वजह से आपने विश्वास से कदम नहीं उठाया हो? समझ में नहीं आने पर भी विश्वास के साथ कदम उठाने के बारे में यह पद्यांश हमें क्या सिखाता है?
- विश्वास कितना इंतजार कर सकता है?
- क्या विश्वास के साथ जीने का अर्थ बिना किसी समस्याओं के जीना है? वर्णन करें। इस अध्याय में हमें इस बात का कौनसा उदाहरण मिलता है?
- विश्वास के इन स्त्री पुरूषों की तुलना में हम कहाँ खड़े हैं? क्या हममें उनके समान विश्वास है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से अपना विश्वास बढ़ाने की प्रार्थना करें। उससे कहें कि वह आपको मिली बुलाहट की पूरी आज्ञाकारिता में जीने का आपको हियाव दे।
- हमसे पहले गए प्रेरणास्रोत स्त्री एवं पुरूषों के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।
- उन समयों के लिए प्रभु से क्षमा माँगें जब आपने उस पर भरोसा नहीं रखा था। सटीक तथ्य पेश करें।
- प्रभु को सब कुछ समर्पित करने का धैर्य एवं ताकत माँगें ताकि आज्ञाकारिता और विश्वास के साथ चलने में कुछ भी रूकावट नहीं बन सके।

31

उस पर ध्यान दें

पढ़ें इब्रानियों 12:1-12

पिछले दो मनन में हमने मसीही चाल में विश्वास के महत्व को देखा। हमने देखा कि मसीही जीवन समस्याओं अथवा कठिनाईयों से मुक्त जीवन नहीं है। विरोध और सताव आ सकते हैं। ऐसे समयों में विश्वास ही हमें आगे बढ़ाता रहेगा। इब्रानियों 12 को शुरू करते हुए लेखक पाठकों को चारों ओर मौजूद गवाहों के एक बड़े बादल की याद दिलाता है। यहाँ प्रयुक्त गवाह वे स्त्री और पुरूष हैं जिन्होने हमसे पहले विरोध सहा। हमने उनके बारे में 11वें अध्याय में पढ़ा। उन्होने जाँचों और परीक्षाओं में हमारे सामने नमूना रखा। उन स्त्री और पुरूषों को यहाँ उनकी तरह सतावों का सामना करते वक्त हमें उत्साह देने के लिए चित्रित किया गया है। यदि वो कर पाते, तो ऊँची आवाज में हमें यह कहते हुए प्रोत्साहित करते और ढ़ाढ़स देते कि विजय संभव है।

हमसे पहले गए हुओं का नमूना देखकर, इब्रानियों के पाठकों को हर उस चीज को हटा देने की चुनौती मिलती है जो धीरज के साथ उनकी दौड़ को पूरा करने में रूकावट बनी हुई हैं। तश्वीर उस लंबी दूरी के धावक की है जिसने अपनी पीठ पर भारी और बड़ा थैला लटका रखा है। अतिरिक्त भार आपके लाभ को कम कर देगा। यह आपको धीमा और आपकी बहुमूल्य उर्जा को कम कर देगा। अपनी पीठ पर रखे इस भारी बोझ के कारण आप अपनी दौड़ तक को जोखिम में डाल दोगे। कल्पना करें कि आप केवल बोझ को लेकर ही नहीं दौड़ रहे, परंतु एक ऐसे संकरे और जंगलसमान रास्ते से दौड़ रहे हैं जों पत्थरों और लकड़ियों से भरा हुआ है। लकडियों में आप फुदकते हुए ही जा पाएँगे। आप उसमें भटक या गिर सकते हैं। इब्रानियों का लेखक भी हमसे यही कह रहा है। यदि हम दौड़ में भाग लेना चाहते हैं तो हमें अपने मार्ग को सावधानीपूर्वक चुनना और अनावश्यक बोझ को हटाना होगा। पाप हमारे साथ ऐसा ही करता है। पाप बोझ से हमें दबाता और हमारे पैरों को फंसाता है कि हम दौड़ पूरी न कर सकें।

पद 1 में ध्यान दें कि हमारे लिए यह दौड़ चिन्हित की गई है। हमारे और हमारे जीवन के बारे में परमेश्वर की योजना और उद्देश्य है। मेरी दौड़ का रास्ता आपसे अलग होगा। परमेश्वर स्पष्ट करेगा कि हमें कौनसा रास्ता चुनना है। और उस रास्ते में डटे रहने, उसमें आने वाली रूकावटों को दूर हटाने और अंत तक बने रहने की जिम्मदारी हमारी है। अध्याय 11 के व्यक्तियों ने भी यही किया। कठिनाईयों के बावजूद, उन्होने हार मानने से इंकार कर दिया। वे विश्वास में बने रहे और परमेश्वर के द्वारा चिन्हित दौड़ को पूरा किया।

हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमसे पहले गए इन स्त्री और पुरूषों ने हमारे सामने नमूना तो रखा है, परंतु हमें अपनी दृष्टि उन पर नहीं गाड़नी हैं। पद 1 इन स्त्री और पुरूषों को गवाह के रूप में दिखाता है। वे दर्शक हैं जिन्होने कभी इस दौड़ में स्पर्धा की थी परंतु आज वे दूर से मात्र देख रहे हैं। वे हमारे लिए ताली बजाते और हमें उत्साहित करते हैं। वे अपने नमूनों से हमें चुनौती और प्रोत्साहन देते हैं परंतु हम अपनी नजर उन पर नहीं रखते। पद 2 बताता है कि हमें अपनी नजरें प्रभु की ओर रखनी हैं। उसी की ओर हम दौड़ रहे हैं। वही हमारा लक्ष्य और इनाम है। लोगों की ओर ताकना हमारे लिए आसान हो सकता है। परंतु केवल यीशु ही हमारे ध्यान के केन्द्र हैं। यीशु ही हमारा लक्ष्य रहे।

ध्यान दें कि पद 2-3 में यीशु के बारे में क्या लिखा है? यीशु ही उनके विश्वास के कर्ता एवं पूर्ति करने वाले थे। यीशु मसीह ने ही उन्हे विश्वास और आशा दी थी। वही उनके विश्वास के स्रोत थे। वे ही मरे और क्रूस के कार्य के द्वारा उन्हे नया जीवन दिया। उसने पाप की बाधाओं को तोड़ डाला और उनके दिलों में अपना पवित्र आत्मा डाला। यीशु मसीह के कार्य के द्वारा उनके दिलों में विश्वास उमड़ आया। यह भी देखिए, कि यीशु मसीह उनके विश्वास के कर्ता ही नही, वरन् पूर्ति अथवा सिद्ध करने वाले भी हैं। अर्थात, उनके दिल में डाले गए विश्वास को वही बढ़ाएँगे। वही इस विश्वास को उनमें विकसित और सिद्ध करेंगे। वह हममें विश्वास को उत्पन्न करता और इस विकसित कर सिद्ध बनाता है।

पद 2 में, लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि जब यीशु क्रूस की ओर गए तो उनके सामने एक बड़ा संतोष था। यह संतोष विजय और स्वर्ग में पिता की दाहिनी ओर के स्थान का ज्ञान था। यह ज्ञान था कि उनकी मृत्यु के द्वारा, अनेकों पिता की ओर आएँगे। उसकी हर तरीके से जाँच और परीक्षा हुए, और उसने जय पाई। उसने दर्द और क्रूस की निंदा को सहा। उसने सिर झुका लेने से इंकार कर दिया। परिणाम निकला, विजय। आज यीशु पिता की दाहिनी ओर बैठे हैं। दाहिना

हाथ सम्मान का स्थान है।

शरीर और पाप के साथ युद्ध में, हमें यीशु हमारे नमूने और प्रेरणा हैं। इससे भी बढ़कर, हमारे लिए किया गया उसका कार्य डटे रहने में हमारी प्रेरणा बने। कठिनाईयों के बीच में भी हमें क्या स्थिर रखता है? हमें अपनी आँखें प्रभु पर और उसके कार्य पर रखनी है। हमारे लिए किये गए कार्य का ज्ञान उसे अपने पूरे दिल, मन और प्राण से प्रेम करने में हमें प्रेरित करे। उसकी क्षमा और उसके वायदे हमें कठिनाईयों में भी स्थिर रख सकें। क्रूस पर हमारे लिए लिए प्रकट उसका प्रेम उसके लिए सबकुछ पूरे मन से समर्पित करने की हमें प्रेरणा दे। अनंतता का उसका वायदा हममें इस संसार की वस्तुओं के प्रति अनिच्छा एवं केवल उसे खोजने की इच्छा को प्रकट करे।

इस पत्री के पाठक, यद्यपि उन्होने बहुत कुछ सहा, परंतु अपने विश्वास के कारण मरने की नौबत में नहीं पड़े थे। मैं एक सैनिक की तश्वीर दिखाना चाहता हूँ जो जमीन के एक टुकड़े को बनाए रखने के लिए युद्ध में लगा है। दुश्मन के हर आक्रमण का वो प्रत्युत्तर देता है। उसे रोकने का कार्य तब तक नहीं रूकेगा जब तक कि उसका लहू न बहे और जमीन पर गिरा न दिया जाए। तब तक, सैनिक अपना युद्ध जारी रखेगा। हममें से हर एक को यही बुलाहट मिली है।

पद 5 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को नीतिवचन 3:11, 12 के पदों की याद दिलाता है:

हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डाँटे, तब तू बुरा न मानना, क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको डाँटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।

हम यहाँ सुसमाचार के कारण सहे जाने वाले कष्ट और प्रभु के अनुशासन में एक रोचक संबंध देख सकते हैं। यह पद हमें कष्टों और जाँचों को प्रभु के अनुशासन के रूप में देखने की चुनौती देता है। जब हम कष्टों को प्रभु के अनुशासन के रूप में देखना शुरू कर देते हैं तो इससे हमारा कष्टों के प्रति नजरिया ही बदल जाता है। जब हमें शैतान या अविश्वासी संसार की ओर से विरोध का सामना करना पड़ता है तो हमारी पहली प्रतिक्रिया इसे डाँटना अथवा स्वतंत्र होने के लिए रोना होता है। इसके साथ समस्या यह है कि प्रभु अक्सर हमें इन कठिनाईयों के द्वारा प्रशिक्षित करना चाहता है। यदि हम कठिनाईयों को हटा दें, तो हम इनके द्वारा सीखी जाने वाली सच्चाईयों को भी हटा देते हैं। शैतान के द्वारा हम फेंकी जाने

वाली चीजों का प्रभु हमें अधिक निपुण और पवित्र बनाने में इस्तेमाल करेगा। दुश्मन कुद भी क्यों न फेंकता रहे, याद रखना कि प्रभु महान है। परमेश्वर हमें विजय ही नहीं देगा, परंतु दुश्मन के द्वारा हम पर फेंकी गई हर चीज का इस्तेमाल प्रभु अपनी महिमा और हमारे भले के लिए करेगा।

आने वाली मुश्किलों में प्रभु पर भरोसा कर हम अच्छा करेंगे। इन परेशानियों और दर्द को हल्का न लें। इसे डाँटने या इससे दूर भागने की कोशिश न करें। सुनें कि प्रभु इन कष्टों के द्वारा क्या बोलना चाहता है और उससे मिलने वाले पाठ को सीखें। उसका अनुशासन आपके जीवन के पाप और विरोध को निकाल फेंके। अपने करीब लाने में वह इसका इस्तेमाल करे। हर सताव और जाँच बुरे नहीं होते। यीशु स्वयं सही जाने वाली कठिनाईयों से सिद्ध होते गए:

और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। (इब्रा. 5:8)

निसंदेह प्रभु हमारे दर्द को हटा सकता है परंतु उसने इसका उपयोग करने की सोची। कल्पना करें, जब शैतान देखता है कि उसके द्वारा फेंकी जाने वाली हर चीज, हमें बलबंत बना रही और प्रभु के करीब ला रही हैं, तो उसे कितनी निराशा होती होगी।

प्रभु प्रेम करने वाले बच्चों को अनुशासित करता है। (पद 7) उस पिता की कल्पना करें जिसने अपने बेटे को अनुशासित नहीं किया, जो भी वो करना चाहता था, उसकी अनुमति देता रहा। ऐसे बेटे को गंभीर समस्या में पड़ने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। बच्चों को दिशानिर्देश एवं अगुवाई की जरूरत है। उन्हे अनुशासन की आवश्यकता है। प्रेमी माता पिता अपने बच्चों को अनुशासित करते हैं कि वे सही मार्ग में चलते रहें। परमेश्वर भी हमारे साथ ऐसा ही करता है। वह चाहता है कि हम अपनी पूरी निपुणता को हासिल करें। ऐसा होने के लिए, प्रभु हमें अनुशासित और प्रशिक्षित करता है। चाहे हमारे दर्द और मुसीबत के पीछे दुश्मन का हाथ है, हम निश्चित हो सकते हैं कि प्रभु हमारे जीवन में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन सबका इस्तेमाल कर सकता है। पुराने नियम में अय्यूब की कहानी इस तथ्य का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। उसे सताने के लिए शैतान परमेश्वर से अनुमति लेता है परंतु परमेश्वर उसी का उपयोग कर अय्यूब को अपने और करीब लाता है।

प्रभु के द्वारा हमें अनुशासित किए जाने का सच दिखाता है कि वह हमें अपने बच्चे समझता है। माता पिता कभी भी पड़ोसियों के बच्चों को अनुशासित करने के

इच्छुक नहीं होते हैं। (यद्यपि हमें अक्सर ऐसा करने की इच्छा होती हो!) माता पिता को अपने बच्चों की चिंता होती है। जब आपको प्रभु का अनुशासन मिलता है तो याद रखें कि प्रभु आपको अपना बच्चा समझते हैं। वह आपमें व्यक्तिगत इच्छा रखते हैं। हमें अनुशासित करने और अपने जीवन की नींव डालने के लिए अच्छा आधार बनाने में हमारी मदद करने वाले अपने शारीरिक पिता का हम जिस प्रकार सम्मान करते हैं, उसी प्रकार हममें इच्छुक अपने परमेश्वर का भी धन्यवाद, सम्मान और आदर करना है। एक बात निश्चित है। जब हम प्रभु से अनुशासन पाते और सीखते हैं, हम हमारे विश्वास और चालचलन में उन्नत और परिपक्व हो सकते हैं।

लेखक पद 10 में हमें याद दिलाता है कि प्रभु का अनुशासन अथवा ताड़ना हमेशा हमारे भले के लिए होता है। उसका मकसद हमें अपनी पवित्रता में भागीदारी देना है। दूसरे शब्दों में, अनुशासन के द्वारा प्रभु हमें उससे दूर करने वाली दुष्टता में से निकाल बाहर करेगा। अनुशासन के द्वारा, प्रभु हमारे अंदर की हर उस शाखा को काट डालेगा जो फल उत्पन्न नहीं करती ताकि हम अधिक फलदायक हो सकें।

यह सच है कि अनुशासन आरामदायक नहीं होता है। अनुशासन अक्सर दर्दनाक होता है। परंतु वास्तविकता यह है कि यही अनुशासन हमारे अंदर धार्मिकता एवं शांति के अधिक फल उत्पन्न करता है। यदि आप परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना चाहते हैं तो अनुशासन को स्वीकार करने को तैयार रहें। यदि आप अपने दिल और जीवन में परमेश्वर की शांति को बनाए रखना चाहता हैं तो आपको उन चीजों से दूर रहना है जो उस शांति के लिए रूकावट बन सकती हैं। अनुशासन हमारी भले के लिए है। हम अपने जीवन में एक बड़ी फसल का अनुभव प्राप्त करेंगे। ध्यान दें, यह बड़ी फसल तभी उत्पन्न कर पाएगा, जब आप स्वयं को प्रशिक्षण के लिए तैयार रखेंगे। यह भी संभव है कि प्रभु हमें अनुशासित तो करे परंतु उससे हम प्रशिक्षित न हों। हम अनुशासन का विरोध कर, उसके द्वारा प्रभु के सिखाए जाने वाले पाठ को नहीं सीखने का मन बना सकते हैं।

इन सच्चाईयों की रोशनी में, पाठक को पद 12 में अपनी कमजोर बाँहों और घुटनों को ताकतवार बनाने की चुनौती मिलती है। दूसरे शब्दों में, उन्हे धैर्यशाली बनना था। सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है। शत्रु कुद भी क्यों न फेंके, वह उसका हमारे भले के लिए इस्तेमाल करेगा। हमारे पास कष्टों में भी आनंद मनाने की वजह है। हम खुशी मना सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें अपने बेटे बेटियाँ समझता है। वह हमें नाश नहीं करना चाहता, परंतु वह हममें धार्मिकता बढ़ाना चाहता है। दौड़ के लिए प्रशिक्षित होने वाला जानते हैं कि यदि वे अपनी वर्तमान

हालत बढ़ाते नहीं हैं, तो वे कभी भी विकसित नहीं हो पाएँगे। माँस पेशियों को और मजबूत होने की सीमा तक आना पड़ेगा। थोड़ी सी कठिनाई के आते ही, यदि हम हार मान लें, हम कभी भी अपनी वर्तमान हालातों से बाहर नहीं आ पाएँगे। हमें अपनी बाँहों को ताकतवर बनाना होता है। हमें उन पर नियंत्रण पाना और अधिक शक्तिशाली बनाना है। हमारे अंदर विश्वास को बनाने वाले परमेश्वर, इन कष्टों के द्वारा उस विश्वास को और सुदृढ़ करेंगे।

सोच विचार के लिए:

- मसीही जीवन में क्या आपको बोझ से धीमा कर देता है? आप किस पाप से जूझ रहे हैं? आप उनके साथ क्या करना चाहते हैं?
- परमेश्वर ने आपके लिए कौनसा मार्ग चिन्हित कर रखा है? क्या आप उसी मार्ग पर चल रहे हैं?
- जीवन में आने वाली समस्याओं और जाँचों के मामले में, आप प्रभु यीशु मसीह के कार्य और व्यक्तित्व से किस प्रकार का प्रोत्साहन पाते हैं?
- जाँच के प्रति हमारा व्यवहार उसका सामना करने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित करता है?
- परमेश्वर हमें अपने बच्चों के रूप में क्यों अनुशासित करता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से अपने उस पाप को प्रकट करने की प्रार्थना करें जो आपके बोझ को बढ़ा रहा है।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह दुश्मन के द्वारा फेंकी गई हर चीज का इस्तेमाल अपको अपने करीब लाने के लिए करता है।
- आज सामने खड़ी समस्या के प्रति आपका व्यवहार बदलने के लिए प्रभु से प्रार्थना करें। उससे आपको यह सिखाने को कहें कि इन जाँचों के माध्यम से आप क्या सीख सकते हैं।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह आपको एक पिता की तरह व्यक्तिगत उन्नति एवं फलदायकता में आपकी मदद और संभाल करता है

32

शांति में जीना

पढ़ें इब्रानियों 12:13-17

हम मसीही चाल की कठिनाईयों को जाँच रहे थे। प्रभु यीशु ने हमें एक आरामदायक जीवन के लिए नहीं बुलाया है। अक्सर हमें इस संसार में दुख सहने पड़ेंगे। इब्रानियों का लेखक इस अध्याय के पहले भाग में अपने पाठकों को प्रभु की ओर आँखे लगाए रखने एवं अंत तक बने रहने की चुनौती देता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि अंत तक बने रहने के लिए उन्हे दौड़ में बाधा उत्पन्न करने वाले हर बोझ को दूर करना होगा। इस अगले सत्र में, हम देखेंगे कि हमें रोकने वाला एक बोझ दूसरों के साथ हमारा संबंध है।

पद 13 में लेखक पाठकों को अपने मार्ग सीधे करने को कहता है कि लंगड़ा भटक न जाए। लेखक अपने पाठकों को यह बताता हुआ प्रतीत हो रहा है कि अपनी मसीही चाल चलते वक्त यह ध्यान रखना है कि अपने पीछे आने वालों के लिए रूकावट न खड़ी करें। पीछे चलने वाले कुछ कमजोर भाई बहिन भी हो सकते हैं। उन्हे यहाँ लगड़ा बताया गया है। वे लंगड़ते, वैशाखी से चलते और आसानी से गिर सकते हैं। हमें अपना जीवन इस प्रकार जीना है कि हमें देखने वाले किसी भी वजह से गिर न जाएँ। इब्रानियों का लेखक पद 13 में चुनौती देता है कि हमें इस प्रकार जीवन जीना है कि हमारे पीछे चलने वाले हमारा नमूना देखकर चंगाई को पा सकें।

इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी है कि यह सब कष्ट एवं सताव की पृष्ठभूमि में कहा जा रहा है। हमने अध्याय 11 में देखा कि स्त्री एवं पुरूषों ने किस प्रकार मसीह के लिए दुख और दर्द सहा। वे अपने मार्ग सीधे करते हैं कि उनके पीछे चलने वाले हम उनके नमूनों से सीख और प्रात्साहित हो सकें। उन्होने सताव और दर्द में भी अपने जीवन के द्वारा हमारे भटक जाने का कोई कारण नहीं रखा। हमने अपने पीदे चलने वालों के लिए कौनसा नमूना रखा है? क्या हमने ऐसा नमूना रखा है जिसे लोग कर सकते हैं? क्या हमारा जीवन दूसरों के लिए बाधाएँ उत्पन्न करने

वाला है? यहाँ एक बात स्पष्ट है कि परमेश्वर के साथ हम अपने जीवन में अकेले नहीं हैं। हमारे कार्य और हमारा जीवन हमारे आसपास के लोगों को शक्तिशाली तरीके से प्रभावित करता है। हमें ऐसा जीवन जीना है कि हम हमारे आसपास के लोगों के लिए प्रोत्साहन और आशीष बन सकें। यदि नही, तो हमारे भाई बहिनों को भटकाने अथवा मार्ग में गिराने वाले बोझ अथवा रूकावट बन सकते हैं।

पद 14 में पाठक को आज्ञा दी गई है कि वे सब मनुष्यों के साथ मेल में रहने और पवित्र बने रहने की हर संभव कोशिश करें। ध्यान दें, यहा लेखक विशेष तौर पर कहता है 'सब मनुष्य।' ऐसा कहने में उसका इशारा हमें सताने और विरोध करने वालों की ओर भी है। यह हमेशा आसान नहीं होगा। कुछ लोगों के साथ मेल में रहने के लिए दूसरों से अधिक प्रयास करना पड़ता है। हमारे शरीर की मानें, तो कुछ लोगों के साथ हम मेल में रहना पसंद ही न करें। परंतु परमेश्वर हमें अपने शरीर को मारने और उनके प्रति प्रेम से भर जाने के लिए बुलाता है जिनसे हम प्रेम करना पसंद नहीं करते।

पद 14 में भाई के साथ मेल में रहने एवं पवित्र बनने में संबंध दर्शाया गया है। हमें शरीर एवं इसके हर दुष्ट विचार का विरोध करने एवं हमारे भाईयों बहिनों के साथ प्रसन्नता के साथ रहने का हर संभव प्रयास करने के लिए बुलाया गया है। ऐसा कर, हम परमेश्वर को प्रसन्न करते और सच्ची पवित्रता प्रकट करते हैं। पवित्रता का हमारे आसपास के लोगों के साथ हमारे संबंध से सीधा नाता है।

पद 14 में ध्यान दें कि पवित्रता के बिना कोई भी परमेश्वर को देख नहीं सकता है। यहाँ वर्णित पवित्रता भला बनने के लिए किए गए हमारे प्रयास नहीं हैं। कई भले लोग हैं जो कभी परमेश्वर को नहीं देखेंगे। यहाँ वर्णित पवित्रता पवित्र आत्मा का कार्य है। यह क्रूस पर यीशु के कार्य के परिणामस्वरूप मिला, जिसमें हमारे पाप और पिता के साथ मेल शामिल है। यह हमें प्रभु यीशु के समान बनाने के पवित्र आत्मा के कार्य का परिणाम भी है।

यह ध्यानयोग्य है कि जबकि हम अपने भाई बहिनों के साथ मेल करने की हर संभव कोशिश में हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे कभी भी शत्रु नहीं होंगे। यीशु के भी शत्रु थे। प्रेरितों के भी विरोधी घटक थे। यह भी संभव है कि हम अपने भाई बहिनों के साथ कुछ अंतर को कभी भी मिटा न सकें। इब्रानियों का लेखक चुनौती देता है कि हमें "हर संभव कोशिश" करनी है।

इसी की रोशनी में, हमें 15वें पद में बताया गया है कि हमारे जीवन में

कड़वाहट की कोई जड़ नहीं रहनी चाहिए। लेखक कड़वाहट के बारे में तीन बातें बताता है।

पहली, जब कोई अपने भाई या बहिन के प्रति कड़वाहट रखता है तो वह कड़वाहट अवश्य "परेशानी" उत्पन्न करती है। कड़वाहट फूटने के लिए तैयार बम के समान है। समय आएगा, ये फूटेगा और मसीह की देह में क्षति अवष्य पहुँचाएगा। यदि यह अचानक से नहीं फूटे, यह अवष्य हमें अंदर से जहरीला करता रहेगा।, जिससे हममें और शेष मसीह की देह की हानि और अधिक बढ़ सकती है।

दुसरी, कड़वाहट "कईयों को दुषित" करता है। आप कड़वाहट को अपने तक सीमित नहीं रख सकते हैं। हमारे शब्द, स्वभाव और कार्य के द्वारा आसपास के लोगों को जहरीला करना शुरू कर देंगे। इसीलिए हमें कड़वाहट की जड़ को भी नहीं रखने की चेतावनी दी गई है। हमें उसके फूट निकलने और दुष्टता के फल उत्पन्न करने से पहले ही काट डालना है। कड़वाहट का फल सदैव दुष्टता होता है। यह आसानी से छुपाया नहीं जा सकता और दूसरों तक अवष्य पहुँचकर उन्हे भी दूषित करता है।

तीसरी, कड़वाहट हमसे 'परमेश्वर के अनुग्रह' से वंचित करती है। परमेश्वर के अनुग्रह का मतलब, हमारे जीवन में परमेश्वर की प्रसन्नता और आशीष है। यीशु हमें मती 6:15 में बताता है कि यदि हम दूसरों के अपराध क्षमा न करें तो परमेश्वर भी हमारे पापों को क्षमा नहीं करेगा। वचन पतियों को चुनौती देता है कि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें और उनके साथ सहजता से पेष आएँ जिससे उनकी प्रार्थनाओं में बाधा न आए। (1 पतरस 3:7) यदि हम हमारे जीवन में कड़वाहट को बढ़ता रहने दें, तो यह हमें परमेश्वर की आशीषों का अनुभव करने से वंचित कर देगी। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम कड़वाहट की जड़ों को झट से निकाल दें जिससे कि यह समस्या खड़ी कर दूसरों को दूषित न करे और हमारे जीवन में परमेश्वर की आशीषों से वंचित न कर सके।

पद 16 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को लैंगिक अनैतिकता के बारे में भी चिताता है। हर अशुद्ध एवं अदैविक विचार को झट से निकाल बाहर करना जरूरी है। ये सब हमारी दौड़ को पूरी करने में बोझ पैदा कर सकते हैं। यह हमसे हमारी आशीषों को दूर कर, मार्ग में बाधाओं को उत्पन्न करेगी जिससे हमारे पीछे चलने वाले भी भटक सकते हैं।

पद 16 पाठकों को एसाव के अनैतिक स्वभाव के बारे में भी बताता है। एसाव

ने एक समय की खीर के लिए अपने जेठेपन का अधिकार खो दिया। उसने आशीषों को तुच्छ जाना और क्षणिक सुख के लिए उसे फेंक दिया। इसे फेंक दिए जाने के बाद, यद्यपि उसने इसे वापिस पाने की कोशिश की परंतु अब ऐसा संभव नहीं था। एक कटोरे के लिए फेंकी गई आशीष हमेशा हमेशा के लिए चली गई थी। यही होता है जब हम कड़वाहट और लैंगिक अनैतिकता को अपने जीवन में स्थान देते हैं। क्षणभर के सुख के लिए हम अपनी आशीष खो देते हैं। क्या हम परमेश्वर के द्वारा हमारे लिए रखी गई सब बातों को हमसे जुदा करने की अनुमति देंगे?

इस अध्याय का पाठ समझना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। मसीह की देह के दूसरे सदस्य के साथ व्यवहार करने के तरीके से हम हमारे जीवन में परमेश्वर की आशीषों को खो सकते हैं। यदि हम कड़वाहट को बढ़ाने और अनैतिक कार्यों में लगे हैं तो परमेश्वर की आशीषों को खो सकते हैं। किसी के साथ गलत संबंध परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को समाप्त कर सकता है। परमेश्वर की गहनता में बढ़ने में संबंधों का स्थान अति महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने हमें जिस दौड़ को दौड़ने के लिए बुलाया है, उसका मतलब है, हमारे चारों ओर रहने वालों के साथ मेल में रहना है।

सोच विचार के लिए:

- अपने चारों ओर रहने वालों के सामने आप किस प्रकार का नमूना पेष कर पा रहे हैं? क्या आपके जीवन में कुछ ऐसा है जो आपके किसी भाई बहिन के लिए बाधा बन रहा है? वो क्या है? आप उसके लिए क्या करना चाहते हैं?
- क्या सभी मनुष्यों के साथ मेल में रहना संभव है? क्या आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जिनसे प्रेम करना आपके लिए कठिन प्रतीत होता है?
- हमारे चारों ओर रहने वाले लोगों के साथ कड़वा संबंध किस प्रकार परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को प्रभावित कर सकता है?
- कड़वाहट किस प्रकार मसीह की देह को प्रभावित करता है? क्या आपने अपनी कलीसिया में इसका कोई उदाहरण देखा है?
- ऐसाव का आशीषों को खोना हमारे लिए चुनौती क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से उस समय के लिए क्षमा माँगें जब आप अपने भाई बहिनों के लिए नमूना नहीं बन पाए। एक अच्छा नमूना बनने में उससे मदद लें।

- क्या ऐसे लोग हैं जिनसे आप प्रेम नहीं कर पा रहे हैं? प्रभु से कहें कि वह आपमें उसके लिए अधिक प्रेम डाले।
- प्रभु से कहें कि वो आपके जीवन से सारी कड़वाहट को निकाल बाहर करे। उससे कहें कि वो आपको उसे क्षमा करने और उसकी सेवा करने का मन दे जिसने आपको दुख पहुँचाया है और जिसे आप प्रेम नहीं कर पा रहे हैं।
- प्रभु से कहें कि वह आपके दिल और विचारों को शुद्ध करे जिससे आप अपनी आशीषों के लिए रूकावट न बन सको।

33

सीनै पर्वत एवं सिय्योन पर्वत

पढ़ें इब्रानियों 12:18-29

पुराने नियम में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर सीनै पर्वत पर अपने लोगों के सामने प्रकट हुआ। परमेश्वर की उपस्थिति इतनी अद्‌भुत और ताकतवर थी कि पर्वत आग, बादल और तूफान से भर गया। पर्वत के पास जाने की जुर्रत करने वाले मार डाले गए।

जब परमेश्वर सीनै पर्वत पर उतरा तो उसकी उपस्थिति की घोषणा स्वर्गदूतों की तुरही की आवाज से की गई। जब वह बोला तो उसकी आवाज सुनने वालों से उससे बोलना बंद करने की गुहार की। (पद 19) उसके शब्दों की ताकत मनुष्यों की सहनशक्ति से ज्यादा थी। उसकी आवाज मात्र ने स्त्री और पुरूषों को भयभीत कर डाला। जब मूसा को सीनै पर्वत पर उसकी महिमा का एक दर्शन मात्र दिया गया तो वह चिल्ला उठा, "मैं डर से काँप रहा हूँ।" (पद 21)

कितने अद्‌भुत और भययोग्य उसकी महिमा और प्रभा कम नहीं हुई है। यह वही परमेश्वर है जिसके सामने मूसा उसकी उपस्थिति में काँपने लगा था। उसकी ताकत हमारी कल्पना से अधिक शक्तिशाली है। उसकी प्रभा एवं पवित्र उपस्थिति भययोग्य है।

मूसा ने सीनै पर्वत पर परमेश्वर की व्यवस्था को प्राप्त किया। व्यवस्था परमेश्वर के द्वारा अपने लोगों के साथ बनाई गई वाचा का भाग थी। हमने देखा कि उस व्यवस्था के अधीन परमेश्वर और लोगों के बीच एक विभाजन था। परमेश्वर के निवास, अति पवित्र स्थान को शेष लोगों से अलग एक परदा करता था। परमेश्वर के क्रोध को शांत करने के लिए हर दिन अनगिनत बलिदान चढ़ाए जाते थे परंतु विभाजन बना ही रहा।

इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि आज हम विश्वासी, सीनै पर्वत पर नहीं आते हैं, जो पुरानी वाचा एवं मूसा की व्यवस्था को दिखाता है। परंतु हम एक दूसरे पर्वत के पास आए हैं। और वह है सिय्योन पर्वत। पद 22 स्पष्ट

करता है कि सिय्योन पर्वत उस स्वर्गीय स्थल को दिखाता है जहाँ परमेश्वर बसता है। यह नई वाचा को दिखाता है जो यीशु ने स्थापित किया और अपनी क्रूस मृत्यु के द्वारा उस पर मुहर लगाई।

सीनै और सिय्योन पर्वत के बीच के अंतर पर ध्यान दें। जबकि कोई भी मृत्यु के भय से सीनै पर्वत के पास नहीं आ सकता था, सिय्योन पर्व ख़ुषियों की संगति करने वाले हजारों स्वर्गदूतों के भरा है। (पद 22) पद 23 बताता है कि हमारा नाम स्वर्ग में लिखा है जिसका सिय्योन पर्वत पार्थिव प्रतीक है। वहाँ पर हमारा लिखा नाम इस बात का संकेत है कि परमेश्वर के इस शहर में हमारा भी स्थान है। हम परमेश्वर के साथ हमेशा रहेंगे जो पूरी मानवजाति का न्याय करेगा। वहाँ हम धर्मी स्त्री पुरूषों से मिलेंगे जो हमसे पहले चले गए थे। पर्वत सीनै के विपरीत, सिय्योन पर्वत का द्वार हर आने वाले के लिए खुला है।

पद 23 में ध्यान दें कि सिय्योन पर्वत के पास आने वाली आत्माओं को धर्मी बनाया गया है। पद 24 बताता है कि यह मध्यस्थ यीशु के द्वारा संभव हुआ। हमारे सारे पापों को साफ करने एवं हमें पिता के सामने शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए उसका लहू बहा और छिड़काया गया। मसीह का लहू हाबिल के लहू से बेहतर बोलता है। दूसरे शब्दों में, मसीह का बलिदान और बहा लहू एक महान बलिदान था। हाबिल ने मेम्ना बलि किया और प्रभु के पास लेकर आया। प्रभु ने उस बलिदान को स्वीकार किया परंतु उसके बाद भी कई और बलिदान चढ़ाने पड़े। कोई भी बलिदान मनुष्य का परमेश्वर के साथ मेल नहीं करा पाए। परंतु प्रभु यीशु के बलिदान ने सब कुछ बदल दिया। इस बलिदान ने सभी बलिदानों को रोक डाला। इसने परमेश्वर को पूर्णतया प्रसन्न किया और उसके पास आने वाले हर एक के पापों को ढ़ाँप दिया। उस लहू के बलिदान के द्वारा, प्रभु यीशु परमेश्वर और पापी मानव जाति के बीच मध्यस्थ बन गए। उसने हमारे पापों की कीमत चुकाई और परमेश्वर के साथ सारा हिसाब चुकता किया। तत्पश्चात उसने परमेश्वर और मानवजाति को एक करनी वाली अथवा जोड़ने वाली नई वाचा को स्थापित किया।

कुछ टीकाकर्ता विश्वास करते हैं कि पद 14 में इब्रानियों का लेखक हाबिल और यीशु की मृत्यु की तुलना कर रहा है। हाबिल की मृत्यु बाइबल में वर्णित पहली हत्या थी। वह अपने ईर्ष्यालु भाई कैन के द्वारा मार डाला गया। हाबिल और यीशु की क्रूस मृत्यु में कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं। हाबिल का लहू न्याय की माँग कर रहा था। वह परमेश्वर से बदले के लिए पुकार रहा था। इससे स्वर्ग से परमेश्वर का क्रोध उतर कर आया। प्रभु यीशु का लहू मेल मिलाप, क्षमा और माफी लेकर आया।

मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता जोड़ दिया।

सीनै पर्वत डर एवं आतंक का स्थान था। यह दिखाता है कि हम पवित्र परमेश्वर से दूर, पापी लोग हैं। सिय्योन पर्वत खुशी और उत्सव का स्थान है। सिय्योन पर्वत पर पाप के बल को तोड़ दिया गया। परमेश्वर और उसके बच्चों ने प्रभु यीशु के कार्यों के द्वारा हाथ मिला लिया है।

मैं यह भी बताऊँ कि सिय्योन पर्वत खुशी और उत्सव का पर्वत होने के साथ साथ, आतंक का भी स्थान है। सीनै पर्वत ही की तरह सिय्योन पर्वत भी न्याय करता और दोष लगाता है। जो मसीह के द्वारा दी गई क्षमा को स्वीकार नहीं करते हैं, उन्हे सिय्योन पर्वत का आतंक सहना पड़ेगा। पद 25 में, पाठक को याद दिलाया गया है कि पुराने नियम के तहत प्रभु को ठुकराने वालों के साथ क्या होगा। उन्हे परमेश्वर के लोगों से काट कर दूर कर दिया गया। कुद लोगों को निर्दयता के साथ मारा गया। सीनै पर्वत और व्यवस्था के मार्गों को ठुकराने वालों को यदि निर्दयता के साथ मारा जाता है, तो उनके लिए कितना गंभीर होगा जो स्वयं यीशु को ठुकराते हैं जो स्वर्गीय सिय्योन पर्वत से हमसे बात करता है।

मूसा के दिनों में, परमेश्वर की आवाज ने पृथ्वी को हिला दिया। प्रभु ने वायदा दिया कि एक दिन आ रहा है कि उसकी आवाज एक बार और इस स्वर्ग और पृथ्वी को हिलाएगी। (पद 26) लेखक बताता है कि धरती एक दिन इससे भी बढ़कर हिलेगी। पद 27 में, पाठकों को बताया गया है कि जब परमेश्वर धरती को दुबारा हिलाता है तो यह पूरी तरह से नाश हो जाएगी। जब पृथ्वी को हिलाया जाएगा तो केवल परमेश्वर का राज्य ही शेष बचेगा। (पद 28)

प्रभु यीशु के कार्य को स्वीकार करने वाले परमेश्वर के उस राज्य के भाग होंगे जो कभी भी नहीं हिलेगा। वे उस राज्य में प्रभु के साथ सदा सर्वदा रहेंगे। परमेश्वर ही उनका परमेश्वर होगा और वे उसके साथ हमेशा हमेशा के लिए रहेंगे।

इस अद्‌भुत सच की रोशनी में, हमें धन्यवाद से भरे रहना है। परमेश्वर के किए कार्यों के प्रति हमें स्तुति से परमेश्वर के नाम को ऊपर उठाना है। परमेश्वर और लोगों के बीच की दीवार को ढ़ा दिया गया। अब किसी बलिदान की आवश्यकता नही। उस सिय्योन पर्वत की ओर आने वाले हर व्यक्ति को संपूर्ण क्षमा और माफी मिलती है जहाँ यीशु मसीह क्रूस पर चढ़ाए गए थे। उसे ठुकराने वाले उसके क्रोध की भष्म कर देने वाली आग की कौर बन जाएँगे। (पद 29) सीनै पर्वत पर उतरने वाले परमेश्वर का विरोध करने का अर्थ था मौत और ऐसा ही होगा उनका जो

सिय्योन पर्वत पर उतरने वाले का विरोध करते हैं।

सीनै पुरानी वाचा एवं मूसा की व्यवस्था के तहत परमेश्वर और मनुष्य के बीच मौजूद खाई को दिखाता है। सिय्योन नई वाचा को दिखाता है जो कलवरी क्रूस पर बहे यीशु के लहू के द्वारा तैयार की गई। यह परमेश्वर और उसके पुत्र के पास आने वालों के बीच के मेल को दिखाता है। अब हमें परमेश्वर कभी भी सीनै पर्वत से नहीं बुलाता है। वह स्वयं को सिय्योन पर्वत पर से प्रकट करता है। यदि हम परमेश्वर के पास आना चाहते हैं, तो हमें सिय्योन पर्वत एवं नई वाचा के द्वारा ही आना होगा। हमें यीशु के पास आना है जो इस नई वाचा के मध्यस्थ हैं।

सोच विचार के लिए:

- सीनै पर्वत क्या दिखाता है? सीनै पर्वत के साथ क्या समस्या थी?
- सिय्योन पर्वत क्या दिखाता है? यह सीनै पर्वत से अलग कैसे है?
- मसीह का बलिदान हाबिल के बलिदान से बेहतर क्यों है? यीशु मसीह के बलिदान ने क्या पूरा किया?
- जब प्रभु इस धरती को पुनः हिलाने आएँगे तो क्या होगा? क्या आप उस आगमन के लिए तैयार हैं?
- मध्यस्थ का मतलब क्या है? यीशु मसीह हमारे लिए किस प्रकार मध्यस्थ बने?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपको मूसा की व्यवस्था से छुड़ाया जो कभी भी परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मेल नहीं करवा सकती थी।
- प्रभु का उसकी मृत्यु के लिए धन्यवाद करें जिसके द्वारा हमारे पापों के दण्ड की कीमत को चुका दिया गया।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपको उद्धार का निश्चय दिया। यदि आपको वो निश्चय नहीं मिला है तो प्रभु से माँगें।
- प्रभु से कहें कि वो आपको व्यवस्था के द्वारा उद्धार पाने की कोशिश से बचाता है। उसका धन्यवाद करें कि केवल प्रभु यीशु मसीह का कार्य हमारे उद्धार के लिए काफी है।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि सिय्योन पर्वत का द्वारा हर आने वाले के लिए खुला है। सिय्योन पर्वत के द्वारा दर्शित संगति एवं क्षमा के लिए उसका धन्यवाद करें।

34

याद रखने की कुछ बातें

पढ़ें इब्रानियों 13:1-7

इब्रानियों के इस अंतिम अध्याय में लेखक पाठकों के सामने चुनौतियों की एक बड़ी सूची लेकर आता है। कई सारी ऐसी बातें हैं जिन्हे उन्हे प्रभु के साथ अपनी चाल के दौरान याद रखनी हैं।

एक दूसरे से प्रेम करते रहें (पद 1)

पहली चुनौती एक दूसरे से प्रेम करते रहना है। जब वह उन्हे एक दूसरे से प्रेम करते रहने के लिए कहता है तो यह बताता है कि वे पहले से ही प्रेम करते आ रहे हैं। अब उन्हे उस प्रेम में और अधिक बढ़ना है। मसीही चाल में यदि कोई एक बात निश्चित है तो वो यह है कि हमारे एक दूसरे के प्रति प्रेम अवश्य परखा जाएगा। शैतान प्रेम की ताकत को जानता है।

प्रभु यीशु ने कहा कि एक दूसरे से प्रेम करने के द्वारा ही लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो। (यूहन्ना 13:35) एक दूसरे के साथ संबंध पर दुश्मन बेवजह आक्रमण नहीं करता है। उसे पता है कि टूटा रिश्ता कितनी क्षति पहुँचा सकता है। ऐसे भी समय आएँगे कि हमें नम्र होकर अपने भाई या बहिन से माफी भी माँगनी पड़ सकती है। या कभी हमें दूसरों की गलतियों के कारण उन्हे क्षमा करना पड़ सकता है। इस पद में हमें एक दूसरे से प्रेम करने की चुनौती दी गई है। इसका मतलब उससे प्रेम करना है जिससे हमें गहरी चोट पहुँची है। इसका अर्थ दूसरों के लिए स्वयं को बलि चढ़ाना है। ऐसा करना हमेशा आसान नहीं होगा परंतु इसी के लिए हमें सदैव प्रयास करते रहना है और विशेषकर इस वक्त जबकि प्रभु का आगमन नजदीक है।

अपरिचितों की पहुनाई करना (पद 2)

पद 2 में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि प्रेम केवल अपने जानने वालों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हे अपरिचितों की भी

पहुनाई करनी थी। ध्यान दें कि किस प्रकार पुराने नियम के संतों ने इसी प्रकार स्वर्गदूतों की पहुनाई की। हम अब्राहम के जीवन में इसका उदाहरण दे सकते हैं जब उसने अपने पास आए आगन्तुकों का सत्कार किया जो उसे यह बताने आए थे कि उसकी पत्नी एक बेटे को जन्म देगी। (उत्पति 18)

जानने वालों का सत्कार करना तुलनात्मक तरीके से आसान होता है। परंतु हमें यहाँ चुनौती दी जाती है कि हम नहीं जानने वालों तक भी तरस के साथ पहुँचें। प्रभु यीशु ने सब प्रकार के लोगों की सेवा की जिन्हे समाज ने ठुकरा दिया था। उसे पापियों का दोस्त कहा गया क्योंकि वह कभी भी उसकी जरूरत में उनकी मदद करने से नहीं डरा। आपके समाज में तिरष्कृत या ठुकराए हुए लोग कौन हैं? उन तक आपकी पहुँच के लिए परमेश्वर के पास कौनसी योजनाएँ हैं?

कैदियों को याद रखें (पद 3)

इब्रानियों के लिखे जाने के समय में, समाज के अंदर, सबसे अधिक भुला दिए गए लोगों में एक समूह था कैदियों का समूह। यह सही है कि वे किसी न किसी वजह से अंदर कैद थे। परंतु विषय यह नहीं है। इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को बताता है कि उन्हे कैदियों को नहीं भूलना है। विश्वासियों को उन्हे इस प्रकार याद रखना है कि वे उनके संगी कैदी हों। दूसरे शब्दों में, उन्हे उनकी जरूरतों और सह रहे दर्द पर तरस दिखाना है।

पद 3 में एक और समूह के बारे में बताया गया है। हम उनके बारे में पढ़ते हैं जिनके साथ बुरा व्यवहार हुआ है। उनके साथ हुए बुरे व्यवहार का कारण हमें नहीं बताया गया है। इसका कोई महत्व भी नहीं है। शायद समाज की पूर्वधारणाओं की वजह से उनका दुर्व्यवहार हुआ हो। शायद उनकी जीवनशैली की वजह से हो। इन लोगों पर दोष लगाना आसान है। हमें उनकी जगह में स्वयं को देखने को कहा गया है। यदि हम उनकी जगह पर होते, हम कैसे व्यवहार की प्रतीक्षा करते?

एक कलीसिया होने के नाते, हमें उस व्यक्ति के द्वारा की जाने वाली सभी बातों से सहमत होना जरूरी नहीं है जिससे हम सेवकाई कर रहे हैं। मैने एक प्रचारक की एक कहानी सुनी है जो एक शहर में आया और लोगों के सामने समाज को सुसमाचार सुनाने की चुनौती रखी। उसने लोगों को बताया कि शहर में एक क्लब है जहाँ लोगों को परमेश्वर की जरूरत है। समाज की एक अधेड़ महिला ने इस बात को पवित्रात्मा की प्रेरणा के रूप में लिया। एक दिन, वो गई, कुछ फूल खरीदे और क्लब में लोगों के सामने नाच रही औरतों में से एक के पास जाकर,

उसे फूल दिया और धीमे से कहा, "प्रिय, तुम्हे ये सब करने की जरूरत नहीं है। जब भी तुम मुझसे बात करना चाहो, तो मैं अवश्य मौजुद रहूँगी।"

मैं उस प्रेमपूर्वक कार्य से स्तम्भित रह गया। अक्सर, पूरा अविश्वासी संसार विश्वासियों से केवल आलोचना और दोषारोपण ही पाता है। हमें प्रेम के साथ उनके पास जाने को कहा गया है। प्रेम लोगों के पास उस स्थान तक पहुँच सकता है जहाँ आलोचना कभी भी नहीं पहुँच सकती है। यीशु ने उनके बीच में सेवकाई की जिन पर उस समय के धार्मिक लोग दोष लगाते थे। उसने उन लोगों को छुआ जिन्हे दूसरे छूना नहीं चाहते थे। हमें उसके उदाहरण पर चलने को कहा गया है।

विवाह सम्मानित हो (पद 4)

पद 4 में, लेखक पाठकों को विवाह के आदर को बनाए रखने को कहता है। कई बार हमारे एकदम करीब के लोगों को नजरअंदाज किया जाता है। हम सावधान रहें कि कभी भी विवाह को नकारें नही। हमें अपने पति पत्नी का सम्मान करना है। अर्थात उनके प्रति विश्वासयोग्य रहना है। इसका मतलब है कि उनके प्रति विश्वासयोग्य रहना है। इसका अर्थ किसी को भी हम भागीदारों के बीच में नहीं आने देना है। विवाह के बिस्तर को हमें व्यभिचार से परे शुद्ध रखना है। परमेश्वर व्यभिचारियों और लैंगिक अनैतिकता का दण्ड देगा। शैतान ने परिवारों की बहुत क्षति पहुँचाई है। उसे पता है कि परिवारों को तोड़कर वह सीधा समाज के दिल पर हमला कर रहा है। विश्वासियों को विशेष तौर पर अपने विवाह को शुद्ध बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए कि वे आसपास के लोगों के लिए अच्छा नमूना बन सकें।

धन के लोभ से दूर रहें (पद 5)

पद 5 में ध्यान दें कि कैसे इब्रियों को धन के लोभ से दूर रहना था। धन अपने आप में बुरा नहीं है। हमें इस धन के लालच को अपने जीवन में से तोड़ना है। जब कोई धन से प्यार करता है, तो उसके जीवन का केन्द्र धन बन जाता है। वे अपने जीवन की बातों से संतुष्ट नहीं होते हैं। उनका जीवन हमेंशा इस बात के इर्दगिर्द घूमता रहता है कि वे कितना कमाएँ और और वो धन उनके लिए क्या कर सकता है। धन से प्यार करने वाले, परमेश्वर की बजाय धन में अपनी सुरक्षा पाते हैं।

पद 6 में, लेखक अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उन्हे पूरे ढ़ाढ़स के साथ कहना है कि प्रभु उनका सहायक रहा। उनकी जरूरतें अच्छे से पूरी होंगी। उनकी सुरक्षा अर्जित किए जाने वाले धन या और किसी वस्तु में नही, वरन् स्वयं प्रभु में

होनी चाहिए।

अपने अगुवों को याद रखें (पद 7)

इन पहले सात पदों में अंतिम चुनौती अपने अगुवों को याद रखना है। विशेष केन्द्र आत्मिक अगुवों पर है। ऐसे लोग परमेश्वर का वचन बताते हैं। पाठकों को इन दैवीय अगुवों का आदर करना और उनके विश्वास का पीछा करना है।

जितनी चुनौती मसीही अगुवों को नमूने का जीवन जीने की मिलती है, उतनी ही चुनौती उनके पीछे चलने की भी है। मानते हैं, हमारे समाज और कलीसिया में कई सारे अविश्वासयोग्य अगुवे आ चुके हैं। हमें उनका नमूना नहीं मानना है। हमें ऐसे लोग बनना है जो अपने अगुवों की सुनने को तैयार रहते हैं। इसका मतलब है कि हमें परिवर्तन के लिए खुले एवं विकास करने इसका मतलब है कि हम उनके किसी भी निर्देश को स्वीकार करने के लिए तैयार और नम्र हों।

आत्मिक अगुवों को याद रखने का मतलब है कि हम उनकी जरूरतों में उनकी मदद करें, प्रार्थना करें। याद रखें कि आत्मिक अगुवे इस बड़े लोगों की भेंटों पर निर्भर होते हैं। विश्वासियों को चुनौती मिलती है कि वे अपने आत्मिक अगुवों की जरूरतों को पूरा करें। परमेश्वर के लोगों को अपने धन की मदद से प्रेरितों की सहायता करनी है। उन्हे उनके लिए प्रबंध करना है कि वे परमेश्वर के राज्य को फैला सकें।

सोच विचार के लिए:

- जब आप प्रभु में किसी भाई या बहिन से प्रेम करते हो तो कौनसी चुनौतियों का समाना करना में बढ़ते हैं?
- आपके समाज में जरूरतमंद और पिछड़े लोग कौन हैं? इस पद्यांश में क्या चुनौतियाँ हैं। प्रेम लोगों के साथ वहाँ तक आ सकता है जहाँ तक आलोचना और दोष नहीं पहुँच सकते। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? वर्णन करें।
- अपने विवाह के साथी के साथ आपका संबंध कैसा है? क्या आपको उसे ठुकराने का पश्चाताप हुआ है?
- धन से प्रेम एवं परमेश्वर के द्वारा देय वस्तुओं में आनंद पाने में आप क्या अंतर देखते हैं?
- क्या आपके आत्मिक अगुवों की जरूरतों को पूरा किया जाता है? इस

पद्यांश के आधार पर, उनके प्रति आपकी जिम्मेदारी क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपको उसके प्रति प्रेम से भरने को कहें जिसे आप प्रेम करने में दिक्कत महसूस करते हैं।
- प्रभु से समाज में कोई ऐसा व्यक्ति दिखाने को कहें जो आपका अच्छा मित्र बन सकता है।
- अपना धन प्रभु को दें। प्रभु से पूछें कि आप किस प्रकार इसे परमेश्वर के राज्य के लिए इस्तेमाल कर सकते है।
- प्रभु से क्षमा माँगें यदि आपने अपने आत्मिक अगुवों की आलोचना की है। उनके लिए प्रार्थना करें और प्रभु से उन्हे आशीषें और प्रोत्साहन देने का अनुरोध करें।

35

स्तुति का बलिदान

पढ़ें इब्रानियों 13:8-15

इब्रानियों का एक मुख्य विषय पुराने नियम की वाचा एवं सभी बलिदानों एवं नियमों की तुलना यीशु मसीह के अधीन नये नियम की वाचा के साथ करना है। अपनी अंतिम टिप्पणी में, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को उन लोगों के द्वारा भटक नहीं जाने की चेतावनी दे रहा है जो उन्हे वापिस पुरानी वाचा के नियमों की ओर लाने की कोशिश में लगे हैं।

पद 8 में, हमें बताया गया है कि यीशु मसीह आज, कल और सर्वदा एक समान हैं। कितना अद्‌भुत सच हम इस कथन में पाते हैं। प्रभु यीशु मसीह कभी नहीं बदलते। हम उसे परमेश्वर के पुत्र, अनुग्रह एवं सच से भरे हुए जानते हैं। मृत्यु के द्वारा दुष्ट के ऊपर उसकी सामर्थ एवं क्रूस पर उसकी विजय को हम जानते हैं। हमने अपने जीवन में उसके उद्धार का अनुभव किया है। उसके वचन का वायदा हमेशा हमारे लिए मददगार एवं प्रोत्साहन रहा है। ये चीजें कभी नहीं बदलेंगी। आज भी वो वैसे ही हैं जैसे वो अपने शरीर में इस धरती पर थे। हम उससे बड़ी बातों की प्रतीक्षा कर सकते हैं। वचन में यीशु के वायदे आज भी मान्य हैं। यीशु कभी नहीं बदलेंगे, और ना उसके वचन।

इसी शिक्षा को मन में रखकर, इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को कहता है कि वे अंजान शिक्षाओं में भटक न जाएँ। पद 9 की पृष्ठभूमि से हम समझ सकते हैं कि ये अजनबी शिक्षाएँ उत्सव भोज एवं मूसा के कानून से संबंधित थीं। इब्रानियों का लेखक याद दिलाता है कि अब उत्सव भोज एवं मूसा के कानून का कोई महत्व रहा ही नही। यीशु मसीह के कार्य के द्वारा मिले उद्धार के लिए परमेश्वर के अनुग्रह पर विश्वास करने वालों को स्पष्ट तौर पर मूसा के कानून को संबंध विच्छेद कर लेना है। उद्धार अथवा परमेश्वर की स्वीकार्यता को पाने के लिए किसी भी तरीके में मूसा के नियमों पर निर्भरता केवल यह साबित करेगी कि उन्होने वास्तव में अभी तक यह नहीं जाना है कि मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह की काफी है।

उस समय मूसा के नियमों को अधिक तूल देने वाले रहे होंगे। वे उद्धार अथवा परमेश्वर की इच्छा पाने के लिए मूसा के नियमों को मानने पर बल दे रहे थे। पाठकों को याद दिलाया गया है कि वे अब मूसा के नियमों के नहीं, वरन् अनुग्रह के अधीन हैं। उन्हे अनुग्रह में बल पाना था, नियमों के माध्यमों में नहीं।

अनुग्रह में बल पाने का अर्थ क्या है? पृष्ठभूमि बताती है कि ये बल पाना परमेश्वर के नजदीक चलने रहने के लिए था। ऐसे हैं जो नियमों के द्वारा परमेश्वर की करीब आने की कोशिश करते हैं। उनका मानना है कि यदि वे दस आज्ञाओं को मानेंगे और परमेश्वर के कहे को करेंगे तो वे उसके करीब आ सकते हैं। वे मानते हैं कि वे जितना अधिक परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे और कार्यों को करेंगे, उनकी आत्मिक चाल उतनी ही ताकतवर होती जाएगी। यदि वे नौजवान विश्वासियों को प्रशिक्षण देते तो वे परमेश्वर की माँगों पर अधिक बल देते। वे बताते कि परमेश्वर कैसे चाहता है कि वे जिएँ और उसकी आज्ञाओं की माँगों को पूरी करें।

चेलेपन के केन्द्र के रूप में इसके साथ एक समस्या यह है कि पुराना नियम इतने सारे कार्यों के बावजूद भी एक के बाद एक हार की कहानी है। यह सही है कि हमें आज्ञाकारी होने के लिए बुलाया गया है, परंतु हमें यह भी पहचानना है कि केवल हमारी आज्ञाकारिता परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकती है। परमेश्वर की स्वीकार्यता हमारे उद्धार और क्षमा के लिए क्रूस पर किए गए प्रभु यीशु मसीह के कार्य से जुड़ी है। आत्मिक जीवन नियम, कानून, सिद्ध जीवन जीने की होड़ नहीं है। वह पुराने नियम का पुराना तरीका था, अनुग्रह का तरीका नहीं है।

अनुग्रह का मार्ग हमारे महायाजक एवं बलिदानी मेम्ने, प्रभु यीशु मसीह के कार्य से शुरू होता है। अनुग्रह हमें सिखाता है कि हम अपने बल अथवा कार्यों से परमेश्वर की प्रसन्नता को नहीं पा सकते हैं। हमारा सर्वश्रेष्ठ भी परमेश्वर के सामने छोटा रहता है। अनुग्रह हमें सिखाता है कि केवल यीशु के द्वारा ही परमेश्वर हमें स्वीकार कर सकता है। परमेश्वर को प्रसन्न करने के हमारे प्रयासों के द्वारा नहीं, वरन् हमारे बदले में किए गए मसीह के कार्य से हमें स्वीकार्यता मिलती हैं। हम स्वीकार किए जाने के लिए सेवा नहीं करते हैं परंतु मसीह के प्रति प्रेम के कारण सेवा करते हैं जो हमें स्वीकार्यता की निश्चितता देता है। अनुग्रह में बढने का मतलब मसीह के द्वारा हमारे लिए किए गए कार्यों के ज्ञान में बढना है।

हम उस वेदी के पास आते हैं जिसके पास पुराने नियम का कोई भी व्यक्ति

नहीं आ सका था। पुरानी वाचा के अंतर्गत कार्य करने वालों को उस भोजन को लेने की अनुमति नहीं थी जो वे वेदी पर चढ़ाते थे। (पद 10 देखें) केवल अनुग्रह ही हमें परमेश्वर और उसके सिंहासन तक पहुँच दे सकता है।

पुराने नियम के तहत, महायाजक बलि किए गए जानवर का लहू लेकर साल में एक बार पापबलि के रूप में उसे अति पवित्र स्थान में चढ़ाता है। केवल उसी दौरान उसे भी अंदर आने की अनुमति थी। और वो भी तब जब वो खुद के और लोगों के पापों के लिए बलि चढ़ा ले। हर साल यह बलिदान दोहराया जाता था।

मंदिर में बलिदान चढ़ा देने के बाद, बलि किए गए जानवरों की देहों को शहर से बाहर ले जाकर फेंक एवं जला दिया जाता था। यही यीशु मसीह के साथ भी हुआ। (पद 12) उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए शहर के बाहर ले जाया और दफनाया गया। पुराने नियम के महायाजक के द्वारा चढ़ाए गए बलिदान की तरह वह हमारे लिए बलिदान बना। तौभी, इन दोनों बलिदानों में अंतर यह है कि यीशु मसीह का बलिदान लोगों को शुद्ध करता है। शुद्ध होने का मतलब परमेश्वर के साथ मेल करना है। हम कभी न खत्म होने वाले बैल या बकरों की बलियों पर भरोसा नहीं रखते। हमारा भरोसा केवल प्रभु यीशु मसीह में है। उसका बलिदान हमें शुद्ध करता है। यदि प्रभु यीशु का बलिदान हमें शुद्ध करता और परमेश्वर के सामने स्वीकार्यता दिलाता है तो हमें और कुछ करने की जरूरत नहीं है। यदि आप ये विश्वास करते हैं तो अपना पूरा भरोसा उस एक बलिदान पर डालें। यदि आपको इस बलिदान में संदेह है तो अपने प्रयासों और मेहनत से अपना उद्धार और परमेश्वर की प्रसन्नता पाने की कोशिश करेंगे।

मसीह में उसकी संपूर्ण स्वीकार्यता ही वो सच था जिसे लेखक अपने पाठकों को बताना चाहता था। उन्हे इस सच से अंजान नहीं रहना था। यह सच कभी नहीं बदलेगा क्योंकि यीशु मसीह स्वयं कभी नहीं बदलते। उसका कार्य अंतरिम था और परमेश्वर की हर माँग को पूरा किया। रिवाजपूर्ण भोजन का लेना अथवा सांस्कृतिक नियमों का पालन करने का कोई लाभ नहीं था। उनके उद्धार एवं परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था।

यीशु मसीह ने अपने मन से हमारे पापों को उठाया और क्रूस पर चढ़ाने के लिए शहर से बाहर ले जाया गया। हमारे लिए उसे यह सब सहने में कोई शर्म नहीं लगी। हम भी उसे प्रभु कहने, उसके नाम से निंदा सहने अथवा मजाक उडाए जाने से शर्माएँ नहीं।

परमेश्वर के अनुग्रह और प्रसन्नता को जानने वाले संसार की चीजों को कम महत्व देते हैं। प्रभु यीशु को जानने और उसके द्वारा मिलने वाली आशीषों की तुलना में वे ये सारी चीजें महत्वहीन हैं। उनकी आँखें आने वाले शहर पर टिकी हैं। उस शहर में वे हमेशा हमेशा के लिए अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के साथ रहेंगे। (पद 14) उनकी नजरें यीशु पर गड़ी हैं।

यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान होते ही बैलों और बकरों का बलिदान सदैव के लिए रूक गया। उसका बलिदान पाप के लिए चढ़ाया जाने वाला सबसे अंतिम बलिदान था। अब हम केवल स्तुति और धन्यवाद के बलिदान चढ़ाते हैं। ये आराधना और हमारे होठों से निकलने वाले प्रशंसा के बलिदान हैं। आज परमेश्वर यही बलिदान चाहता है। वह उन दिलों और होठों को चाहता है जो यीशु को अपना उद्धारकर्ता एवं प्रभु स्वीकार कर, उसके पवित्र नाम की स्तुति में उसके सामने दण्डवत करने को तैयार हैं।

सोच विचार के लिए:

- इस भाग में हमें याद दिलाया गया है कि यीशु मसीह आज कल और सर्वदा एक जैसे हैं। इससे आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है? इस सच को हम आज के हमारे जीवन में कैसे लागु कर सकते हैं?
- प्रभु के पास नियमों के द्वारा आने एवं अनुग्रह से लाए जाने में क्या अंतर है?
- प्रभु यीशु के बलिदान ने क्या उपलब्धी पाई जो पुराने नियम की व्यवस्था नहीं पा सकी?
- पुराने नियम के बलिदान एवं इस अध्याय में वर्णित स्तुति के बलिदान में क्या अंतर है?
- क्या आपने कभी अपने प्रयास प्रभु की प्रसन्नता को पाने की कोशिश की है? प्रभु की स्वीकार्यता के बारे में यह अध्याय हमें क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु का धन्यवाद करें कि हम अपना भरोसा उस पर और उसके वचन पर डाल सकते हैं क्योंकि वो कभी नहीं बदलता है।
- उसका धन्यवाद करें कि उसके कार्य के द्वारा हमें पूर्णतया स्वीकार लिया गया है।
- परमेश्वर से कहें कि वो आपके दिल को उसके किए गए उपकारों एवं

आपको मिली स्वीकार्यता के लिए अधिक स्तुति और धन्यवाद से भरे।

- प्रभु की सेवा करने में आपको क्या प्रेरित करता है? क्या आप पूरी स्वीकार्यता के साथ उसकी सेवा कर पा रहे हैं? प्रभु की आपकी सेवा को यह कैसे बदलता है?

36

अंतिम कथन

इब्रानियों 13:16-22 पढ़ें

इब्रानियों का लेखक अपनी पत्री को समाप्त करते वक्त कुछ छोटे छोटे विषयों को भी निपटाना चाहता है। इस अंतिम अध्याय में हम उन विषयों पर नजर डालेंगे।

भलाई करना न भूलें (पद 16)

पद 16 में हम इन पहले प्रोत्साहनों को देख सकते हैं। पाठक को चुनौती दी गई है कि वह भलाई को नहीं भूले एवं इसे दूसरों के साथ बाँटे। क्या आप कभी चकित हुए हैं कि कुछ लोगों के पास दूसरों से अधिक क्यों है? प्रभु ने मसीह की देह को वरदान देने का निश्चय कर रखा है। किसी के पास सभी आत्मिक वरदान नहीं हैं। प्रेरित पौलुस अपने पाठकों को कहता है कि परमेश्वर ने मसीह की देह को इस प्रकार गठित किया है कि हर सदस्य दूसरे की मदद चाहता है। (रोमियों 12:4-6) यदि हम ऐसे बने हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है, तो हमें हमारे साथ साथ दूसरों की भी मदद एवं सहयोग करने की आवश्यकता पड़ेगी। मसीही जीवन को कभी भी अकेले जीने के लिए नहीं बनाया गया। मेरे वरदान और संसाधन महत्वपूर्ण हैं यदि मसीह की देह वो सब बने जैसा इसे बनना है। परमेश्वर ने कलीसिया को इस प्रकार बनाया है कि हमें अपनी पूर्ण योग्यता तक पहुँचने के लिए एक दूसरे एवं एक दूसरे के वरदानों की आवश्यकता पड़ती है। इसी वजह से इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को कहता है कि वे भलाई करना न भूलें और उन्हे दूसरों के साथ बाँटें।

पद 16 में ध्यान दें कि एक दूसरे की मदद करने में त्याग अथवा बलिदान की जरूरत होती है। हमें बताया गया है कि परमेश्वर इन बलिदानों से प्रसन्न होता है। दूसरे शब्दों में, जब मैं दूसरों के लिए अपना कुछ समर्पित करता हूँ, परमेश्वर उसे देखता है और मेरे बलिदान से खुश होता है। जब मैं दूसरों की भलाई के लिए अपना कुछ समर्पित करता हूँ, तो मैं यह सब प्रभु के लिए करता हूँ। यह आसान है कि हम स्वयं में इतना डूब जाएं और यह भूल जाएँ कि परमेश्वर हमें एक देह में रखना

चाहता है। हमें सीखना है कि हम दूसरों के बारे में सोचें। तभी कलीसिया वो बन पाएगी जो परमेश्वर इससे चाहता है।

अगुवों की आज्ञा मानें (पद 17)

इब्रानियों के विश्वासियों को दूसरी चुनौती मिलती है कि वे अगुवों की आज्ञा मानें। यद्यपि हमें यह नहीं बताया गया है कि अगुवे कौन हैं, यह कहना सुरक्षित होगा कि वे आत्मिक और राजनैतिक दोनो प्रकार के अगुवे हैं। वचन हमें स्पष्ट तौर पर बताता है कि आत्मिक एवं राजनैतिक सभी प्रकार के अगुवे परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गए हैं। (रोम 13:1) मसीहियों को अधिकारियों के अधीन रहना है जिन्हे परमेश्वर ने हमारे ऊपर रखा है। अगुवों को परमेश्वर ने हम पर निगरानी रखने के लिए नियुक्त किया है। उन्हे परमेश्वर को अपने कार्य का हिसाब देना होगा। विश्वासी हों या प्रभु को कभी भी दिल में स्वीकार नहीं किया हो, दोनों के मामले में यही सच है। सबको अपने अपने कार्यों का लेखा जोखा देना होगा।

विश्वासियों को अपने अगुवों की आज्ञा माननी है कि उनका कार्य खुशी से भरा हो, बोझ से नही। क्या हम अच्छे नागरिक हैं? क्या आपका बोस आप पर भरोसा रख सकता है? क्या आप अपने अधिकारियों के कार्य को हल्का या आसान करते हो? क्या आपकी सच्चाई और तरस की वजह से आपके समाज के अगुवों के बीच में आपका सम्मान है? मसिहियों को अगुवों का सम्मान करना है।

हमारे लिए प्रार्थना करें (पद 18)

लेखक पाठकों को कई प्रार्थना विषय देता है। सबसे पहले वो पाठकों से प्रार्थना करने को कहता है कि प्रभु उन्हे शुद्ध विवेक और हर तरीके से सम्माननीय जीवन जीने की इच्छा प्रदान करे। लेखक कहता है कि ऐसे जीएं, जैसा परमेश्वर चाहता है और इससे उसे सम्मान मिलेगा। यह हमेशा आसान नहीं है। सेवकाई में अक्सर कठिनाईयों और परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इब्रानियों का लेखक परमेश्वर का सम्मान करना चाहता है, चाहे उसे कैसी भी हालत में क्यों न डाल दिया जाए। उसके लिए उसे प्रार्थना का सहयोग चाहिए। हम इस विनती के महत्व को कम नहीं कर सकते। कितनी ही बार उन लोगों केकारण परमेश्वर के राज्य का कार्य बाधित हुआ है जो इसे बढ़ाने के लिए बुलाए गए परंतु उनके जीने और सेवकाई का तरीका सम्मानजनक नहीं था। यदि हमारा जीवन प्रभु यीशु मसीह को सम्मान नहीं दे सकता है तो इसका खामियाजा परमेश्वर के राज्य को भुगतना पड़ता है।

पद 19 में एक और विनती है कि लेखक और उसके साथियों को इब्रियों से मिलने का अवसर मिले। यह लेखक के दिल को दिखाता है। वह उन विश्वासियों से प्रेम करता था और उनसे व्यक्तिगत तौर पर मिलना चाहता था। परमेश्वर ने अभी तक उसके लिए इस अवसर का दरवाजा नहीं खोला था परंतु वह उनसे प्रार्थना माँगता है कि परमेश्वर पारस्परिक प्रोत्साहन का ये मार्ग खोले।

आशीषें (पद 20)

पद 20 और 21 में पाठकों को आशीषें दी गई हैं। यह लेखक की सच्ची प्रार्थना और इच्छा थी कि परमेश्वर उन्हे हर भला कार्य करने का बल दे। उसने उन्हे याद दिलाया कि परमेश्वर शांति का परमेश्वर है। उसकी इच्छा थी कि उसके और पापी मनुष्य के बीच में मेल हो सके। इसीलिए, उसने अपने पुत्र को लहु बहाने और मरने भेजा। यीशु मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक नया संबंध बनाया। अनुग्रह और शांति का यही अद्‌भुत परमेश्वर उन्हे कार्य करने का बल देगा। उन्हे बुलाने वाला परमेश्वर ही बुलाहट के हर कार्य को पूरा करने का उन्हे बल देगा।

लेखक की प्रार्थना यही नहीं थी कि परमेश्वर लोगों को उनकी सेवकाई के लिए बल दे, परंतु यह भी कि उसका उददेश्य उनके जीवन में पूरा हो सके। हमारे अंदर यह कार्य पवित्रात्मा का है कि हमें यीशु के समान बना सके। परमेश्वर हमें केवल फलदायक ही नही, परंतु हमें अच्छे स्वभाव वाले एवं पवित्र भी बनाना चाहता है।

पद 22 में, इब्रानियों का लेखक पाठकों से उपदेशो को सहने को कहता है। दूसरे शब्दों में, वे उसके साथ और उसकी कही गई बातों के मामले में धीरज धरने को कहता है। उसे पता है कि जो वह उन्हे बता रहा है, वह कठिन अथवा स्वीकार करने से परे हो सकता है। उनके पास कई सारे सवाल होंगे परंतु वह समय और लिखने की सीमितता में बंधा हुआ है। (पद 22) वह प्रार्थना भी करवाता है कि शायद उनसे मुलाकात भी हो जाए। या शायद वह और भी पत्र लिखने की सोच रहा होगा जिसमें वह उनके सवालों या प्रतिक्रियाओं का जवाब दे सके।

पद 23 में वह बताता है कि तिमुथियुस छुट गया है। संभवतया तिमुथियुस अपने विश्वास के कारण कैद में होगा। लेखक की इच्छा थी कि वह तिमुथियुस के साथ उनसे मिलने आए। अगुवों को संबोधित करते हुए पत्री समाप्त होती है। इतालिया (शायद यहीं से पत्री लिखी गई हो) के विश्वासीगण भी उन विश्वासियों

को अपना अभिवादन भेजते हैं। अंत में, लेखक उनके जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह की संपूर्णता की कामना करता है।

सोच विचार के लिए:

- इब्रानियों की पत्री का यह अंतिम भाग हमें मसीह की देह और हमारे संसाधनों की मदद से इस देह की भलाई करने के बारे में क्या सिखाता है?
- प्रभु ने आपको कौनसे वरदान दिए हैं? क्या आप उनका उपयोग प्रभु की देह की भलाई के लिए कर रहे हैं? आप और अधिक क्या कर सकते हैं?
- सेवकाई में स्वभाव के महत्व के बारे में आप क्या सीखते हैं? यदि हम परमेश्वर की इच्छा का जीवन न जीएँ तो क्या हम वास्तव में सेवकाई कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से पूछें कि आप अपने वरदानों और संसाधनों का उपयोग उसके राज्य के विस्तार में कैसे कर सकते हैं?
- एक क्षण लेकर अपने आत्मिक एवं राजनैतिक अगुवों के लिए प्रार्थना करें। प्रभु से मदद माँगें कि आप उनका सम्मान और आदर कर सकें। यदि आपने कभी भी अपने ऊपर नियुक्त अधिकारियों के प्रति आदर नहीं दिखाया है तो उससे क्षमा माँगें।
- प्रभु से स्वयं को जांचने को कहें कि आपमें कहीं कुछ ऐसा तो नहीं जो उसकी सेवा करने में बाधा उत्पन्न कर रहा हो।

'लाईट टू माय पाथ' पुस्तक वितरण

'लाईट टू माय पाथ' एल.टी.एम.पी. पुस्तक वितरण एक पुस्तक लेखन व विवरण सेवकाई है जो एशिया, लेटिन अमेरिका और अफ्रीका के ज़रूरतमंद मसीही कर्मियों तक पहुंच रही है। विकासशील देशों में अधिकांश मसीही कर्मियों के पास अपनी सेवकाई और व्यक्तिगत प्रोत्साहन के लिए बाइबल प्रशिक्षण पाने या बाइबल अध्ययन सामग्री को प्राप्त करने के संसाधन नहीं हैं। एम.वायन मैक लियोड एक्शन इंटरनेशनल मिनिस्ट्रीज के एक सदस्य हैं और इन पुस्तकों को इस लक्ष्य के साथ लिख रहे हैं कि इनका वितरण संसार भर के ज़रूरतमंद पास्टरों और कर्मियों में नि:शुल्क या लागत मूल्य पर किया जा सके।

आज की तिथि से तीस से भी अधिक देशों में हजारों पुस्तकों का प्रयोग स्थानीय विश्वासियों के बीच प्रचार, शिक्षण और प्रोत्साहन देने में किया जा रहा है। इस शृंखला की पुस्तकों का अब हिन्दी, फ्रेंच, स्पैनिश और हेतियन स्रिओल में अनुवाद किया गया है। लक्ष्य इन्हें अधिक से अधिक विश्वासियों के लिए संभव बनाने का है।

'लाईट टू माय पाथ' पुस्तक वितरण सेवकाई एक विश्वास पर आधारित सेवकाई है और संसार भर के विश्वासियों को प्रोत्साहित करने व मज़बूत बनाने को पुस्तकों के वितरण के लिए जरूर संसाधनों हेतु हमारा भरोसा प्रभु पर है। क्या आप प्रार्थना करेंगे कि प्रभु इन पुस्तकों के अनुवाद व भावी वितरण के लिए द्वार खोले?

'लाईट टू माय पाथ' के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी बेबसाइट को देखें: www.ltmp.com